# प्रस्तावना

ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी संगम पर इस सृष्टि-चक्र का सारा ज्ञान दिया है और राजयोग सिखलाकर विश्व जहाँ सर्व देशों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था है, उसमें राजशाही की स्थापना कर रहे हैं। शिवबाबा आत्माओं ज्ञान-योग सिखाकर पावन बनाते हैं, जिससे विश्व पावन बनता है, विश्व का सारा आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक ढाँचा बदल जाता है अर्थात विश्व नर्क से स्वर्ग बन जाता है। मृत्युलोक से अमरलोक बन जाता है।

जो आत्मायें परमात्मा के द्वारा दिये गये इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को समझ जाते हैं, वे अन्य आत्माओं को भी इस सत्य का ज्ञान समझाकर परमात्मा के दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बन जाते हैं और जो इस दिव्य कर्तव्य में सहयोगी बनते हैं, वे ही भविष्य नयी दुनिया में राज्य-भाग्य पाते हैं, उसके सतोप्रधान सुख के अधिकारी बनते हैं अर्थात् उसके सतोप्रधान सुख को अनुभव करते हैं।

ज्ञान सागर परमात्मा ने इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का जो ज्ञान दिया है, वह बड़ा ही अद्भुत और रहस्यमय है तथा आत्मा को परमानन्द की अनुभूति कराने वाला है। बाबा बार-बार आत्माओं को प्रेरित करते हैं कि इस रहस्यमय हिस्ट्री-जॉग्राफी का चिन्तन करके इसको अपनी बुद्धि में धारण करो अर्थात् स्वदर्शन चक्रधारी बनकर इस विश्व-नाटक का आनन्द लो और राजयोग का अभ्यास कर अपनी आत्मा को पावन बनाओ और पावन दुनिया के मालिक बनो।

“सतयुग में एक ही देवी-देवता धर्म था, अभी उसकी स्थापना हो रही है, बाकी इतने सब धर्मों का जरूर विनाश होगा। ... बरोबर अभी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी घराने की स्थापना होती है। जो जितना पुरुषार्थ करेगा, वह उसमें उतना ऊंच पद पायेगा। ... रात के बाद दिन आता है। यह है फिर बेहद के दिन और रात की बात। आधा कल्प बेहद का दिन और आधा क्ल्प रात होती है।”

सा.बाबा 14.07.11 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी

## विषय-सूची


सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और परमात्मा ... **1**

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और प्रजापिता ब्रह्मा

परिभाषा

हिस्ट्री

जॉग्राफी

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी ... ... ... ... **1**

सृष्टि-चक्र की धार्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

सृष्टि-चक्र की राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

हिस्ट्री - जॉग्राफी का परस्पर सम्बन्ध

हिस्ट्री - जॉग्राफी और आत्माओं के संकल्प-बोल-कर्म ... ... ... ... **1**

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और विश्व-नाटक का सतत् परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विश्व-नाटक

  सतयुग-त्रेता की हिस्ट्र-जॉग्राफी ... ... ... ... **1**

  द्वापर-कलियुग की हिस्ट्र-जॉग्राफी

  पुरुषोत्तम संगमयुग की हिस्ट्री-जॉग्राफी

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और सृष्टि-चक्र की आयु

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी

  सृष्टि-चक्र के तीनों कालों की हिस्ट्री-जॉग्राफी ... ... ... ... **1**

  तीन लोकों की हिस्ट्री-जॉग्राफी

  चारो युगों की हिस्ट्री-जाग्राफी

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और त्रिलोक

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और प्रकृति ... ... ... ... **1**

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और अनादि-अविनाशी नियम और सिद्धान्त

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विभिन्न धर्म एवं सभ्यतायें

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विभिन्न राज-सत्तायें

Q. श्रीकृष्ण को उनके माँ-बाप राजसिंहासन पर बिठायेंगे या उनके साथी अर्थात् उनके साथ योगबल से जन्म लेने वाले साथी राजा चुनेंगे और राजसिंहासन पर बिठायेंगे? ... ... ... **1**

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और दैवी राज्य की स्थापना

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और कल्प-वृक्ष, सृष्टि-चक्र, त्रिमूर्ति, लक्ष्मी-नारायण के चित्र

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और आत्माओं का सुख-दुख .. **1**

Q. आत्मा के सुख-दुख का भौगोलिक परिवर्तन से क्या सम्बन्ध है अर्थात् भौगोलिक परिवर्तन और आत्मा के सुख-दुख का क्या सम्बन्ध है?

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और महाभारत की लड़ाई... 1
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और सौर-मण्डल
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विकार
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और आत्मिक स्थिति
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और स्वर्ग-नर्क ... 1
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और भारत एवं भगवान
Q. सतयुग-त्रेता में भारत की क्या सीमायें थीं और उन सीमाओं का विस्तार और संकुचन कैसे होता है?
Q. क्या भारत में आर्य मध्येशिया से आये, जैसा भारत के इतिहास में पढ़ाया जाता है? यह कहने का आधार या कारण क्या है? ... ... ... 1
Q. सतयुग-त्रेता में चक्रवर्ती राजाई का अन्य राजाइयों से क्या सम्बन्ध होता है?
Q. भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी का अन्य धर्मो की हिस्ट्री-जॉग्राफी से क्या सम्बन्ध है?
Q. प्राय: सभी मुख्य धर्म-वंश वालों ने भारत पर राज्य किया, उसका कारण क्या है?
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और भारत एवं भगवान
भारत और स्वर्ग-नर्क ... ... ... 1
भारत और आध्यात्म का सम्बन्ध
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विनाश
उतरती कला और चढ़ती कला की हिस्ट्री-जॉग्राफी
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और ज्ञानमार्ग-भक्तिमार्ग
नई दुनिया और पुरानी दुनिया के निर्णायक बिन्दु ... ... ... 1
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और योगबल-भोगबल
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और योग
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और गीता-ज्ञान ... ... 1
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विभिन्न शास्त्र एवं धर्म-ग्रन्थ
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और परिवर्तन
दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और विश्व में प्राकृतिक परिवर्तन ... ... ... 1
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और नये सृष्टि-चक्र की कलम
विश्व में दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और नग्न सभ्यता अर्थात् आदिवासी सभ्यता
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विश्व-नाटक की पुनरावृत्ति
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और मूल्य अर्थात् आत्मा के गुण-धर्म
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और जनसंख्या ... 1
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और पुरुषार्थ
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और मुक्ति-जीवनमुक्ति
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और रामराज्य-रावणराज्य... 1
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और राज-व्यवस्था (राजशाही)
सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और स्थिति (खुशी)
सतयुग की संरचना ... ... ... ... ... ... ... 1

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और भौगोलिक परिवर्तन
Q. पृथ्वी क्या है?
Q. क्या सतयुग-त्रेता में पृथ्वी चौरस (Flat) होगी?
Q. क्या सतयुग-त्रेता में दिन-रात होंगे या नहीं होंगे? यदि होंगे तो यहाँ के दिन-रात और वहाँ के दिन-रात में क्या अन्तर होगा?
Q. सतयुग में पूर्णमासी और अमावस्या होगी या नहीं होगी? ... ... ... 1
Q. सतयुग में ऋतु-परिवर्तन होगा या नहीं होगा और यदि होगा तो किस स्थिति में होगा?
Q. जैसे अभी पृथ्वी अपनी धूरी पर 24 घण्टों में और एक वर्ष में सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है तथा चन्द्रमा पृथ्वी के चारो ओर एक मास में चक्कर लगाता है, सतयुग में भी ऐसे ही लगायेंगे या और कोई विधि-विधान होगा?
Q. अभी पृथ्वी जो अपनी धूरी पर साढ़े तेइस अंश झुकी हुई है, वह सतयुग-त्रेता में 90 अंश पर सीधी होगी? यदि होगी तो ये साढ़े तेइस अंश से 90 अंश पर और 90 अंश से साढ़े तेइस अंश पर एकदम होगी या धीरे-धीरे ये परिवर्तन होगा? ... ... ... 1
Q. सतयुग में मौसम सदा बहार होगा, प्रकृति सदा सुखदायी होगी, तो वह मौसम कैसा होगा और कैसे होगा अर्थात् उसका आधार क्या होगा अर्थात् किस भौगोलिक परिवर्तन के आधार पर ये सब होगा?

विविध प्रश्न और सम्भावित उत्तर ... ... ... ... ... 1
Q. अन्त में सृष्टि की सफाई का विधि-विधान क्या होगा?
Q. कल्प के संगम पर भूकम्प आदि आते हैं और त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगम पर भी भूकम्प आदि आते हैं, उथल-पाथल होती है, तो दोनों के समय के इन घटनाओं में अन्तर क्या है?
Q. अब प्रश्न है - क्या ये सब हमारे हाथों में है? ... ... ... 1
Q. सतयुग में मनुष्यात्माओं के साथ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी भी आयेंगे, जो वहाँ की शोभा बढ़ायेंगे, तो प्रश्न उठता है कि मनुष्यात्मायें संगम पर श्रेष्ठ कर्म कर जो प्रॉलब्ध जमा करते हैं, उसके आधार पर सतयुग में आते हैं, परन्तु जो पशु-पक्षी आदि आयेंगे, उनके आने का आधार क्या होगा और वे कैसे पावन बनेंगे?
Q. हिस्ट्री में बाबा ने क्या-क्या समझाया है? ... ... ... ... 1
Q. जॉग्राफी में बाबा ने क्या-क्या समझाया है?
Q. इस बेहद की हिस्ट्री-जाग्राफी का हमारे वर्तमान जीवन से क्या सम्बन्ध है?
Q. सतयुग-त्रेता की कारोबार चलाने का आधार क्या होगा?
विविध ईश्वरीय महावाक्य ... ... ... ... ... ... 1

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वही आकर इस सृष्टि-चक्र की यथार्थ हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान से इस सृष्टि-चक्र के पुराने चक्र अर्थात् पुराने कल्प का अन्त होता है और नये चक्र की आदि होती है। विश्व में अनेकानेक धार्मिक, वैज्ञानिक, दार्शनिक, राजनैतिक इस सृष्टि की रचना के राज़ को जानने के लिए प्रयत्नशील हैं और अपार धन उस पर खर्च कर रहे हैं, परन्तु आज तक कोई यथार्थ राज़ सामने नहीं आया है। सब अपना अनुमान ही लगाते रहते हैं। परन्तु अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने इस सत्य का ज्ञान दिया है कि यह सृष्टि अनादि-अविनाशी चक्र है, जो चक्रवत् सतत् चलता रहता है। इसका न कभी आदि हुआ है और न अन्त होने वाला है। यह सृष्टि-चक्र 5000 साल के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है।

"अभी तुम त्रिनेत्री बने हो। त्रिनेत्री बनें, तब त्रिकालदर्शी बनें क्योंकि आत्मा को ही ज्ञान मिलता है।... बाप कहते हैं - अभी नाम-रूप से न्यारा बनो, अपने को अशरीरी आत्मा समझो।... अभी हम सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझ रहे हैं। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी अभी तुम्हारी बुद्धि में है।" सा.बाबा 28.05.10 रिवा.

बाबा हमको पढ़ाने आया है और नये विश्व का नव-निर्माण करने आया है, तो हमको अच्छी रीति पढ़ना है और परमात्मा के साथ सहयोग करना है। ड्रामा अनुसार ये हमारा परम भाग्य है कि साकार में आये परमात्मा के साथ हमारा पार्ट है। बाबा आकर इस सृष्टि-चक्र के आध्यात्मिक, धार्मिक, प्राकृतिक इतिहास-भूगोल को पढ़ाता है, जो इसको जितना अच्छी रीति पढ़ता है, समझता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है। परमात्मा इस पूर्ण ज्ञाता है, इसलिए उनको सच्चिदानन्द सागर कहा जाता है। वह पढ़ाकर हमको भी सच्चिदानन्द स्वरूप बनाते हैं। इसलिए इसको अच्छे से अच्छी रीति पढ़ना, अनुभव करना और दूसरों को अनुभव कराना हमारा परम कर्तव्य है। इसलिए इसको अच्छी रीति पढ़कर, अपने कर्तव्य का पालन करते हुए इस विश्व-नाटक का परमानन्द लेना है। ये संगमयुग पर अपने आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परम-शान्ति, परम-शक्ति को अनुभव करने और इस विश्व-नाटक को जानकर इसके परमानन्द, परमसुख अनुभव करने और का समय है।

"त्रिमूर्ति शिव जयन्ति है वर्थ डॉयमण्ड, बाकी सब हैं वर्थ कौड़ी। सिवाए शिवबाबा के कोई पावन बना न सके। बाप पावन बनाते हैं, फिर रावण पतित बनाते हैं। अभी तुम देही-अभिमानी बनते हो, वह अवस्था 21 जन्म चलती है। ... शिवबाबा कब आया, क्या आकर किया, उसकी हिस्ट्री तो पहले-पहले चाहिए। शिव को कहा जाता है परमपिता परमात्मा।"

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

"इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना चाहिए। तुम यह भी जानते हो कि दुनिया में पिछाड़ी में बहुत हंगामा होना है। ... अभी तुम जानते हो - इस दुख की दुनिया से हम गये कि गये। बाबा धीरज दे रहे हैं कि यह छी-छी दुनिया खत्म होनी है। तुम समझते हो - हम विश्व में शान्ति का राज्य कर रहे हैं, इसमें तो खुशी होनी चाहिए ना।"

सा.बा।बा 11.03.11 रिवा.

"दुनिया में सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई भी यथार्थ रीति जानते नहीं हैं। किसको भी यह पता नहीं है कि लक्ष्मी-नारायण ने राज्य कैसे पाया, कितना समय वह राज्य चला, फिर त्रेता में राम-सीता का राज्य कैसे आया, ... बाप ही आकर ये सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं। तुम 84 जन्म लेते-लेते पतित बनते जाते हो। अभी तुमको पावन बनना है।"

सा.बाबा 11.02.11 रिवा.

"बाप आकर 84 जन्मों की कहानी सुनाते हैं। अभी तुम्हारे बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। यह एक की बात नहीं है और न यह कोई युद्ध का मैदान है। ... सर्व का सद्गतिदाता, पतितों को पावन बनाने वाला एक बाप ही है, जो सचखण्ड की स्थापना करने वाला है। ... शिवजयन्ति भी मनाते हैं। बाप है नई दुनिया का रचयिता, हेविनली गॉड फादर।"

सा.बाबा 5.01.11 रिवा.

"डबल सिरताज बनाने वाला कहाँ से आयेगा, जो हमको डबल सिरताज बनाये। ... बाप औरों को डबल सिरताज बनाते हैं, स्वयं नहीं बनते हैं। बाप कहते हैं - हम अगर राजा बनता तो फिर हमको रंक भी बनना पड़ता। भारतवासी राव थे, अब रंक बनें हैं। तुम डबल सिरताज बनते हो तो तुमको बनाने वाला भी डबल सिरताज होना चाहिए, जो फिर तुम्हारा उसके साथ योग भी लगे।... निराकार बाप राजयोग सिखाकर तुमको डबल सिरताज बनाते हैं।"

सा.बाबा 9.11.10 रिवा.

"अभी बच्चों की बुद्धि में यह नॉलेज है कि हमने 84 का चक्र लगाया है। अब हमको पवित्र बनकर वापस घर जाना है। पवित्र बनकर फिर नये सिर चक्र लगायेंगे। यह सार बुद्धि में रखना है। जैसे बाप की बुद्धि में वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी वा 84 जन्मों के चक्र का ज्ञान है, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी रहना चाहिए।"

सा.बाबा 24.07.10 रिवा.

"तुम देखते हो कैसे निराकार बाबा ने यह रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा है। साकार तो कुछ कर न सके। यह बेहद का यज्ञ बेहद के बाप ने रचा है, इसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा होनी है। ... जब

तुम पूरा योगी और ज्ञानी बन जायेंगे, पूरा पास हो जायेंगे, फिर तुम्हारे लिए नई दुनिया स्वर्ग चाहिए, तो जरूर पुरानी दुनिया नर्क का विनाश होगा।”

सा.बाबा 7.07.11 रिवा.

“अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम हर 5000 वर्ष बाद आकर ब्रह्मा द्वारा फिर से शिवबाबा के बच्चे बनते हैं, बेहद का वर्सा पाने के लिए। पतित-पावन, ज्ञान का सागर उनको ही कहा जाता है। ... अभी मैं फिर से आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना कर, बाकी सबको मुक्तिधाम में ले जाता हूँ। ... तुम बच्चे ही इन बातों को जानते हो। ऐसी बातें और कोई की बुद्धि में नहीं आती हैं।”

सा.बाबा 29.06.11 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और प्रजापिता ब्रह्मा

परमपिता परमात्मा ज्ञान का सागर है, वह कल्पान्त में आकर इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं अर्थात् इस सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक एवं राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं। उस हिस्ट्री-जॉग्राफी को देखें तो उसमें प्रजापिता ब्रह्मा की आत्मा का आलराउण्ड पार्ट है अर्थात् उसका आदि से अन्त तक इस विश्व नाटक में पार्ट रहता है। निराकार परमपिता परमात्मा भी उनके साकार तन में प्रवेश कर अपना पार्ट बजाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा की आत्मा ही सृष्टि-चक्र के आदि में सतयुग के प्रथम राजकुमार श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लेती है, जो गद्दी पर बैठने के बाद विश्व के प्रथम चक्रवर्ती महाराजा श्रीनारायण बनते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा सर्व धर्मों के आदि पिता है, इस कल्प-वृक्ष के प्रथम पत्ते हैं।

भक्ति मार्ग में भी पहले उनकी आत्मा ही भक्ति शुरू करती है और सोमनाथ के रूप में शिवबाबा का प्रथम मन्दिर बनाते हैं। ज्ञान मार्ग में भी शिवबाबा उनके तन में प्रवेश कर ज्ञान देते हैं और वे ही सबसे पहले अपना तन-मन-धन सब समर्पित कर इस ज्ञान यज्ञ की स्थापना के निमित्त बनते हैं और अपनी अथक सेवा से इस ज्ञान-यज्ञ की पालना करते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा ही आध्यात्मिकता, धार्मिकता और राजनैतिकता के आदर्श हैं।

”परमात्मा का भी ड्रामा में पार्ट है सर्विस करने का। जो सतोप्रधान थे, वे ही तमोप्रधान बनें हैं, उनके तन में बाप बैठ सतोप्रधान बनाते हैं। तो उनकी मत पर चलना पड़े ना। अभी बाप ने तुम बच्चों को विशालबुद्धि बनाया है। अभी तुम जानते हो कि राजधानी कैसे स्थापन हो रही है। शिवबाबा ब्रह्मा तन में आकर आकर ब्रह्मा मुख वंशावली बच्चों को राजयोग सिखाये देवी-देवता बनाते हैं।”

सा.बाबा 26.04.11 रिवा.

"श्रीकृष्ण को कभी कोई वर्ल्ड गॉड फादर नहीं कह सकते। वर्ल्ड गॉड फादर सिर्फ एक ही निराकार बाप को कहा जाता है। ग्रेट-ग्रेट ग्रॉण्ड फादर शिवबाबा को नहीं कह सकते। ग्रेट-ग्रेट ग्रॉण्ड फादर है प्रजापिता ब्रह्मा। उनसे और सब ब्रादरियाँ निकलती हैं। ... निराकार बाप कहते हैं - मैं सम्मुख बैठकर तुम बच्चों को यह सारा ज्ञान समझाता हूँ, जो फिर प्राय: लोप हो जाता है।"

सा.बाबा 2.04.11 रिवा.

"इस ड्रामा में सबसे बड़ा पार्ट शिवबाबा का है, फिर है ब्रह्मा और विष्णु का। ब्रह्मा सो विष्णु और विष्णु सो ब्रह्मा बनते हैं। ये बड़ी गुह्य बातें हैं, जो सेन्सीबुल बच्चे झट समझ जाते हैं। ... इस सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे चक्र लगाती है, यह दुनिया में कोई नहीं जानते हैं। बाप ही आकर रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान देते हैं।"

सा.बाबा 22.02.11 रिवा.

"प्रजापिता ब्रह्मा भी हो गया सबका बाप, जिसको एडम भी कहा जाता है। उनको ग्रेट-ग्रेट ग्राण्ड फादर भी कहा जाता है। ... प्रजापिता ब्रह्मा है मनुष्य सृष्टि का बड़ा। प्रजापिता ब्रह्मा के कितने ढेर बच्चे हैं। ब्रह्मा है साकार बाबा, शिवबाबा है निराकार बाबा। गाया हुआ है निराकार शिव परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई मनुष्य सृष्टि रचते हैं।"

सा.बाबा 5.02.11 रिवा.

"84 जन्म भारतवासियों ने ही लिए हैं। अभी तुम बाप से 21 जन्म के लिए वर्सा लेने आये हो। सभी तो इकट्ठे नहीं आयेंगे, सभी 84 जन्म भी नहीं लेंगे। ... बाप उनके तन में ही आयेंगे, जो पावन था, अभी अन्तिम जन्म में पतित है, उनको ही पहले नम्बर में जाना है। ... सूर्यवंशी, जो पहले-पहले आते हैं, वे ही पूरे 84 जन्म लेते हैं। पत्थरबुद्धि को पारसबुद्धि बनाना मासी का घर नहीं है।"

सा.बाबा 5.01.11 रिवा.

"मैं ही तुमको प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण बनाता हूँ। मैं तो परमधाम से आता हूँ, अच्छा ब्रह्मा कहाँ से आता है ? ... नारायण की आत्मा के 84 जन्मों के अन्त में मैं इनमें प्रवेश कर इनको ब्रह्मा बनाता हूँ। इनका नाम ब्रह्मा मैं ही रखता हूँ। ... इनके द्वारा तुमको अपना बनाकर पवित्र ब्राह्मण बनाता हूँ। पवित्र बनाया जाता है, ऐसे नहीं कि तुम जन्म से ही पवित्र हो।"

सा.बाबा 1.12.10 रिवा.

"बाप द्वारा सृष्टि चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानकर तुम चक्रवर्ती राजा बन रहे हो। बाप कितना प्यार और रुचि से पढ़ाते हैं, तो तुमको भी इतना पढ़ना चाहिए ना। ... शिवबाबा इनमें प्रवेश कर तुमको कितना प्यार से पढ़ाते हैं। बाप कहते हैं - मैं आता हूँ पुराने शरीर में। कैसे साधारण रीति आकर पढ़ाते हैं। कोई अहंकार नहीं।"

सा.बाबा 16.07.10 रिवा.

"बाप भारत में ही आते हैं। भारत में ही याद करते हैं - बाबा आकर हमको पावन बनाओ, शरीर धारण कर हमको श्रेष्ठ कर्म सिखलाओ। शरीर का नाम भी गाया हुआ है - भागीरथ अर्थात् भाग्यशाली रथ। ... अभी तुमको कोई भी विकर्म नहीं करना है। मन्सा तूफान भल बहुत आयेंगे, परन्तु कर्मेन्द्रियों से कोई विकर्म नहीं करना है। अपनी आपेही परीक्षा लेनी है कि हमारी कर्मेन्दियाँ चलायमान तो नहीं होती हैं?"

सा.बाबा 4.07.11 रिवा.

"5000 वर्ष पहले भी ब्रह्मा द्वारा विष्णुपुरी की स्थापना परमपिता परमात्मा ने की थी। अब फिर वह रिपीट होगा। परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा स्थापना करते हैं, तो नई दुनिया का राज्य भी जरूर उनको मिला होगा।" सा.बाबा 4.07.11 रिवा.

"सब धर्मों को सतो, रजो, तमो में आना ही है, वृद्धि को पाना ही है। तुम भी झाड़ में हो ना। झाड़ में देखो - अन्त में झाड़ की चोटी पर ब्रह्मा खड़ा है, फिर नीचे राजयोग की तपस्या कर रहे हैं। तुम भी जो नीचे ब्राह्मण बैठे हो, वे ही फिर अन्त में पतित शूद्र बने हो। फिर नीचे राजयोग की तपस्या कर रहे हो। ये सब बड़ी समझने की बातें हैं। इस झाड़ में बहुत अच्छी समझानी है।"

सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

## परिभाषा

ज्ञान सागर परमात्मा ने कहा है - यह सृष्टि जड़, जंगम और चेतन का एक खेल है, जो अनादि काल से चलता आया है और अनन्त काल तक चलने वाला है। मनुष्यात्माओं को इसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी अवश्य जानना चाहिए। परमात्मा ने कहा - मनुष्य इस किसी नाटक में पार्टधारी होकर, उसके आदि-मध्य-अन्त को, उसके क्रियेटर, डायरेक्टर, मुख्य एक्टर्स को न जानें तो वह किस काम का पार्टधारी किस काम का हुआ। ऐसे ही इस विश्व-नाटक का पार्टधारी होकर, इसके आदि-मध्य-अन्त को, इसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी को न जानें तो वह पार्टधारी किस काम का हुआ।

## हिस्ट्री

हिस्ट्री चेतन आत्माओं की होती है। चेतन आत्माओं में मनुष्य इस सृष्टि का सबसे बुद्धिमान प्राणी है, इसलिए उसकी हिस्ट्री में सर्व आत्माओं की हिस्ट्री आ जाती है अर्थात् जो

परिवर्तन मनुष्यात्माओं में होता है, वह अन्य आत्माओं में स्वतः हो जाता है।
सृष्टि-चक्र का ज्ञान हिस्ट्री है, जिसमें परमात्मा ने आदि से लेकर अन्त तक कैसे ये विश्व-नाटक चलता है, उसके विषय में ज्ञान दिया है।

## जॉग्राफी

जॉग्राफी जड़ और जंगम प्रकृति की होती है। जड़ और जंगम प्रकृति चेतन आत्माओं के आधार पर काम करती है अर्थात् जैसा उनका पार्ट होता है, उनके कर्म-संस्कार होते हैं, उस अनुसार इसमें परिवर्तन होता है और उसके आधार पर आत्मायें सुख या दुख का पार्ट बजाती हैं।

तीनों लोकों का ज्ञान भी परमात्मा ने मुरली के द्वारा दिया है और सृष्टि-चक्र के आदि से अन्त तक कैसे इस धरा पर परिवर्तन होता है, वह भी बताया है।

परमात्मा ने मुरली के द्वारा इस विश्व-नाटक की हिस्ट्री-जॉग्राफी के अनेक गुह्य रहस्यों का ज्ञान दिया है। बाबा ने यह भी बताया है कि हिस्ट्री चेतन आत्माओं की होती है और जॉग्राफी जड़-जंगम प्रकृति की होती है परन्तु दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं अर्थात् चेतन आत्मायें जो भी पार्ट बजाती हैं, उसमें जॉग्राफी का आधार अवश्य होता है और जॉग्राफी में भी जो परिवर्तन होता है, उसका कारण चेतन आत्माओं के कर्म-संस्कार हैं क्योंकि चेतन आत्माओं के कर्मों अनुसार सुख-दुख देने के लिए ही जॉग्राफी अर्थात् जड़-जंगम प्रकृति में परिवर्तन होता है। जड़-जंगम के सहयोग से चेतन आत्मायें जो पार्ट बजाती हैं, वह हिस्ट्री बनती है।

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

कल्पान्त में अधिकांश आत्मायें परमधाम जाती हैं और बहुत कम आत्मायें इस धरा पर अर्थात् साकार वतन में पार्ट बजाने के लिए रहती हैं, फिर धीरे-धीरे आत्मायें पार्ट बजाने के लिए आती रहती हैं और विश्व की जनसंख्या बढ़ती रहती है।

जब आत्मायें परमधाम जाती हैं और परमधाम से आती हैं तो उनको सूक्ष्म वतन से पास करना ही होता है परन्तु जब जाती हैं तो सूक्ष्म वतन सूक्ष्म शरीर होता है, उसको पार करते ही आत्मा सूक्ष्म शरीर से निराकारी स्थिति में आ जाती है। परन्तु जब आत्मायें परमधाम से आती हैं तो सूक्ष्मवतन तो पार करना ही होता है, परन्तु उस समय आत्मा को सूक्ष्म या स्थूल शरीर नहीं होता है। आत्मा जब आकर शरीर में प्रवेश करती है, तब स्थूल शरीर के अनुरूप सूक्ष्म शरीर बनता है।

कल्पान्त में संगम परमात्मा का इस विश्व-नाटक में पार्ट चलता है और वे आकर आत्माओं को पावन बनाकर घर वापस ले जाते हैं। परमात्मा इस साकार वतन में पार्ट बजाने आते भी शरीर के बन्धन में नहीं होते हैं, इसलिए वे पार्ट बजाते भी परमधाम जा सकते हैं।

आत्मायें जब परमधाम से आती हैं तो पावन होती हैं, फिर जब पार्ट में आती हैं तो सतो, रजो, तमो में आती हैं। जब वापस जाती हैं तो भी हिसाब-किताब चुक्तू करके पावन बनकर ही वापस जाना होता है, उसके लिए परमात्मा आकर रास्ता बताते हैं।

जब आत्मायें पहले-पहले पार्ट बजाने आती हैं तो प्रकृति उनकी दासी होती है, इसलिए वे जीवनमुक्त स्थिति का अनुभव करती हैं और जब पार्ट बजाते-बजाते तमोप्रधान बनती हैं तो उनको उनके कर्मों अनुसार प्रकृति से दुख मिलता है।

द्वापर से जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं अर्थात् विकारी बनते हैं तो विश्व में भूकम्प आदि आते हैं, जिससे दैवी सभ्यता के अवशेष भी भूगर्भ में चले जाते हैं। पृथ्वी जो अपनी धूरी पर 90 अंश में सीधी होती है, वह साढ़े तेइस अंश झुक जाती है। ऐसे ही कल्पान्त में परमात्मा आकर दैवी राजाई स्थापन करते हैं तो भी विश्व में भूकम्प आदि आते हैं और सृष्टि में विशाल परिवर्तन होता है, सारा सौर मण्डल अपने मूल सतोप्रधान स्वरूप में आ जाता है। पृथ्वी अपनी धूरी पर 90 अंश पर सीधी हो जाती है। पृथ्वी के 90 अंश पर सीधी होने और साढ़े तेइस अंश पर झुकने से अनेक प्रकार के भौगोलिक परिवर्तन होते हैं। जल-प्रवाह बदल जाता है।

तीन लोक सतयुग में भी होते हैं, तो कलियुग में भी होते हैं। ब्रह्म लोक है आत्माओं के रहने का स्थान, भूमण्डल है आत्माओं के पार्ट बजाने के लिए ड्रामा स्टेज और सूर्य-चाँद-तारे हैं इस भूमण्डल को रोशनी देने वाले। सृष्टि-चक्र का आधा भाग है स्वर्ग अर्थात् अमर लोक और आधा भाग है नर्क अर्थात् मृत्युलोक। दोनों में कुछ विशेष अन्तर है, जो दोनों को विभाजित करता है। उसमें योगबल से जन्म और भोगबल से जन्म मुख्य अन्तर है।

“बाबा डॉयरेक्शन देते हैं - तुम लिखापढ़ी करो कि स्कूलों में यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बतानी चाहिए। डाउन फॉल और राइज़ पर भाषण करना चाहिए। भारत जो हीरे जैसा था, उसको कौड़ी जैसा बनने में कितना समय लगा। ... एरोप्लेन से पर्चे गिरा सकते हो, अखबार में भी डाल सकते हो। ... हम आपको सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बता सकते हैं।”

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

“इस नॉलेज में हिस्ट्री-जॉग्राफी भी है, हिसाब-किताब भी है। कोई अच्छा, तीखा बच्चा हो तो हिसाब करे कि हम कितने जन्म लेते हैं, इस हिसाब से और धर्म वालों के कितने जन्म होंगे। परन्तु बाप कहते हैं - इन सब बातों में तुमको जास्ती माथा मारने की दरकार नहीं है। टाइम

वेस्ट हो जायेगा। यहाँ तो सब भूलना है। किसको यह सब सुनाने की दरकार नहीं है।”

सा.बाबा 11.11.10 रिवा.

“मैं तुमको 84 के चक्र का ज्ञान सुनाता हूँ, उसमें सब आ जाता है। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी भी है, ज्ञान और योग भी है। ... याद की यात्रा में रहने से शरीर की जैसे विस्मृति होती जाती है। घण्टा भर भी ऐसे अशरीरी होकर बैठो तो कितने पावन हो जायें। ... मनुष्य रात को नींद में अशरीरी हो जाते हैं, उस समय कोई विकर्म नहीं होते हैं, परन्तु ऐसे नहीं कि उससे कोई पाप विनाश होते हैं।”

सा.बाबा 13.11.10 रिवा.

“इस बेहद की दुनिया का अब विनाश होना है। बेहद का बाप तुमको बेहद का ज्ञान सुनाते हैं। हद की हिस्ट्री-जॉग्राफी की बातें तो तुम सुनते आये हो, लेकिन यह किसको भी पता नहीं कि इन लक्ष्मी-नारायण ने कैसे राज्य किया। इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई भी नहीं जानते हैं। ... इसको कहा जाता है स्प्रीचुअल नॉलेज, जो स्प्रीचुअल फादर बच्चों को देते हैं।”

सा.बाबा 14.06.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की धार्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

सृष्टि-चक्र में पहले दो युगों तक एक ही देवी-देवता धर्म होता है, फिर द्वापर से अन्य धर्म रूपी शाखायें, प्रशाखायें निकलती रहती हैं और यह सृष्टि रूपी वृक्ष वृद्धि को पाते-पाते अन्त में जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है, तब बीजरूप परमात्मा आकर इसकी नई कलम लगाते हैं और अनेक धर्मों से एक सत् धर्म की स्थापना करते हैं। द्वापर से जब अन्य धर्म स्थापन होते हैं तो पहले इब्राहम द्वारा इस्लाम धर्म, फिर बुद्ध के द्वारा बौद्ध धर्म, उसके बाद क्राइस्ट के द्वारा क्रिश्चियन धर्म की स्थापना होती है। उसके बाद अन्य सब धर्म स्थापन होते हैं। बौद्ध धर्म की स्थापना वर्तमान भारत में ही होती है और उसका प्रचार-प्रसार एशिया के पूर्वोत्तर और दक्षिण में अधिक होता है और इस्लाम धर्म और क्रिश्चियन धर्म की स्थापना वर्तमान एशिया दक्षिण-पश्चिम में होती है और विस्तार पश्चिमोत्तर और दक्षिण भाग में अधिक होता है अर्थात् उसका विस्तार भी भारत के पश्चिम में ही अधिक होता है।

दोनों तरफ के धर्मो की मान्यताओं में बहुत भिन्नता है परन्तु जो धर्म एक तरफ स्थापन होते हैं, उनमें कुछ समानतायें और कुछ भिन्नतायें होती हैं। इसलिए मुसलमान, क्रिश्चियन आदि पुनर्जन्म को नहीं मानते हैं, जब वर्तमान भारत के और बौद्ध धर्म में पुनर्जन्म को मानते हैं।

# सृष्टि-चक्र की राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी

सृष्टि-चक्र के आदि में देवी-देवताओं की राजाई होती है, जिसमें एक चक्रवर्ती राजा होता है, जिसकी राजधानी भारत में दिल्ली या दिल्ली के आसपास होती है, उसके अतिरिक्त सतयुग में अन्य 7 राजाईयाँ होती हैं, जो द्वापर में 12 हो जाती हैं। सतयुग-त्रेता तक सभी राजाइयाँ एक ही चक्रवर्ती राजा के सहयोगी बनकर रहते हैं। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण के नाम से राजगद्दी चलती है, त्रेता में राम-सीता के नाम से चलती है।

सतयुग-त्रेता में जो चक्रवर्ती राजाई होती है, उसकी गद्दी वर्तमान दिल्ली या उसके आसपास होती है और उसका नाम भी दिल्ली न होकर और अर्थात् इन्द्रप्रस्थ आदि होता है। उसके साथ अन्य जो 7 और 11 राजाइयाँ होती हैं, वे भारत के आसपास विस्तार को पाती हैं। जो त्रेता के अन्त में अफ्रीका के उत्तर मिस्र, एशिया के पश्चिम टर्की, उत्तर में योरोप और रशिया, पूर्व में चाइना-इण्डोनेशिया, दक्षिण में लंका आदि तक विस्तार को पाती है। फिर जब द्वापर से अन्य धर्म और राजाइयाँ स्थापन होती हैं तो भारत का संकुचन आरम्भ हो जाता है, जो संकुचित होते-होते भारत का वर्तमान रूप हो जाता है।

सतयुग में राज-सत्ता और धर्म-सत्ता एक ही राजा के हाथ में होती है, राजा-प्रजा दोनों की आत्मा और शरीर पवित्र होते हैं, इसलिए वहाँ दो ताज होते हैं। द्वापर में पवित्रता का ताज खत्म हो जाता है क्योंकि राजा-प्रजा विकारी बन जाते हैं, इसलिए एक ही रतनजड़ित ताज राजाओं को रह जाता है। कलयुग के अन्त में राज-व्यवस्था में राजाई खत्म होकर प्रजातन्त्र आ जाता है अर्थात् प्रजा का प्रजा पर राज्य होता है, राजाई खत्म हो जाती है।

कल्पान्त में परमात्मा आकर प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था राजतन्त्र की राज-व्यवस्था स्थापित करते हैं अर्थात् राजयोग सिखाकर विश्व में पुन: राजाई की स्थापना करते है, उसके लिए आत्माओं को पहले स्वराज्य अधिकारी बनाते हैं अर्थात् आत्मा को अपनी कर्मेन्द्रियों पर राज्य करना सिखाते हैं।

सतयुग में सारा विश्व एक होता है अर्थात् सारा विश्व भारत होता है, परन्तु भारत नाम नहीं होगा क्योंकि कोई और खण्ड होगा ही नहीं। जब द्वापर से अन्य धर्म और उनकी राजाई स्थापन होती है, तब जो सारा विश्व एक चक्रवर्ती राजाई के रूप में था, उसका विभाजन होना आरम्भ होता है और विभाजन होते-होते वर्तमान भारत का स्वरूप बनता है। इसका जाग्रत उदाहरण हम देखते हैं कि भारत की स्वतन्त्रता का संग्राम हिन्दू और मुसलमानों ने साथ-साथ एक होकर लड़ा, परन्तु जब भारत स्वतन्त्र हुआ तो सत्ता के लोभ में धर्म और जाति के नाम पर उस भारत का विभाजन हुआ और भारत एवं पाकिस्तान होकर दो भाग हुए, जो समयान्तर

में उसमें हिन्दुस्तान, पाकिस्तान, बांग्लादेश के नाम से तीन देश बन गये और अभी भी कश्मीर का झगड़ा चलता ही रहता है। क्या होगा, वह तो समय ही बतायेगा।

भारत देश की स्वतन्त्रता के लिए संग्राम करने वाले दिल्ली के अन्तिम मुगल शासक बहादुरशाह जफर को अपने बच्चों का बलिदान देना पड़ा और उसने स्वयं रंगून में जेल में ही शरीर छोड़ा।

सतयुग-त्रेता में जो धर्म-सत्ता और राज्य-सत्ता एक के हाथ में थी, सबको दो ताज अर्थात् पवित्रता का ताज और रतनजड़ित ताज था, वह द्वापर के आदि में अलग-अलग हो गये और धर्म राज्य से अलग होने के कारण राजाओं को एक ही ताज राज्य सत्ता का रह गया। उन एक ताज वाले राजाओं में पहले-पहले राजा विक्रमादित्य होते हैं, जहाँ से द्वापर की आदि होती है और दो ताज वाले राम-सीता का राज्य खत्म होता है।

“वे आपस में लड़ते हैं तुम्हारे लिए क्योंकि तुम्हारे लिए नई दुनिया चाहिए। बाकी देवताओं और असुरों की कोई लड़ाई नहीं है। तुम्हारी लड़ाई है माया के साथ। तुम बहुत नामीग्रामी वारियर्स हो, परन्तु तुमको कोई जानते नहीं हैं। देवियाँ इतनी क्यों गाई जाती हैं। अभी तुम योगबल से भारत को स्वर्ग बनाते हो। ... तुम जानते हो अभी ज्ञान से नई दुनिया जिन्दाबाद होती है।” सा.बाबा 9.11.10 रिवा.

## हिस्ट्री - जॉग्राफी का परस्पर सम्बन्ध

## हिस्ट्री - जॉग्राफी और आत्माओं के संकल्प-बोल-कर्म

जैसे कि बाबा ने बोला है, जो वास्तविकता है कि हिस्ट्री चेतन आत्माओं की होती है और जॉग्राफी जड़-जंगम प्रकृति की होती है। चेतन आत्मायें जो कर्म करती हैं या जो पार्ट बजाती हैं, उनके सहयोग के लिए जॉग्राफी है अर्थात् जड़ और जंगम प्रकृति है अथवा ऐसे कहें कि आत्मायें जो कर्म करती हैं, उसके अनुसार उनको सुख या दुख के रूप में फल देने के लिए जॉग्राफी है। हिस्ट्री और जॉग्राफी दोनों का घनिष्ट सम्बन्ध है और दोनों के सम्बन्ध से ही यह विश्व-नाटक सफलता पूर्वक चलता है।

चेतन आत्माओं के संकल्प, बोल, कर्म का जड़-जंगम प्रकृति पर भी प्रभाव होता है अर्थात् चेतन आत्मायें इस सृष्टि की जॉग्राफी को प्रभावित करती हैं। चेतन आत्माओं के कर्मों के कारण विश्व में जो ओजोन पर्त के फटने या खराब होने की जो समस्या पैदा हुई है, जिसका प्रभाव इस विश्व की जॉग्राफिकल स्थिति पर पड़ रहा है और उसके प्रभाव से जो परिवर्तन हो रहा है, उसके कारण चेतन आत्मायें प्रभावित हो रही है।

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, बाप में यह सारी नॉलेज है। हमारी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है। इस योग की ताक़त से आत्मा सतोप्रधान बन गोल्डन एज में चली जायेगी। ... सबको बोलो - इस याद के बल से हम पवित्र बन पवित्र दुनिया सतयुग में जायेंगे और सबके शरीरों का विनाश हो जायेगा, आत्मायें परमधाम में चली जायेंगी।"

सा.बाबा 11.08.10 रिवा.

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और विश्व-नाटक का सतत् परिवर्तनशीलता का सिद्धान्त इस विश्व-नाटक में हर जड़-जंगम-चेतन परिवर्तनशील है। इसलिए इस विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी में सतत् परिवर्तन होता है। इसका हर क्षण और हर दृश्य नया होता है। इसमें जड़-जंगम का रूप परिवर्तन होता है और चेतन आत्माओं के संस्कार-स्वभाव में परिवर्तन होता है, जिसके फलस्वरूप इस विश्व-नाटक कर हर दृश्य नया होता है और यह परिवर्तन शीलता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है। इस परिवर्तन की दो प्रकार की गति है। एक सतोप्रधान से तमोप्रधान की ओर और दूसरी तमोप्रधानता से सतोप्रधान की ओर। सारे कल्प जो परिवर्तन होता है, सतोप्रधान से तमोप्रधानता की ओर ही जाता है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर जब ज्ञान सागर परमात्मा आकर ज्ञान देते हैं, तब इसका परिवर्तन तमोप्रधानता से सतोप्रधानता की ओर होता है अर्थात् परमात्मा आकर इस विश्व की हर जड़-जंगम-चेतन प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं, इसलिए इस पुरुषोत्तम संगमयुग की हिस्ट्री-ज्रॉग्राफी विशेष है और सभी धर्मों और सभी शास्त्रों में इसका ही वर्णन है। यथा मुस्लिम धर्म में भी कहते हैं कि क़यामत के समय खुदा आकर रूहों को जगाता है। क्रिश्चियन धर्म में भी है कि क़यामत के समय सब आत्माओं का हिसाब-किताब चुक्तू कर परमात्मा आत्माओं को वापस घर ले जाते हैं। भारत में तो इस समय के महत्व के वर्णन से रामायण, महाभारत, गीता आदि अनेकानेक शास्त्र बने हुए हैं।

**सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विश्व-नाटक**

यह विश्व एक नाटक है, जिसमें आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक पार्ट चलते हैं और ये सब पार्ट एक निश्चित समय अर्थात् 5000 वर्ष के बाद पुनरावृत्त होते हैं। इसमें जो आत्मायें पार्टधारी हैं, उनमें प्लस-माइनस अर्थात सुख-दुख का एक विधि-विधान है, जिससे सबके पार्ट में एक विशेष सन्तुलन है, जिसके कारण यह नाटक पूर्ण न्यायपूर्ण है अर्थात् किसी आत्मा के साथ कोई पक्षपात नहीं है। जो इस नाटक के नियम-सिद्धान्तों को भलीभान्ति जानता है, वह

इसको साक्षी होकर देखता है और इसके परम-सुख को अनुभव करता है क्योंकि ये विश्व-नाटक परम-सुखमय है। वह इसके किसी दृश्य को देखकर उससे प्रभावित नहीं होता है।

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी पर विचार करें तो यह सृष्टि-चक्र तीन भागों में विभाजित है। सतयुग-त्रेता अर्थात् स्वर्ग, द्वापर-कलियुग अर्थात् नर्क और पुरुषोत्तम संगमयुग। सारे कल्प में पुरुषोत्तम संगमयुग ही ऐसा युग है, जब आत्माओं को इस सृष्टि-चक्र के तीनों लोकों और तीनों कालों की हिस्ट्री-जॉग्राफी का यथार्थ ज्ञान होता है क्योंकि संगम पर ही इस कल्प-वृक्ष के बीजरूप ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा आकर यह सारा ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान से इस कल्प-वृक्ष का काया-कल्प होता है अर्थात् इसकी नई कलम लगती है। इसलिए इन तीनों भागों के रूप में इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी पर विचार करते हैं।

"सतयुग में एक भारत ही था, और सब शान्तिधाम में थे। बच्चों को यह स्मृति में रखना चाहिए कि सतयुग-त्रेता किसको कहा जाता है और द्वापर-कलियुग किसको कहा जाता है, उसमें कौन-कौन राज्य करते थे। अभी तुम्हारी बुद्धि में पूरी नॉलेज है। जैसे बाप को रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान है, वैसे तुम्हारी बुद्धि में भी होना चाहिए। बाप जो ज्ञान देते हैं, वह बच्चों में भी जरूर होना चाहिए। बाप आकर बच्चों को आप समान बनाते हैं।"

सा.बाबा 2.05.11 रिवा.

"तुम बच्चे जानते हो - यहाँ की कोई भी चीज़ वहाँ काम नहीं आनी है। सब खानियाँ नये सिर भरपूर हो जाती है। साइन्स भी रिफाइन हो तुम्हारे काम आती है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान है। अभी तुम सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। ... बाबा पहले से ही सब कैसे बता दे। बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा के वश हूँ, जो ज्ञान अब तक मिला है, वह सब ड्रामा में नूँध है।" सा.बाबा 28.04.11 रिवा.

"इस ज्ञान योग से तुमको 21 जन्मों के लिए हेल्थ-वेल्थ मिलती है, परन्तु मनुष्य समझते नहीं हैं। किसको दोष भी नहीं दे सकते हैं। ... तुम कोई ड्रामा देखकर आओ तो सेकेण्ड में सारा ड्रामा सामने आ जायेगा। कोई को बताने में टाइम लगेगा। यह भी ऐसे है। बीज और झाड़।... मुख्य बात है बाप का परिचय और बाप की याद। बाप कहते हैं - तुम मेरे को याद करने से सबकुछ जान जायेंगे।" सा.बाबा 23.04.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं हूँ सर्व आत्माओं का बाप, मनुष्य-सृष्टि का बीजरूप, इसलिए नॉलेजफुल हूँ। इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ की आयु कितनी है, कैसे यह वृद्धि को पाता है, फिर कैसे भक्ति मार्ग शुरू होता है, यह मैं ही जानता हूँ। मैं यह नॉलेज तुम बच्चों को देकर स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। यह नॉलेज तुमको एक ही बार संगम पर मिलती है, फिर यह गुम हो जाती

है।" सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"यह है स्प्रीचुअल नॉलेज, जो स्प्रीचुअल बाप ही आकर देते हैं। ... अभी यह नाटक पूरा होता है, अब सबको वापस घर जाना है। अभी कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम है। बाप कहते हैं - मैं हर 5 हजार वर्ष के बाद आता हूँ, फिर से भारत को हीरे जैसा बनाने। यह सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप ही कल्प के संगमयुग पर आकर बताते हैं।"

सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"तुम कोई को भी यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझा सकते हो। भारत में सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी राजधानी थी। भारत जो इतना गिरा, उसकी जड़ देहाभिमान है। बच्चों को भी देहाभिमान आ जाता है, तो समझते नहीं कि हमको यह डॉयरेक्शन कौन देते हैं। हमेशा समझो - शिवबाबा कहते हैं। शिवबाबा को याद न करने से देहाभिमान में आ जाते हैं। ... इस ड्रामा का किसको भी पता नहीं है।" सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

"बाप स्वर्ग स्थापन करते हैं। कैसे स्थापना होती है, सो अभी तुम जानते हो। फिर सतयुग में ये सब बाते भूल जायेंगे। यह सब ड्रामा में नूँध है। ... ये सब बातें अच्छी रीति समझेंगे तो बहुत खुशी होगी। समझकर फिर समझाना भी है। किसको समझाने में बड़ी मेहनत लगती है। जब समझ जाते हैं तो उनको भी बड़ी खुशी होती है।"

सा.बाबा 6.03.11 रिवा.

"यह बना-बनाया ड्रामा है, जो हू-ब-हू रिपीट होता रहता है। इसमें ज़रा भी फर्क नहीं हो सकता। जो एक बार शूट हुआ, वह हू-ब-हू रिपीट होगा, उसमें पाई का भी फर्क नहीं हो सकता। तुमको ड्रामा का भी पूरा पता होना चाहिए। ... इस बेहद के ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को तुम ही अभी जानते हो, और कोई नहीं जानते हैं।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"परमात्मा में या ब्रह्म में लीन कोई हो नहीं सकता है। यह तो सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। सबको अपना पार्ट बजाना ही है। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। यह अनादि बना-बनाया ड्रामा है। तुमको 84 जन्मों का पार्ट बजाना ही है। ... तुम काम-चिता पर बैठ काले हो गये हो, अब बाप तुमको ज्ञान-चिता पर बिठाये सांवरे से गोरा बना देते हैं।"

सा.बाबा 21.06.11 रिवा.

"एक भी मनुष्य नहीं है, जिसको पता हो कि यह विश्व एक नाटक है। ... कोई कहते भी हैं कि यह नाटक है, हम पार्ट बजाने आये हैं। नाटक में पार्ट बजाने आये हैं तो उस नाटक के आदि-मध्य-अन्त का भी पता होना चाहिए। ... यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, जो

आदि से अन्त तक रिपीट होता रहता है। ... हू-ब-हू रिपीट होगा, ज़रा भी फर्क नहीं हो सकता।” सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

**सतयुग-त्रेता**

सतयुग-त्रेता दोनों को मिलाकर सृष्टि-चक्र का आधा भाग स्वर्ग कहा जाता है क्योंकि वहाँ आत्माओं को मृत्यु का दुख नहीं होता है, इसलिए आत्माओं को देह का त्याग करने में कोई भय नहीं होता है, इसलिए वहाँ के जीवन को अमर कहा जाता है। समय पर आत्मायें स्वेच्छा से देह का त्याग करते हैं और नयी देह को धारण करते हैं।

सतयुग-त्रेता में स्त्री-पुरुष को समान अधिकार होते हैं और राजसिंहासन पर राजा-रानी दोनों ही बैठते हैं। समय पर राजा-रानी अपने बच्चे को राजसिंहासन देकर तटस्थ हो जाते हैं, क्योंकि उनको राज-सत्ता का कोई लोभ नहीं होता है, उनका सत्ता से कोई लगाव नहीं होता है।

सतयुग-त्रेता में जीवात्मा को आत्मा का स्पष्ट ज्ञान नहीं होता है, परन्तु वे स्वभाविक देही-अभिमानी होते हैं, इसलिए उनमें प्रेम, सहयोग, निर्भयता, निश्चिन्तता, निर्संकल्पता आदि-आदि आत्मिक गुण स्वभाविक होते हैं, जिससे उनका जीवन पूर्ण सुख-शान्ति सम्पन्न होता है।

सतयुग-त्रेता में प्राय: सभी कार्य सौर-ऊर्जा (Solar Energy) से सम्पन्न होते हैं, इसलिए वहाँ पर ग्रीन गैसों आदि का न उत्सर्जन होता है और न ही उनका वातावरण या ओजोन पर्त पर कोई प्रभाव होता है, इसलिए प्रकृति का आत्माओं को पूर्ण सहयोग होता है अर्थात् प्रकृति आत्माओं को मनवांच्छित फल देती है। प्रकृति अपने सम्पूर्ण स्वरूप में सतोप्रधान होती है।

पाँचो तत्व वहाँ सतोप्रधान होते हैं, इसलिए जड़-जंगम प्रकृति भी सतोप्रधान होती है। बाबा ने कहा है - वहाँ का पानी भी यहाँ के दूध से अधिक स्वास्थ्यप्रद होता है।

सतयुग-त्रेता में एक राज्य अर्थात् अनेक राज्य होते भी सभी राज्य एक चक्रवर्ती राजा के साथ सहयोगी बनकर राज्य करते हैं और एक ही धर्म आदि सनातन देवी-देवता धर्म होता है, इसलिए परस्पर किसी प्रकार से राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता आदि नहीं होती है, इसलिए परस्पर किसी प्रकार द्वन्द नहीं होता है।

सतयुग-त्रेता में तीनों लोक तो होते हैं परन्तु आत्माओं को मूलवतन, सूक्ष्मवतन का कोई ज्ञान नहीं होता है। परमधाम में आत्मायें रहती हैं, वहाँ से यहाँ आकर पार्ट बजाती हैं। सूक्ष्मवतन का न ज्ञान होता है और न ही वहाँ किसी प्रकार का क्रिया-कलाप होता है क्योंकि

परमधाम से आने वाली आत्मायें जब सूक्ष्मवतन को पार करती हैं तो उनको किसी प्रकार का सूक्ष्म शरीर नहीं होता है और उस समय आत्मायें स्थूलवतन से परमधाम तो जाती नहीं हैं, इसलिए सूक्ष्मवतन में जाने का प्रश्न नहीं उठता है। हाँ, यह तो स्वभाविक है कि आत्मा एक शरीर छोड़कर जब दूसरा शरीर लेती है, तो वह सूक्ष्म शरीर के साथ ही दूसरे शरीर में प्रवेश करती है।

सतयुग में तीनों लोक तो होते हैं, परन्तु सूक्ष्मवतन में कोई क्रिया-कलाप नहीं होता है, इसलिए बाबा ने कहा कि सतयुग में सूक्ष्म वतन नहीं होता है। परन्तु सृष्टि के विधि-विधान अनुसार कोई तत्व विनाश नहीं होता है, न कोई स्थान खत्म होता है और न आत्मायें विनाश होती हैं। केवल स्थान और स्थिति का परिवर्तन होता है।

सतयुग-त्रेता में सभी नगर, शहर, गाँव, राजधानियाँ मीठे पानी की नदियों के किनारे होती हैं, इसलिए प्राय: विश्व की सभी प्राचीन सभ्यतायें नदियों के नाम से ही प्रसिद्ध हैं। यथा जमुना के किनारे कृष्ण का रास-विलास, सिन्धु घाटी की सभ्यता, ईराक की दजला घाटी की सभ्यता, मिस्र की नील घाटी की सभ्यतायें आदि आदि मुख्य हैं।

सतयुग-त्रेता में आत्माओं को संगम पर परमात्मा द्वारा मिला वर्सा होता है, इसलिए उनको जीवन निर्वाह के लिए किसी प्रकार की मेहनत नहीं करनी होती है। सभी आत्मायें अपने दैनिक कार्य मनोरंजन के रूप में खुशी-खुशी स्वभाविक करते हैं। जीवन निर्वाह के सर्व कार्य करते भी किसी प्रकार की मेहनत या थकावट आदि को अनुभव नहीं करते हैं।

सतयुग-त्रेता में पृथ्वी अपनी धूरी पर 90 अंश पर सीधी होती है, जो संगमयुग पर भूचाल, आदि के द्वारा हो जाती है और वह आधे कल्प तक यथावत रहती है। संगम पर जब विश्व में अणु-युद्ध होता है, भूचाल-सुनामी आदि होती हैं तो कलियुग के अन्त में नदियों और सागर के कारण विभिन्न देशों में भूभाग विभाजित हैं, वे अनेक भूभाग एक साथ मिल जाते हैं।

सतयुग के आदि में संगमयुग पर जो भौगोलिक परिवर्तन होता है, उसमें सभी तत्व और सभी भूगर्भ सम्पदा अपने सतोप्रधान स्वरूप में आ जाती है। पृथ्वी के चारो ओर जो ओजोन पर्त है, जो भूमण्डल के वातावरण को सामान्य बनाने में मूल भूमिका निभाती है, वह भी अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में हो जाती है। वातावरण में ग्रीन गैसों आदि का प्रभाव खत्म हो जाता है।

सतयुग-त्रेता के प्रेम का वर्णन है कि वहाँ शेर और गाय एक घाट जल पीते हैं।

सतयुग-त्रेता में आत्माओं को संगमयुग पर परमात्मा से प्राप्त वर्सा मिलता है, इसलिए राजा को प्रजा की पालना का संकल्प नहीं रहता है। सभी आत्मायें अपनी जगह पर

सुख-शान्ति-सम्पन्न होती हैं।

विचारणीय बात है कि सतयुग आदि से ही आत्मा और प्रकृति की कलायें उतरनी आरम्भ हो जाती हैं, जो गति कलियुग के अन्त तक चलती रहती है।

सतयुग-त्रेता में डबल सिरताज राजायें राज्य करते हैं अर्थात् सभी धन-धान्य से भी सम्पन्न होते हैं, इसलिए उनको रतजड़ित ताज भी होता है और उनमें पवित्रता की शक्ति होती है, इसलिए प्रकाशमय अर्थात् आभामण्डल का ताज भी होता है।

सतयुग-त्रेता में आत्मायें ड्रामा स्टेज पर कम और परमधाम में अधिक होती हैं, सतयुग-त्रेता में आत्मिक शक्ति होती है, इसलिए सन्तानोत्पत्ति योगबल से होती है। वहाँ एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म होता है, और सब धर्मों की आत्मायें परमधाम में होती हैं।

सतयुग में चक्रवर्ती राजाई लक्ष्मी-नारायण के नाम से चलती है, उसके साथ आठ और राजगद्दियाँ चलती हैं, जिनकी वंश परम्परा चलती है। सबको अपना-अपना एक उत्तराधिकारी होता ही है, जो समय पर राजगद्दी पर बैठता है। प्रजा में भी हर एक को अपना उत्तराधिकारी होता है, कोई निःसन्तान नहीं होता है। सतयुग में जो राजाई की आठ गद्दियाँ होती हैं, वे त्रेता में 12 हो जाती हैं और चक्रवर्ती राजाई जो लक्ष्मी-नारायण के नाम से चलती है, वह राम-सीता के नाम से चलने लगती है।

सतयुग में स्वभाविक देही-अभिमानी होते हैं, जिससे जीवात्मा को देह धारण करने और देह का त्याग करने में दुख या भय नहीं होता है, परन्तु आत्मा को आत्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, इसलिए सतयुग में आत्मा को देहभान होता है, परन्तु देहाभिमान नहीं होता है, इसलिए आत्मा की आत्मिक शक्ति के ह्रास की गति मन्द होती है।

सतयुग-त्रेता में यथार्थ रीति देवतायें होते हैं, दैवी सभ्यता होती है, इसलिए वहाँ न भक्ति होती है और न कोई मन्दिर आदि होते हैं।

त्रेता से जब द्वापर आरम्भ होता है, तो आत्माओं में आत्मिक शक्ति का बहुत ह्रास हो जाता है, जिससे आत्मायें देहाभिमान में आती हैं, देहाभिमान के कारण आत्माओं विकारों की प्रवेशता होती है, जिससे आत्मायें विषय-वासना में प्रवृत्त होती हैं, योगबल के स्थान पर भोगबल से सन्तानोत्पत्ति का विधि-विधान आरम्भ होता है, तो सौरमण्डल में अभूतपूर्व परिवर्तन होता है, जिससे पृथ्वी पर भूकम्प आदि होता है, जिससे पृथ्वी जो अपनी धूरी पर 90 अंश में सीधी होती है, वह साढ़े तेईस अंश झुक जाती है, जिससे पृथ्वी नदियों का जल-प्रवाह बदल जाता है, भूखण्ड विभाजित हो जाता है, अनेक नये भूभाग जो जलमग्न थे, वे बाहर आ जाते हैं।

- सतयुग में भी ऋतुपरिवर्तन होगा परन्तु ओजोन पर्त की सम्पन्नता के कारण ऋतुओं में अन्तर बहुत कम अर्थात् न के बराबर होगा, जिससे मौसम सदाबहार रहेगा। ये अन्तर समयान्तर में परिवर्तन होगा।

- पृथ्वी के अपनी धूरी पर 90 अंश पर सीधी हो जाने के कारण साल में विभिन्न समय पर दिन-रात का जो अन्तर होता है, वह कम हो जायेगा, परन्तु होगा अवश्य। अभी ये अन्तर 10.14, 14-10 और 12-12 होता है।

## द्वापर-कलियुग की हिस्ट्र-जॉग्राफी

त्रेता के बाद आत्मिक बल कम होने से देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं, जिसके कारण भोगबल से सन्तानोत्पत्ति की प्रथा आरम्भ होती है। दो युगों अर्थात् आधे कल्प में जो जनसंख्या 33 करोड़ तक ही वृद्धि को पाती है, वह तीव्रता से वृद्धि को पाती है, जिससे आगे आधे कल्प अर्थात् द्वापर-कलियुग में 700 करोड़ तक वृद्धि हो जाती है। आत्मिक शक्ति का ह्रास भी तेजी से होता है। विभिन्न धर्मो और राजाइयों की स्थापना होती है, जिनमें परस्पर मतभेद होता है, जिसके कारण परस्पर वैमनस्य बढ़ता है, जिससे धर्म और राज्य के नाम पर युद्धादि भी होते हैं। दो युगों तक जो चक्रवर्ती राजाई चलती है, वह खत्म हो जाती है।

सतयुग-त्रेता में एक ही देवी-देवता धर्म होता है, परन्तु द्वापर से अन्य धर्म-पितायें आकर अपने धर्मवंश की स्थापना करते हैं, जिससे उनके धर्मवंश की आत्मायें परमधाम से आना आरम्भ हो जाती हैं। विभिन्न धर्मवंशों की वृद्धि के साथ उन धर्मवंशों की राजाइयाँ भी स्थापन होती है, जिससे पहले जो एक राज्य होता है, वह विभाजित होता है, उससे अन्य देशों का नामकरण होता है, वर्तमान भारत में दिल्ली की जो राजाई होती है, वह भारत के नाम से जानी जाती है।

द्वापर के आदि में जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, भोगबल का आरम्भ होता है तो सृष्टि पर भूकम्प आदि होता है, जिससे पृथ्वी जो अपनी धूरी पर 90 अंश पर सीधी होती है, वह साढ़े तेइस अंश झुक जाती है, जिससे विश्व में अनेक प्रकार के भौगोलिक परिवर्तन होते हैं।

त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि में जब देवी-देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, तब भी भूचाल आदि होते हैं, जिससे पृथ्वी अपनी धूरी पर साढ़े तेईस अंश झुक जाती है, जिससे जल-प्रवाह बदल जाता है। सतयुग-त्रेता में जो भूभाग एक साथ होते हैं, वे विभाजित हो जाते हैं, जिससे सभ्यतायें विभिन्न भागों में बट जाती हैं और उसके आधार पर विभिन्न देशों का नामकरण होता है, विभिन्न राजाइयाँ अस्तित्व में आती हैं।

द्वापर-कलियुग में भी आत्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है और आत्मिक शक्ति भी कम होने के कारण जीवात्मा को मृत्यु का भय और मृत्यु का दुख सताने लगता है, जिससे आत्मायें अपने आत्म-कल्याण के लिए पुरुषार्थ करती हैं, इसलिए द्वापर-कलियुग को भक्ति मार्ग कहा जाता है।

द्वापर-कलियुग में आत्मा अपने आत्म-कल्याण के प्रति जागृत तो होती है, लेकिन यथार्थ आत्मिक ज्ञान न होंने के कारण दिनोंदिन अज्ञानता जनित देहाभिमान बढ़ता जाता है, विकारों के वशीभूत आत्मिक शक्ति का ह्रास तीव्रता से होता है।

द्वापर से जब देवतायें अपने दैवी धर्म और कर्म को भूलकर वाम मार्ग में चले जाते हैं, तो पहले परमात्मा शिव का मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं, फिर बाद में देवताओं के मन्दिर बनाते हैं और कलियुग के अन्त में भक्ति भी तमोप्रधान बन जाती है, जिससे मनुष्यात्माओं की, तत्वों आदि की भक्ति करने लगते हैं और गिरते जाते हैं अर्थात् अज्ञान अन्धकार सघन होता जाता है।

द्वापर युग से भक्ति का आरम्भ होता है। द्वापर आदि में भक्ति भी सतोप्रधान होती है, एक परमात्मा शिव की ही अव्यभिचारी भक्ति होती है। फिर भक्ति भी रजो, तमो, तमोप्रधान बन जाती है और कलियुग अन्त में जड़ तत्वों की भी पूजा होने लगती है अर्थात् भक्ति तमोप्रधान व्यभिचारी बन जाती है।

द्वापर-कलियुग में सब कार्य सतयुग-त्रेता के विपरीत होते हैं, इसलिए कल्प के इस आधे भाग को नर्क कहा जाता है। द्वापर-कलियुग में कर्म और फल का विधि-विधान चलता है, इसलिए आत्माओं को चाहे-अन्चाहे पुरुषार्थ करना होता है और उनको कर्मों अनुसार फल मिलता है।

द्वापर-कलियुग में देहाभिमान के कारण सभ्यता पुरुष प्रधान हो जाती है, आत्माओं में विकारों की प्रवेशता होती है, इसलिए राजसिंहासन पर राजा बैठता है, साथ में रानी नहीं बैठती।

द्वापर-कलियुग में अन्य धर्म भी स्थापन होते हैं, जिससे अन्य धर्मों की राजाइयाँ स्थापन होती हैं, जिससे परस्पर युद्ध आदि होते हैं, जीवन में दुख-अशान्ति पैदा होती है, जो निरन्तर बढ़ती जाती है क्योंकि द्वापर से आत्माओं में देहाभिमान के कारण विकारों की प्रवेशता होती है, जो निरन्तर बढ़ते जाते हैं।

द्वापर-कलियुग उतरती कला का समय है। दिनोंदिन आत्मा और प्रकृति की कलायें उतरती जाती हैं अर्थात् रजो से तमो और तमोप्रधान बनती हैं। आत्मायें विकारों के वशीभूत

पतित बनती हैं, जिससे दुख-अशान्ति होती है। द्वापर-कलियुग में राजा-प्रजा सब पुजारी बन जाते हैं, देहाभिमान और काम-विकार की प्रवेशता के कारण प्रकाश का ताज खत्म हो जाता है, उनको केवल रतन जड़ित ताज रह जाता है।

द्वापर से विभिन्न धर्म पितायें आकर अपने-अपने धर्म की स्थापना करते हैं और समयान्तर में वे वृद्धि को पाते हैं और उनकी राजाई स्थापन होती है। कलियुग के अन्त में इस धरा पर विभिन्न धर्म, मठ-पंथ, मत-मतान्तर हो जाते हैं।

"बच्चे विचार करो कि कैसे सतयुग से लेकर कलियुग तक टाइम पास होते-होते अभी आकर कलियुग के अन्त में आकर खड़े हैं। ... आगे यह पता नहीं था कि अब कलियुग पूरा होता है। अभी मालूम पड़ा है तो बच्चों को भी बुद्धि में रहना चाहिए कि कैसे सतयुग से लेकर कलियुग तक का सारा चक्र लगाये अभी कलियुग के अन्त में आकर ठहरे हैं।... इस दुनिया से उस दुनिया में जाने का अभी थोड़ा समय रहा है।"

सा.बाबा 6.11.10 रिवा.

## पुरुषोत्तम संगमयुग की हिस्ट्री-जॉग्राफी

पुरुषोत्तम संगमयुग की हिस्ट्री-जॉग्राफी बड़ी विलक्षण है, इसमें अनेक बातों की अति और अन्त, आदि और अन्त का संगम है, जो इसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी को अति रोचक बना देता है और जो इसके यथार्थ रहस्य को समझकर इसे देखता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है।

इस सृष्टि में काल-चक्र के हिसाब से अनेक प्रकार के संगम गाये हुए हैं, परन्तु उन सब में दो संगमों का विशेष महत्व है, उनके विषय में अर्थात् उनकी हिस्ट्री-जॉग्राफी जानना अति महत्वपूर्ण है। उनमें एक है नर्क और स्वर्ग का संगम अर्थात् कल्प का संगम अर्थात् कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि का संगम, पुरुषोत्तम संगमयुग के रूप में जाना जाता है और दूसरा है स्वर्ग और नर्क का संगम अर्थात् त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि का संगम। इन दोनों संगमों पर विश्व में विशाल ऐतिहासिक और भौगोलिक परिवर्तन होते हैं, जो इस विश्व की आध्यात्मिक, राजनैतिक, धार्मिक हिस्ट्री-जॉग्राफी में आमूलभूत परिवर्तन करते हैं अर्थात् नर्क से स्वर्ग बनाता है और स्वर्ग से नर्क बना देता है। इन संगमों पर अनेक प्रकार की अप्रत्याशित घटनायें होती हैं, जिनके कारण इस विश्व का रूप ही बदल जाता है। ये दोनों संगमों की हिस्ट्री-जॉग्राफी जानने से पता पड़ता है कि स्वर्ग क्या है और नर्क क्या है तथा दोनों में अन्तर क्या है।

नर्क और स्वर्ग का संगम समय कल्प का सबसे श्रेष्ठ समय है, जब आत्माओं की

और विश्व की चढ़ती कला होती है। और तो सारे कल्प में आत्माओं और विश्व की उतरती कला ही होती है। चढ़ती कला का संगम है, इसलिए इसको पुरुषोत्तम संगमयुग कहा जाता है क्योंकि इस संगम पर ही परमात्मा आकर आत्माओं को चढ़ती कला का ज्ञान देते हैं, राजयोग सिखाकर, पावन बनाकर घर वापस ले जाते हैं और फिर घर से आकर आत्मायें अपना नया पार्ट बजाना आरम्भ करती हैं अर्थात् कल्प का नया चक्र आरम्भ होता है। विशेष ध्यान देने की बात है कि आत्माओं की और प्रकृति की चढ़ती कला का समय पुराने कल्प संगमयुग ही है, नये कल्प के संगम समय में तो उतरती कला आरम्भ हो जाती है। इसके लिए बाबा ने कहा है - सम्पूर्ण सतोप्रधान श्रीकृष्ण को ही कहेंगे, श्रीनारायण को नहीं।

ऐसे ही स्वर्ग और नर्क का संगमयुग भी विशेष समय है क्योंकि उस समय भी विश्व में अनेक प्रकार के अप्रत्याशित परिवर्तन होते हैं। इस धरा पर जो स्वर्ग था, वह नर्क में बदल जाता है अर्थात् अमरलोक मृत्युलोक बन जाता है, देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं अर्थात् वे अपने धर्म-कर्म को भूल जाते हैं और समयान्तर में अपने को हिन्दु कहलाने लगते हैं।

इस कल्प के पुरुषोत्तम संगमयुग में अर्थात् पुराने कल्प के संगमयुग के समय के अन्त में इस पृथ्वी पर विशाल भूकम्प होते हैं, जिससे पृथ्वी जो अपनी धूरी पर साढ़े तेइस अंश पर झुकी होती है, वह 90 अंश पर सीधी हो जाती है, जिससे विश्व में अनेक अप्रत्याशित परिवर्तन होते हैं। अनेक भूभाग जलमग्न हो जाते हैं और अनेक भूभाग आपस में मिल जाते हैं। जलप्रवाह बदल जाता है।

स्वर्ग और नर्क के संगम पर भी अनेक प्रकार के भौगोलिक परिवर्तन होते हैं। भूचाल आदि आते हैं, जिससे पृथ्वी अपनी धूरी पर जो 90 अंश पर सीधी होती है, वह साढ़े तेइस अंश झुक जाती है, जिससे नदियों का जल प्रवाह बदलता है, अनेक खण्ड जो अलग-अलग होते हैं वे जुड़ जाते हैं और जो जुड़े हुए होते हैं, वे विभाजित हो जाते हैं। इस समय की विशेषता ये है कि भूकम्प आदि आते भी आत्माओं को किसी प्रकार का दुख-दर्द नहीं होता है।

इस संगमयुग पर ही सारा सौर मण्डल अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्थिति में आ जाता है, जिससे नये कल्प में सतोप्रधान प्रकृति होती है, जिससे आत्माओं को पूर्ण सुख शान्ति मिलती है। इस संगमयुग के समय के बाद नये कल्प का संगम समय आरम्भ होता है, सुखमय समय अर्थात् स्वर्ग का आदि होता है। नये कल्प के संगम समय में नई दुनिया अर्थात् स्वर्ग का निर्माण कार्य होता है। पुराने कल्प का संगम समय 100 साल के लगभग होता है और नये कल्प का समय 25-30 साल का होता है।

पुरुषोत्तम संगमयुग कल्प का सबसे श्रेष्ठ समय है, जब ज्ञान सागर परमात्मा आकर इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का सत्य ज्ञान देते हैं, आत्माओं को राजयोग सिखाते हैं, जिससे आत्मायें परमात्मा के सानिध्य से परमानन्द अर्थात् अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है। परमात्मा पिता ने अभी यह भी ज्ञान दिया है कि भविष्य में क्या होने वाला है, उसके लिए तुम आत्माओं को क्या करना है अर्थात् क्या तैयारी करना है, जिससे तुम उस समय होने वाली दुख-अशान्ति की घटनाओं से अप्रभावित रह सको क्योंकि विनाश का समय बहुत भयानक होगा, परन्तु उसमें भी आत्माओं को उनके कर्मानुसार सुख-दुख दोनों होगा।

संगमयुग पर प्राय: सभी धर्म वंश इस धरा पर आ जाते हैं और उनकी आत्मायें पार्ट बजाने के लिए आती रहती हैं। विश्व के सभी देशों में प्राय: राजतन्त्र की समाप्ति हो जाती है और सभी देशों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था आरम्भ हो जाती है। किन्हीं देशों में राजतन्त्र रहता भी है, तो वह भी नाम मात्र ही रहता है। परमात्मा ही आकर इस प्रजातन्त्र के समय में राजतन्त्र की स्थापना करते हैं, आत्माओं को राजयोग सिखाकर नई दुनिया में राज्य करने के योग्य बनाते हैं। परमात्मा के द्वारा स्थापित राजतन्त्र आधा कल्प तो चलता ही है, उसके बाद भी विश्व में राजतन्त्र की ही राज-व्यवस्था चलती है। प्रजातन्त्र तो कलियुग के अन्त में 100-150 चलता है।

संगमयुग पर इस सृष्टि-चक्र की सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी रिबाइण्ड होती है, इसलिए इस समय ही आत्माओं को इसका सारा ज्ञान होता है, आत्माओं में सारे कल्प के संस्कार सूक्ष्म में होते हैं, जिससे अभी जब परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है तो आत्माओं को अति विशिष्ट सुख की अनुभूति होती है, जिसको अतीन्द्रिय सुख या आनन्द कहा जाता है। इस संगमयुग पर ही कल्प का नया चक्र आरम्भ होता है, इसलिए आत्माओं को ज्ञान सागर परमात्मा से सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान मिलता है। आधे कल्प आत्मायें जो परमात्मा को याद करती हैं, उसका आधार है कि परमात्मा से जो सुख की अनुभूति इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर होती है, उस अनुभूति का संस्कार आत्मा में सूक्ष्म स्मृति के रूप में मर्ज रहता है। अभी वह समय चल रहा है और आत्माओं को वह अनुभूति हो रही है।

संगमयुग पर सारे चक्र की हिस्ट्र-जॉग्राफी रिबाइण्ड होती है, जिसके लिए बाबा ने कहा है संगमयुग पर आत्माओं के पुरुषार्थ और संस्कारों से पता पड़ जाता है कि इनके भूतकाल के कर्म-संस्कार क्या थे और भविष्य में यह क्या पद पाने वाले हैं अर्थात् सारे कल्प में उस आत्मा का क्या पार्ट होगा।

संगमयुग पर सबसे अधिक जनसंख्या वृद्धि होती है अर्थात् सारे कल्प से अधिक

आत्मायें परमधाम से इस धरा पर पार्ट बजाने संगमयुग में ही आती हैं, जिससे पुराने कल्प के संगमयुग के अन्त में विश्व में सर्वाधिक जनसंख्या हो जाती है और परमधाम में आत्मायें नाममात्र रह जाती है, वे भी कल्पान्त तक अवश्य आ जाती हैं। संगमयुग का जो भाग नये कल्प में आता है, उसमें पुराने कल्प की कुछ आत्मायें एडवान्स पार्टी वाली आत्मायें भी होती हैं और नये कल्प की नई आत्मायें भी परमधाम से आना आरम्भ हो जाती हैं। फिर जब लक्ष्मी-नारायण गद्दी पर बैठते हैं, तब विश्व में सबसे कम जनसंख्या होती है।

संगमयुग पर आत्माओं को परमात्मा से आत्मा का, परमात्मा का, तीनों कालों और तीनों लोकों का ज्ञान मिलता है, इसलिए आत्माओं का परमात्मा से सम्बन्ध जुटता है, जिससे आत्मायें परमात्माभिमानी होती हैं और परमात्मा को याद कर यथार्थ रीति आत्माभिमानी बनने का पुरुषार्थ करती हैं और जब पूरे आत्माभिमानी बन जाते हैं, तब विनाश होता है और आत्मायें देह त्याग कर परमधाम घर में परमात्मा के साथ वापस जाती हैं। यह परमात्माभिमानी स्थिति ही आत्मा के पावन बनने का एकमात्र आधार है, चढ़ती कला का आधार है।

रामराज्य और रावण राज्य, राम-सम्प्रदाय और रावण सम्प्रदाय, देवता और असुरों, कौरवों और पाण्डवों आदि का ज्ञान परमात्मा द्वारा इस कल्प के संगम पर ही मिलता है, जिससे आत्मायें रावण सम्प्रदाय से निकल राम सम्प्रदाय में आ जाती हैं और रावण राज्य से रामराज्य में जाने के लिए पुरुषार्थ करती है, जिसको राम-रावण का, देवासुर, कौरवों-पाण्डवों के युद्ध के नाम से भक्ति मार्ग में याद किया जाता है।

संगमयुग पर विश्व में जनसंख्या अपने चरम पर होती है, परमधाम में आत्मायें कम होती हैं। फिर जब संगमयुग के अन्त में विनाश होता है तो सभी आत्मायें परमधाम जाती हैं और सतयुग के आदि में न्यूनतम जनसंख्या होती है, जो 9,16,108 के लगभग होती है। संगमयुग के नये कल्प के भाग में जनसंख्या अवश्य 20-25 लाख के लगभग होती है क्योंकि उस समय विश्व में एडवान्स पार्टी की आत्मायें और नई दुनिया के निर्माण करने वाली आत्मायें भी रहती हैं।

संगमयुग पर आत्मायें स्वेच्छा से देह-त्याग का पुरुषार्थ करती हैं, जो परमात्मा सिखाते हैं और अव्यक्त रूप में आकर उसका स्वरूप भी दिखाते हैं।

संगमयुग पर परमात्मा आकर ज्ञान-यज्ञ की स्थापना करते हैं और आत्माओं को विश्व-सेवा का पाठ पढ़ाते हैं, जिससे आत्मायें विश्व सेवा करती हैं, आत्माओं में विश्व-बन्धुत्व की भावना जागृत होती है। सर्व धर्मों में समभाव पैदा होता है।

संगमयुग पर विज्ञान के क्षेत्र में अनेक प्रकार के आश्चर्यजनक अविष्कार होते हैं,

जिनसे पुरानी दुनिया का विनाश भी होता है तो नई दुनिया की स्थापना में भी वे सहयोगी बनते हैं। संगमयुग पर विश्व-नाटक का परमात्मा से यथार्थ ज्ञान मिलता है, जिससे आत्मा विश्व-नाटक की हू-ब-हू पुनरावृत्ति को समझकर साक्षी स्थिति में स्थित होकर परमात्मा की याद में अतीन्द्रिय सुख का अनुभव करती है, आनन्द का अनुभव करती है।

अतीन्द्रिय सुख, आनन्द संगमयुग की विशेष प्राप्ति है। सतयुग में भौतिक सुख होता है, परन्तु आनन्द नहीं होता है।

विश्व-नाटक के सतयुग आदि से लेकर कलियुग अन्त तक की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी का और उसके हू-ब-हू पुनरावृत्ति का यथार्थ ज्ञान संगमयुग पर ही मिलता है।

संगमयुग पर आत्माओं की परमधाम की वापसी यात्रा (Return Journey) होती है, इसलिए आत्माओं को वापस घर जाने के लिए पुनः अपनी सतोप्रधान स्थिति में स्थित होने का पुरुषार्थ करना होता है।

सूक्ष्मवतन का ज्ञान और सूक्ष्मवतन में फरिश्ता स्वरूपधारी ब्रह्मा बाबा का और परमात्मा का अर्थात् अव्यक्त बापदादा का पार्ट संगमयुग पर ही चलता है। सतयुग से लेकर कलियुग तक न सूक्ष्मवतन का ज्ञान होता है और न ही कोई पार्ट चलता है।

यह विश्व-नाटक दिन-रात, सुख-दुख, रामराज्य-रावणराज्य का अनादि-अविनाशी बना हुआ है, जो आधा-आधा चलता है। यह ज्ञान भी संगमयुग पर ही मिलता है। संगमयुग पर ही परमात्मा के द्वारा सभी आत्माओं को गति-सद्गति प्राप्त होती है।

संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा का ब्रह्मा तन में अवतरण होता है, उनसे परकाया प्रवेश का ज्ञान मिलता है और विभिन्न धर्म पितायें भी परकाया प्रवेश कर अपने धर्म की स्थापना करते हैं, वह ज्ञान भी संगमयुग पर ही मिलता है। संगमयुग पर परमात्मा आसुरी सम्प्रदाय से दैवी सम्प्रदाय की कलम लगाते हैं अर्थात् पुराने कल्प-वृक्ष से नये कल्प-वृक्ष की कलम लगाते हैं। द्वापर से अन्य धर्म-पितायें आदि सनातन देवी-देवता धर्म वंश की आत्माओं के तन में प्रवेश होकर उससे अपने धर्म की कलम लगाते हैं अर्थात् कल्प-वृक्ष से उनके धर्मवंश की शाखायें निकलती है। पहले-पहले उनके धर्म में आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मायें जो अपने धर्म-कर्म को भूल वाम मार्ग में आ जाती हैं, वे परिवर्तन होती हैं, फिर उनमें उस धर्मवंश की आत्मायें परमधाम से आती हैं और वह धर्म वृद्धि को पाता है।

संगमयुग के अन्त में सभी आत्मायें इस रंगमंच पर आ जाती है, फिर जाना आरम्भ होता है। पहले-पहले शिवबाबा के साथ ब्रह्मा बाबा जाते हैं, फिर और सब आत्मायें जाती हैं।

सभी धर्मवंश की आत्माओं की संख्या निश्चित है, वह ज्ञान भी संगम पर ही परमात्मा के द्वारा मिलता है।

संगमयुग पर रतनजड़ित ताज भी खत्म हो जाता है और प्राय: सभी देशों में प्रजा का प्रजा पर राज्य हो जाता है, राजाई खत्म हो जाती है। संगमयुग पर परमात्मा आकर प्रजातन्त्र से राजतन्त्र की स्थापना करते हैं। बाबा कहते भी हैं - मैं राजयोग सिखाकर राजाई की स्थापना करता हूँ।

"नये भारत में इन देवी-देवताओं का राज्य था। नये के आगे क्या था, जरूर पुराना कहेंगे। फिर नये और पुराने के बीच में फिर है संगम। ... बाप को बुलाते हैं - हे पतित-पावन आओ। यह तो बहुत समय से बुलाते आये हैं। परन्तु उनको पता नहीं है कि यह पतित दुनिया कब पूरी होगी। ... अभी तुम रोशनी में हो, बाप ने तुमको अब रोशनी में लाया है।"

सा.बाबा 19.05.11 रिवा.

"अभी तुमको कितना अच्छा ज्ञान मिला है। तुम ही जब प्रॉलब्ध भोगते हो तो यह ज्ञान भूल जाता है। फिर सीढ़ी उतरनी होती है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान बैठा हुआ है। ड्रामा का यह पार्ट कभी भी कोई का बन्द नहीं होता है। यह बना-बनाया ड्रामा है, जो फिरता रहता है। यह कह नहीं सकते कि भगवान ने कब, कैसे, कहाँ बैठ यह ड्रामा बनाया? यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती ही रहती है।"

सा.बाबा 19.05.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगम पर आता हूँ, और सबका सद्गति दाता बनता हूँ। ... भारत है अविनाशी खण्ड, जो कभी विनाश नहीं होता है। बाप भी भारत में ही आते हैं।... भारतवासी ड्रामा प्लेन अनुसार अपने धर्म को भूल गये हैं और भूलने से कलियुग अन्त में बिल्कुल पतित बन पड़े हैं। फिर बाप आकर पावन बनाते हैं।"

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

"इस कल्प के पुरुषोत्तम संगम युग पर ही रुहानी बाप आकर रूहों को पढ़ाते हैं। हर एक बच्चा बाप से वर्सा लेने का हक़दार है। ... अभी तुम बच्चे जानते हो कि झूठ क्या है और सच क्या है। एक ही बार बाप सच सुनाये सच खण्ड का मालिक बनाते हैं। तुम जानते हो - इस झूठ खण्ड को आग लगनी है, जो कुछ भी देखने में आता है, यह नहीं रहेगा। ... इस यज्ञ से विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित हुई है, जिसमें सारी पुरानी दुनिया स्वाहा हो जानी है। फिर नई दुनिया बननी भी है।" सा.बाबा 16.06.11 रिवा.

"इन लक्ष्मी-नारायण को भी निराकार बाप ने ऐसा बनाया है। अभी राजधानी स्थापन हो रही है,

बाप राजयोग सिखा रहे हैं। ... संगमयुग पर ही जब शिवबाबा आते हैं, तब खेल पूरा होता है, फिर कृष्ण का जन्म होता है। ... अभी तुम जैसे कि मास्टर नॉलेजफुल बन गये हो। बाप ने तुमको ब्रह्मा द्वारा सभी वेदों-शास्त्रों का सार समझाया है।”

सा.बाबा 9.06.11 रिवा.

“पुरानी दुनिया को पतित, नई दुनिया को पावन कहेंगे। गोया बाप पुरानी दुनिया को नया बनाने आये हैं। कलियुग है पुरानी दुनिया, सतयुग है नई दुनिया। तो बाप जरूर पुराने और नये के संगम पर ही आयेंगे। जब तुम कहाँ भी समझाते हो तो बोलो यह पुरुषोत्तम संगमयुग है, अभी बाप आया हुआ है। ... किसको भी समझाते तो यह जरूर समझाना पड़े कि नई दुनिया के मालिक यह लक्ष्मी-नारायण हैं। यह है पूरी निशानी।”

सा.बाबा 17.11.10 रिवा.

“जगदम्बा को भी कोई जानते नहीं हैं। जगदम्बा अर्थात् जगत की माँ और लक्ष्मी है जगत की महारानी। लक्ष्मी को देवी, जगदम्बा को ब्राह्मणी कहेंगे। ब्राह्मण संगम पर ही होते हैं। इस संगमयुग को भी कोई नहीं जानते हैं। परमपिता परमात्मा, प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई पुरुषोत्तम सृष्टि रचते हैं। इस समय तुम ब्राह्मण गायन लायक बनते हो क्योंकि सेवा कर रहे हो, फिर तुम बनेंगे पूजन लायक।”

सा.बाबा 27.10.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और सृष्टि-चक्र की आयु

सारे विश्व में आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी कितने समय की है, यह भी कोई नहीं जानता, जो परमात्मा ही आकर बताते हैं। विभिन्न धर्म वाले और साइन्स वाले तो सृष्टि की आयु लाखों-करोड़ों वर्ष बताते हैं। भारत के धर्म-शास्त्रों में भी कल्प की आयु लाखों वर्ष बताई हुई है। परन्तु इस सबका सत्यापन करने की कोई कसौटी नहीं है और न ही यह सब बौद्धिक स्तर पर तर्क-संगत नहीं लगता है क्योंकि उसके बीच में अनेक प्रकार विरोधाभास (Contradictions) हैं। वास्तविकता को देखा जाये तो इस सृष्टि की आयु करोड़ों वर्ष कह सकते हैं क्योंकि यह सृष्टि अनादि-अविनाशी है परन्तु सृष्टि-चक्र की आयु अवश्य है, जो 5 हजार वर्ष है, जो ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी आकर बताया है और यह भी ज्ञान दिया है कि इसकी कलम लगती है। जो तर्क-संगत भी और इसमें कोई विरोधाभास भी नहीं है। इसका प्रमाण शास्त्रों में भी दिखाया है। महाप्रलय के समय सप्त ऋषि, मनु और सत्यरूपा के बचने का वृतान्त है, जिनसे सृष्टि की वृद्धि हुई।

“बुलाते हैं - हे पतित-पावन आकर हमको पावन बनाओ। बाप कहते हैं - हर 5000 वर्ष बाद इस सृष्टि की सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। पुरानी दुनिया सो नई बनती है, इसके लिए मुझे आना पड़ता है। कल्प-कल्प मैं आकर तुम बच्चों को ऊंच ते ऊंच बनाता हूँ। पावन को ऊंच, पतित को नीच कहा जाता है। मैं हूँ पतित-पावन।”

सा.बाबा 11.11.10 रिवा.

”कहते भी हैं - क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत में आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, अभी 5 हजार वर्ष पूरे हो जाते हैं, अब यह नाटक पूरा होता है। इन बातों को और कोई जानते नहीं है। ... अभी यह है गीता एपीसोड। बाप ने आकर सहज राजयोग सिखाया था, अभी फिर सिखा रहे हैं। ये बड़ी गुप्त बातें हैं।”

सा.बाबा 30.06.11 रिवा.

”पाँच हजार वर्ष के बाद हिस्ट्री रिपीट होती है, तुमको राजाई मिलती है। बाकी और सब आत्मायें शान्तिधाम चली जाती हैं। ... अभी तुमको बाप मिला है और तुम सारे सृष्टि-चक्र को जानते हो तो तुमको खुशी में गद्गद होना चाहिए। ... गॉड फादर ही है नॉलेजफुल। उनको ही यह नॉलेज है कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है।”

सा.बाबा 11.08.10 रिवा.

”ये सब बातें बेहद के बाप हम बच्चों को समझाते हैं। बाप परमधाम का रहने वाला नॉलेजफुल है, जो हमको सुखधाम का वर्सा देते हैं।... ज्ञान सागर बाप इस शरीर द्वारा हमको वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। न्यु वर्ल्ड से ओल्ड वर्ल्ड कैसे होती है, न्यु वर्ल्ड को ओल्ड वर्ल्ड होने में कितना समय लगता है, वह सब बाप समझाते हैं।”

सा.बाबा 9.01.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी / सृष्टि-चक्र के तीनों कालों की हिस्ट्री-जॉग्राफी / तीन लोकों की हिस्ट्री-जॉग्राफी / चारों युगों की हिस्ट्री-जाग्राफी

इस सृष्टि का खेल चक्रवत् चलता है अर्थात् इसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्रवत् चलती है अर्थात् हर पाँच हजार वर्ष के बाद हू-ब-हू पुनरावृत्त होती है। बाबा ने अभी इस सृष्टि-चक्र के तीनों कालों अर्थात् भूतकाल, वर्तमान और भविष्य की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान दिया है। बाबा ने तीनों लोकों के विषय में भी बताया है। वैसे तो बाबा ने कहा है कि मूलवतन और

सूक्ष्मवतन की कोई हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं होती है। परन्तु वास्तविकता को देखा जाये तो परमधाम में किसी समय बहुत आत्मायें होती हैं और किसी समय कम आत्मायें होती हैं क्योंकि वे सब इस धरा पर पार्ट बजाने आ जाती हैं। सूक्ष्म वतन में भी कुछ पार्ट चलता है, जैसे ब्रह्मा बाबा अभी सूक्ष्मवतन से अपना सेवा का पार्ट बजा रहा है। परन्तु हम समझते हैं बाबा के यह कहने का अर्थ है कि एक तो परमधाम में शरीर नहीं होता, इसलिए कोई पार्ट नहीं चलता है और शरीर न होने से आत्माओं को कोई सुख या दुख की बात नहीं होती है। इसलिए बाबा ने कहा है कि परमधाम की कोई हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं होती है।

सूक्ष्म वतन में पार्ट संगमयुग पर ही चलता है, वहाँ भी आत्माओं के सुख-दुख, कर्म और फल का कोई हिसाब-किताब नहीं चलता, इसलिए बाबा ने कहा है कि सूक्ष्मवतन की कोई हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं होती है। जब सूक्ष्मवतन है तो सौरमण्डल के परिवर्तन का प्रभाव तो वहाँ भी अवश्य होना ही चाहिए। परमधाम वापस जाते समय सूक्ष्मवतन तक आत्माओं का सूक्ष्म शरीर होता है, जो सूक्ष्मवतन से पार होते-होते मर्ज हो जाता है।

सृष्टि-चक्र के चारो युगों की क्या हिस्ट्री-जॉग्राफी है, उसके विषय में भी बाबा ने ज्ञान दिया है। सतयुग में एक धर्म, एक भाषा, एक चक्रवर्ती राजाई, एक ही खण्ड होता है, सदाबहार मौसम होता है। कलियुग के अन्त में अनेक देश, धर्म, भाषायें हैं, जिसके कारण परस्पर अनेक प्रकार झगड़े हैं, युद्धादि भी होते रहते हैं। कलियुग के अन्त अर्थात् कल्पान्त में जो परिवर्तन होता है, भूकम्प, महाभारत लड़ाई आदि होती है, उससे विश्व की चढ़ती कला होती है। त्रेता के अन्त और द्वापर आदि में जो भूकम्प आदि होते हैं, उससे दैवी सभ्यता का अन्त होता है और आसुरी सभ्यता अर्थात् देहाभिमानी सभ्यता की आदि होती है। इसका विस्तार ऊपर वर्णन किया गया है।

"तुम समझते हो - हमने 84 जन्मों का पार्ट बजाया। पहले हम सूर्यवंशी राजा-प्रजा थे, फिर चन्द्रवंशी बनें, फिर वैश्यवंशी, शूद्रवंशी बनें। अब फिर से हमको सूर्यवंशी बनना है। अभी हम हैं ब्राह्मणवंशी। अभी तुम बच्चे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। तुम कितने सौभाग्यशाली हो। ... सबको यह समझाना है कि सर्व का सद्गतिदाता एक बाप है।"

सा.बाबा 25.06.11 रिवा.

"बाप आकर आत्माओं को सतोप्रधान बनाते हैं, फिर पुनर्जन्म लेकर तमोप्रधान बनना ही है, फिर बाप को आकर सतो बनाना पड़ता है। सारी दुनिया को सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना है।... अभी तुम जानते हो कि यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है। हमारा चारो युगों में पार्ट चलता है। सूर्यवंशी से चन्द्रवंशी, ... शूद्र वर्ण में आते हैं।"

सा.बाबा 14.06.11 रिवा.

"अभी बाप आये हैं पुरानी दुनिया को नया बनाने। अब यह पुरानी दुनिया खलास होनी है। सतयुग के बाद त्रेता, द्वापर, कलियुग फिर सतयुग जरूर आना है। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होनी है। सतयुग में होता है देवी-देवताओं का राज्य।... सतयुग में लक्ष्मी-नारायण की और त्रेता में राम-सीता की डॉयनेस्टी चलती है। फिर द्वापर से और धर्म आते हैं।"

सा.बाबा 5.02.11 रिवा.

"सेकण्ड में सारे ड्रामा का ज्ञान बुद्धि में आ जाता है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन, 84 का चक्र बस। यह सारा नाटक भारत पर ही बना हुआ है।... भारत अभी रंक भिखारी है, प्रजा का प्रजा पर राज्य है। ससतयुग में इसी भारत में डबल सिरताज महाराजा-महारानी का राज्य था। (Q.सेकण्ड में सारा ड्रामा कैसे बुद्धि में आ जायेगा? संकल्प करते ही झाड़, त्रिमूर्ति, चक्र बुद्धि के सामने आ जाता है, जिससे सेकण्ड में सारा ज्ञान बुद्धि में इमर्ज हो जाता है।)"

सा.बाबा 17.06.10 रिवा.

"पुरानी दुनिया पूरी होने वाली है, नई दुनिया की स्थापना हो रही है। नई दुनिया सो पुरानी और पुरानी सो नई कैसे बनती है, वह बाप अभी बताते हैं। इसको दुनिया का चक्र कहा जाता है, जो फिरता रहता है।... अभी नाटक पूरा होता है, सबको वापस घर चलना है, हम फिर से सतयुग में आयेंगे, फिर 84 जन्मों का चक्र लगायेंगे।"

सा.बाबा 28.05.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और त्रिलोक

बाबा तीनों लोकों और तीनों कालों का ज्ञान देते हैं अर्थात् तीनों लोकों में तीनों कालों में क्या क्रिया कलाप चलते हैं, वह सब ज्ञान बाबा अभी आकर देते हैं, जिस ज्ञान के आधार पर इस सृष्टि-चक्र का परिवर्तन करते हैं। सुख-दुख, कर्म और फल का खेल इस धरा पर चलता है परन्तु उससे तीनों लोक प्रभावित होते हैं अर्थात् तीनों लोकों का इस खेल से सम्बन्ध है।

"ज्ञान में मेहनत नहीं है। सृष्टि-चक्र को जानना, यह है हिस्ट्री-जॉग्राफी। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो इस मनुष्य सृष्टि में ही होती है। मूलवतन, सूक्ष्मवतन में कोई हिस्ट्री-जॉग्राफी नहीं है। ... अभी तुम बच्चों को ज्ञान मिला है कि हम आत्मा शान्तिधाम में रहने वाली हैं। ये

आरगन्स यहाँ कर्म करने के लिए मिले हैं।"

सा.बाबा 20.05.11 रिवा.

"बाप ने ये चित्र बनवाये हैं, इनसे तुम कोई को भी समझा सकते हो। सूर्यवंशियों ने यह राजधानी कहाँ से ली, फिर चन्द्रवंशियों ने कैसे राजाई ली ?... सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी तो विश्व के मालिक थे, उस समय कोई दूसरा धर्म ही नहीं होता है, इसलिए लड़ाई की कोई बात नहीं। ... ऐसे नहीं कि सूर्यवंशियों से चन्द्रवंशियों का युद्ध चला और उन्होंने जीतकर राजाई ली।"

सा.बाबा 31.05.11 रिवा.

"परमधाम में हम आत्मायें कितनी जगह लेंगी ? बहुत थोड़ी। बच्चों को ये सब बातें बाप से सुनने का सौभाग्य अभी ही मिलता है। बाप ही बतलाते हैं कि तुम घर से नंगे आये थे, फिर शरीर धारण का पार्ट बजाया, अब फिर जीते जी मरना है, सबको भूलना है। बाप ही आकर जीते जी मरना सिखाते हैं। ... बाप को याद करने से पाप नाश होंगे और आत्मा तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेगी।"

सा.बाबा 16.04.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आनी चाहिए। ऊंच ते ऊंच सर्व आत्माओं का बाप मूलवतन में रहते हैं। फिर है सूक्ष्मवतन। यह है स्थूलवतन। ... यह चक्र फिरता रहता है। सतयुग से त्रेता, फिर द्वापर, कलियुग में आना पड़े। 84 जन्मों का पार्ट तुम बच्चे ही बजाते हो। मैं तो इस चक्र में आता नहीं हूँ।"

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

"हम आत्मायें असुल में निराकारी दुनिया में रहती हैं। यहाँ आये हैं पार्ट बजाने। ड्रामा अनुसार हर एक एक्टर नम्बरवार अपने-अपने समय पर आकर पार्ट बजायेंगे। सब एक साथ तो आ न सकें। ... बाप आते हैं, परन्तु ऐसे नहीं कहेंगे कि मैं कृष्ण के तन में आता हूँ। नहीं, कृष्ण की आत्मा ने 84 जन्म लिये हैं, उनकी आत्मा के बहुत जन्मों के अन्त का यह जन्म है, उसमें आता हूँ।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"यह सृष्टि एक नाटक है, इसमें ब्रह्माण्ड और सूक्ष्मवतन भी आ जाता है। सृष्टि का चक्र यहाँ फिरता है। युगादि यहाँ है, सूक्ष्मवतन या मूलवतन में नहीं होते हैं। ... अभी यह साकारी सृष्टि कितनी बड़ी है, सतयुग में कितनी छोटी होती है। वहाँ है ही एक धर्म। नई दुनिया की स्थापना और पुरानी पतित दुनिया का विनाश गाया हुआ है।"

सा.बाबा 23.06.11 रिवा.

"नॉलेज को सोर्स ऑफ इन्कम कहा जाता है। ज्ञान है नॉलेज, योग है याद। ... सतयुग की स्थापना करने वाला है शिवबाबा, वह करनकरावनहार है। शिवबाबा इन द्वारा कराते हैं। ...

इस सृष्टि का ही चक्र है, जो फिरता रहता है। सूक्ष्मवतन का चक्र नहीं गाया जाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट कहते हैं, वह यहाँ के लिए कहते हैं।”

सा.बाबा 3.01.11 रिवा.

“वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। कैसे रिपीट होती है, यह तुम बच्चे अभी जानते हो। ... तुम्हारी बुद्धि में मूलवतन का आत्माओं का झाड़ भी है। वहाँ सब धर्म की आत्माओं का अपना-अपना अलग सेक्शन है। ... आत्मायें परमधाम में रहती हैं। आत्मा अविनाशी है, उसमें सारा पार्ट अविनाशी नूँधा हुआ है, जो रिपीट होता रहता है।”

सा.बाबा 7.07.11 रिवा.

“अभी तुम्हारी बुद्धि में ऊंच ते ऊंच बाप है। बाप का शुक्रिया है, जिसने सारा ज्ञान सुनाया है। एक है आत्माओं का झाड़, दूसरा है मनुष्यात्माओं का झाड़। मनुष्यों के झाड़ में ऊपर में कौन है? ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फादर ब्रह्मा को ही कहेंगे। ... मनुष्य ही पवित्र बन फरिश्ता बनते हैं, इसलिए सूक्ष्मवतन दिखाया है।”

सा.बाबा 28.05.10 रिवा.

“अभी तुम जानते हो - हमको घर जाने का रास्ता मिला है। हम घर जाकर फिर अपनी राजधानी में आयेंगे। ... भारत स्वर्ग था, हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म वाले थे। देवी-देवता धर्म बहुत सुख देने वाला है, भारत जैसा सुख कोई भी पा नहीं सकता। कितना भी प्रयत्न करे, और कोई धर्म वाला तो स्वर्ग में जा ही नहीं सकता।”

सा.बाबा 15.07.11 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और प्रकृति / सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और अनादि-अविनाशी नियम और सिद्धान्त

सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को विचार करें तो देखेंगे कि सारी प्रकृति मनुष्यों के कर्म-संस्कारों पर आधारित है अर्थात् जैसे मनुष्यों के कर्म-संस्कार होते हैं, उस अनुसार प्रकृति में परिवर्तन होता है और प्रकृति मनुष्यों के कर्म-संस्कारों के अनुसार उनको फल देती है।

इस सृष्टि का सारा खेल चक्रवत् चलता है। मनुष्यों के कर्म-संस्कारों अनुसार फल देने के लिए प्राकृतिक परिवर्तन होते हैं और विश्व-नाटक के विधि-विधान अनुसार आत्माओं के कर्म-संस्कार परिवर्तन होते हैं, जिन परिवर्तनों को करने के लिए आत्मायें बाध्य होती हैं।

"लोग तो प्रकृति की हलचल देखकर डरते हैं कि कल क्या होगा, लेकिन आप जानते हो कि अच्छे ते अच्छा होगा क्योंकि अभी यह संगमयुग सृष्टि-चक्र का अमृतवेला चल रहा है। अमृतवेले के बाद क्या होता है, सवेरा। ... आपको खुशी है कि अभी हमारा राज्य सुखमय संसार, जहाँ प्रकृति भी सुखमई है, वह राज्य आया कि आया। खुशी है ना!"

अ.बापदादा 31.04.11

"विचार करो - भारत में सतयुग में कितना अथाह धन था, जो मुसलमान और क्रिश्चियन लूटकर अपने देश में ले गये। तुम्हारा क्रिश्चियन्स से बहुत कनेक्शन है। ... सतयुग में सब खानियाँ भरतू हो जायेंगी। अभी तो सब खानियाँ खाली होती जा रही हैं। फिर जब चक्र रिपीट होगा तो सब खानियाँ भरतू हो जायेंगी। अभी तुम श्रीमत पर रावण पर जीत पाकर राजाई ले रहे हो। फिर आधा कल्प बाद राजाई गँवा बैठोगे।"

सा.बाबा 17.03.11 रिवा.

"लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता की डायनेस्टी कैसे चलती है, फिर उनसे राजाई कौन छीनते हैं, वह स्वर्ग कहाँ गया। जब स्वर्ग खत्म होता है, उस समय भी अर्थ-क्वेक आदि होती है, जिसमें हीरे जवाहरातों के महल आदि नीचे चले जाते हैं। सोमनाथ आदि मन्दिर तो बाद में बनें। ... जब नर्क खत्म होता है, नये कल्प की आदि होती है, तो भी अर्थ-क्वेक आदि होती है, जिसमें नर्क खत्म हो जाता है।"

सा.बाबा 10.03.11 रिवा.

"अभी थोड़ा टाइम पड़ा है, इसलिए बाप पुरुषार्थ कराते रहते हैं। विनाश में सबसे जास्ती काम

प्राकृतिक आपदायें करेंगी। धरती हिलेगी, अर्थक्वेक होगा, जिसमें सब मकान आदि गिर पड़ेंगे। ... समय ऐसा आयेगा, जो तुम घर से बाहर भी नहीं निकल सकेंगे। घर में ही बाप को याद करते-करते शरीर छोड़ देंगे। पुरुषार्थ ऐसा करना है, जो अन्त में एक बाप की ही याद रहे।" सा.बाबा 26.02.11 रिवा.

"सतयुग में धरती का कोई मूल्य नहीं होता, जिसको जितना चाहिए, ले लेवे। वहाँ मीठी नदियों के किनारे तुम्हारे महल होंगे, मनुष्य बहुत थोड़े होंगे, प्रकृति दासी होगी। ... तुम जानते हो हमको पावन से पतित बनने में 5000 वर्ष लगते हैं, अभी फिर फट से बाबा पतित से पावन बनाते हैं। सेकण्ड में जीवनमुक्ति मिल जाती है।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"अभी सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। सतयुग में हर चीज़ सतोप्रधान होती है। वहाँ इतने सब पंक्षी आदि नहीं होंगे। वहाँ कोई छी-छी चीज़ रह न सके। ... सतयुग में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं, मीठी नदियों के किनारे रहते हैं। पहले झाड़ छोटा होता है, फिर वृद्धि को पाता है। ... वहाँ पाँच तत्व भी देवताओं के गुलाम बन जाते हैं। सब कायदे अनुसार चलते हैं।" सा.बाबा 28.06.11 रिवा.

"ज्यादा धन का लोभ भी नहीं रखना है। अन्त समय दुख के पहाड़ गिरने हैं, सारी मिल्कियत सेकेण्ड में खलास हो जायेगी। बाप से तुमको सेकण्ड में वर्सा मिलता है। ... लड़ाई लगेगी, नेचुरल केलेमिटीज़ भी होगी। सारी पुरानी दुनिया की सफाई तो होगी ना। अभी तुम बच्चों को बाप द्वारा अविनाशी ज्ञान रत्न मिल रहे हैं, तुम्हारी ज्ञान रत्नों से झोली भर रही है। ज्ञान का एक-एक रत्न बहुत वेल्युएबुल है।" सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और विभिन्न धर्म एवं सभ्यतायें

ये सारा खेल धर्म और कर्म पर आधारित है। ये सारा सृष्टि-चक्र एक वृक्ष है, जिसको कल्प-वृक्ष के रूप में जाना जाता है। इसमें विभिन्न धर्म-मठ-पन्थ हैं, उनके धर्म-पितायें हैं, जो अपने समय पर आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं और समयान्तर में उस धर्म की राजाई भी चलती है। हर धर्म-मठ-पन्थ की अपनी आत्मायें हैं, जो अपने समय पर उस धर्म में आकर अपना पार्ट बजाती हैं।

बाबा ने अभी हमको डबल सोल के पार्ट का भी ज्ञान दिया है कि कैसे आदि सनातन

धर्म इस कल्प-वृक्ष का तना है और सभी धर्म-मठ-पन्थ इस तने से निकलते हैं। जब आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मायें वाम मार्ग में चली जाती हैं, तो विभिन्न धर्म-पितायें अपने समय पर इस धरा पर आकर अपना धर्म स्थापन करते हैं, उसके लिए उस धर्म के स्थापक की आत्मा, वाम मार्ग में गये आदि सनातन देवी-देवता धर्म की आत्मा के तन में प्रवेश होकर अपना धर्म स्थापन करती है और पहले वाम मार्ग में गई हुई आदि सनातन देवी-देवता घराने की आत्मायें ही उस धर्म में परिवर्तन होकर उस धर्म की वृद्धि में निमित्त बनती हैं।

अन्त समय सभी धर्म वंश की आत्मायें अपने मूल धर्म में परिवर्तन होकर, पावन बनकर परमधाम घर वापस जाती हैं।

सभी धर्मवंश की आत्माओं की संख्या निश्चित है, यह ज्ञान भी संगम पर ही परमात्मा के द्वारा मिलता है।

जैसे इस जगत में विभिन्न धर्मों के संगठन हैं, वैसे ही परमधाम में आत्मायें के भी अपने-अपने संगठन होते हैं। विश्व रंगमंच पर नजर डालें तो देखते हैं पश्चिम में क्रिश्चियन धर्म का विस्तार है। उत्तरी अफ्रीका, दक्षिण-पश्चिम एशिया में मुस्लिम धर्म का विस्तार है, पूर्व और उत्तर एशिया में बौध धर्म का विशेष विस्तार है। भारत और भारत के आसपास आदि सनातन देवी-देवता धर्म, जो वाम मार्ग में जाने के बाद अपने को हिन्दू कहलाते हैं, उनकी संख्या अधिक है।

त्रेता के अन्त तक तो आदि सनातन देवी-देवता धर्म का विस्तार सारे दक्षिण एशिया, उत्तर अफ्रीका, दक्षिण योरोप तक था, जो विभिन्न धर्मों और राज्यों की स्थापना के बाद संकुचित होता गया।

ऐसे ही परमधाम में भी आत्माओं के संगठन हैं, परन्तु जैसे इस विश्व में सब धर्मों की मिश्रित आत्मायें भी हैं, वैसे संस्कारों और स्वभाव के आधार पर परमधाम में भी संगठन भी होंगे और मिश्रित भी अवश्य होंगी।

"वे कहते भी हैं कि क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले भारत पैराडाइज़ था। इस्लामियों के पहले चन्द्रवंशी थे, उनके आगे सूर्यवंशी थे। ... गीता से परमपिता परमात्मा ने देवी-देवता धर्म की स्थापना की, जो सतयुग-त्रेता तक चला। जरूर संगम पर ही बाप ने आकर स्थापन किया होगा। फिर आधा कल्प तक न कोई शास्त्र था और न कोई धर्म स्थापन हुआ।"

सा.बाबा 11.04.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - तुम मूँझो मत। कल्प-कल्प तुम भारतवासी ही स्वर्ग के मालिक बनते हो, और धर्म वाले तो बैकुण्ठ में आ नहीं सकते। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है, जो फिरता रहता

है। कब बना, यह कह नहीं सकते। इसकी आदि-अन्त नहीं है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती रहती है। अभी यह है संगमयुग, छोटा सा। चोटी है ब्राह्मणों की। संगमयुग पर ही ब्राह्मण होते हैं।"

सा.बाबा 24.03.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - अभी सारी दुनिया में रावण राज्य है। पहले रामराज्य था, अब रावण राज्य है। ... तुम भारतवासी आदि सनातन देवी-देवता धर्म के हो, हिन्दू धर्म के नहीं। तुम ही पहले-पहले भारत में राज्य करते थे। तुमको वह सतयुग का राज्य किसने दिया, वह कोई नहीं जानते हैं। जरूर हेविनली गॉड फादर ने ही वह वर्सा दिया होगा।"

सा.बाबा 17.03.11 रिवा.

"वास्तव में तुम देवी-देवी देवता धर्म के थे, परन्तु विकारी बनने के कारण अपने को देवी-देवता कह नहीं सकते। ... तुमको तो पहले से ही राजाई मिलती है, दूसरे धर्म वालों की बाद में राजाई होती है, जब बहुत जाते हैं। ये सब ज्ञान की बातें हैं। ... आधा कल्प तुम देहाभिमानी रहे हो, अभी देही-अभिमानी बनो। याद से ही आत्मा की कट निकलेगी।"

सा.बाबा 17.03.11 रिवा.

"तुम देवी-देवता धर्म वाले ही पहले आये हो, और सब धर्म वाले तो बाद में आते हैं। गाते भी हैं - आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल ... सारा झाड़ अर्थात् सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, वह बाप आकर समझाते हैं। जो धारणा करते हैं, उनके लिए तो बहुत सहज है। आत्मा ही धारण करती है, आत्मा ही पुण्यात्मा और पापात्मा बनती है।"

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

"लक्ष्मी-नारायण की राजधानी में जो ताकत थी, वह पुनर्जन्म लेते-लेते कम हो जाती है। अभी आत्माओं में वह ताकत नहीं है। ... यह दुनिया वैरायटी धर्मों का झाड़ है, सो सब मिलकर एक कैसे हो सकते हैं। पहले-पहले भारत में एक धर्म था, उसको कहा जाता है अद्वेत मत वाले देवी-देवतायें। ... अभी तुम्हारा यह बहुत जन्मों के अन्त का जन्म है। तुम सब हो पण्डे अर्थात् पाण्डव सेना।"

सा.बाबा 9.03.11 रिवा.

"भारत का धर्म आदि सनातन देवी-देवता है। अगर नया धर्म कहें तो ब्राह्मण धर्म को ही पहले कहेंगे। पहले चोटी है ब्राह्मण, फिर हैं देवतायें। ऊंच ते ऊंच ब्राह्मण धर्म है, जो परमपिता परमात्मा ब्रह्मा और ब्राह्मणों के द्वारा रचते हैं। ब्राह्मण ही देवता बनते हैं। ... बाबा पहले शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं, फिर ब्राह्मण वर्ण से दैवी वर्ण में जाते हो।"

सा.बाबा 6.03.11 रिवा.

"देवी-देवताओं के हीरे-जवाहरात के महल थे। और किसी धर्म वालों के हीरे-जवाहरातों के

महल थोड़ेही होंगे। तुम बच्चों को जिस बाप ने इतना ऊंच बनाया, उसकी तुमने कितनी इज़्ज़त रखी, जो सोमनाथ का इतना आलीशान मन्दिर बनाया। (भक्ति मार्ग में भी मन्दिर देवी-देवताओं के ही बनते हैं।) ... बाप तुमको राजयोग की शिक्षा देते हैं। पढ़ाई से कमाई होती है।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"जो देवी-देवता धर्म के होंगे, देवी-देवता बनें होंगे, वे एकदम इस ज्ञान को सुनते ही चटक जायेंगे। और धर्मों की हिस्ट्री बहुत छोटी है। ... तुम्हारी हिस्ट्री है 5 हजार वर्ष की। देवी-देवता धर्म वाले ही स्वर्ग में आयेंगे, और सब धर्म तो बाद में आते हैं। देवी-देवता धर्म वाले भी और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, ड्रामा अनुसार। फिर भी कन्वर्ट होंगे, फिर अपने-अपने धर्म में लौटकर आ जायेंगे।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"देवी-देवता धर्म वाले अनेक और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं, अपने को हिन्दू धर्म का कह देते हैं। वास्तव में हिन्दू धर्म कह नहीं सकते। परन्तु पतित होने के कारण अपने को देवी-देवता कहलाना शोभता नहीं है। ... यह आत्माओं और परमात्मा का मेला है। ब्रह्मा द्वारा एडॉप्शन कैसे होती है, ये बड़ी गुह्य बातें समझने की हैं, जो प्राय: लोप हो जाती हैं।"

सा.बाबा 24.01.11 रिवा.

"सारे कल्प-वृक्ष का फाउण्डेशन है देवी-देवता घराना। वह अभी संगम पर स्थापन होता है। पहले-पहले तो एक ब्रह्मा था, फिर ब्रह्मा की एडॉप्टेड सन्तान ब्राह्मण वृद्धि को पाते हैं। पहले एक ब्रह्मा ही था, उस एक से कितनी वृद्धि हुई है और कितनी होने की है। जितने सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी देवतायें थे, उतने सब बनने हैं। ... शिवबाबा तो हम सब आत्माओं का अनादि बाप है।"

सा.बाबा 15.01.11 रिवा.

"सब आत्मायें भिन्न नाम-रूप से अपने बेहद के बाप को याद करती हैं, शान्ति माँगती हैं, परन्तु उन बेचारों को बाप का पता नहीं है।... जब इन देवताओं का राज्य था, तो विश्व एक राज्य, एक धर्म था। और कोई खण्ड नहीं था। उस समय विश्व में शान्ति थी। और कोई खण्ड में ऐसे नहीं कहते कि एक धर्म, एक राज्य हो। भारत में ही कहते हैं।"

सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

"अभी तुम जानते हो कौन-कौन धर्म कब और कैसे आते रहते हैं। हिस्ट्री पुरानी, फिर नई होती है। अभी यह है पतित दुनिया, वह है पावन दुनिया। ... कल्प-कल्प तुम घर जाते हो, फिर सुख का पार्ट बजाने के लिए आते हो। ... आगे चलकर विलायत वालों को भी मालूम पड़ेगा कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, इसकी आयु कितनी है।"

सा.बाबा 9.08.10 रिवा.

"अभी तुम जानते हो कौन-कौन धर्म कब और कैसे आते रहते हैं। हिस्ट्री पुरानी, फिर नई होती है। अभी यह है पतित दुनिया, वह है पावन दुनिया। ... कल्प-कल्प तुम घर जाते हो, फिर सुख का पार्ट बजाने के लिए आते हो। ... आगे चलकर विलायत वालों को भी मालूम पड़ेगा कि यह सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है, इसकी आयु कितनी है।"

सा.बाबा 9.08.10 रिवा.

"अभी सारे सृष्टि-चक्र का राज़ तुम्हारी बुद्धि में है। जो पढ़े-लिखे हैं, उनको डिटेल में समझाना होता है। जो अनन्य समझदार बच्चे हैं, उनको ख्याल करना पड़े।... देवी-देवता धर्म वालों को 5 हजार वर्ष हुए हैं, उनकी संख्या बहुत होनी चाहिए। परन्तु देवी-देवता धर्म वाले और-और धर्मों में कन्वर्ट हो गये हैं। ... झाड़ के पिछाड़ी में छोटे-छोटे टाल-टालियाँ पत्ते निकलते हैं। नयों का थोड़ा मान होता है।" सा.बाबा 29.06.11 रिवा.

"अभी तुम संगम पर हो। यह तो निश्चय है ना। निश्चयबुद्धि ही यहाँ आते हैं और समझते हैं कि बाबा हमको फिर से सुखधाम का मालिक बनाते हैं।... 84 जन्मों का हिसाब भी पूरा है ना। कौन-कौन कितने जन्म लेते हैं। जो धर्म बाद में आते हैं तो जरूर उनके जन्म भी थोड़े होते हैं। तुम बच्चों को यह पक्का निश्चय रखना है कि हम ईश्वरीय औलाद हैं।"

सा.बाबा 4.06.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और विभिन्न राज-सत्तायें / सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और दैवी राज्य की स्थापना

यह सृष्टि-चक्र सतत् परिवर्तनशील है, इसलिए इसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी निरन्तर परिवर्तन होती है। समय-समय पर संसार में विभिन्न धर्म स्थापन होते हैं, उनकी राज-सत्ता चलती है, जो भी समयान्तर में परिवर्तन होती रहती है। विश्व में आधा कल्प तक देवी-देवताओं की राज-सत्ता विश्व में चलती है, उसमें भी परिवर्तन होता रहता है, राजायें बदलते हैं, विश्व में भौगोलिक परिवतन होते हैं। सतयुग में पवित्र राजायें होते हैं, जिनके हाथ में धर्म-सत्ता और राज-सत्ता दोनों होती है, इसलिए उनको डबल ताजधारी कहा जाता है, उनकी मन्दिरों में पूजा होती है। त्रेता के बाद देवताओं के वाम मार्ग में जाने से धर्म-सत्ता और राज-सत्ता दो भागों में विभाजित हो जाती है। फिर भारत में एक रतनजड़ित ताजधारी राजाओं की सत्ता चलती

है। द्वापर के बाद जब अन्य धर्म आते हैं तो जो एकक्षत्र चक्रवर्ती राजाई थी, एक धर्म, एक देश था, वह विभाजित होकर अनेक देश और राज-सत्तायें हो जाती हैं।

"शिवबाबा आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। तो ऐसे नहीं कि नये सिर स्थापना करते हैं। जैसे शास्त्रों में दिखाते हैं कि प्रलय हुई, फिर पत्ते पर सागर में ... ऐसे है नहीं। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जाग्राफी रिपीट होती है। आत्मा अविनाशी है, उसमें पार्ट भी अविनाशी है। जो कभी घिसता नहीं है।" सा.बाबा 8.03.11 रिवा.

Q.अब प्रश्न उठता है कि भारत में वह दैवी राज्य कब, किसने और कैसे स्थापन किया? कलियुग के अन्त में प्राय: सभी देशों में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था है, ऐसे समय पर ही ज्ञान सागर परमात्मा आकर विश्व में दैवी राज्य की स्थापना सहज ज्ञान और सहज राजयोग के द्वारा करते हैं, जिससे विश्व में पुन: राज-तन्त्र अर्थात राजाई की स्थापना होती है। परन्तु वह दैवी राज्य की स्थापना स्थूल में कब से और किसके द्वारा स्थापन होगी, यह विचारणीय बात है अर्थात् विश्व में पुन: राजाई की स्थापना श्रीकृष्ण के द्वारा होगी या श्रीकृष्ण के बाप के द्वारा होगी, जहाँ श्रीकृष्ण का जन्म होगा।

"भारत में देवी-देवताओं का राज्य था। उन्हों को यह राजाई कैसे मिली, कब मिली, यह किसको भी पता नहीं है।... तुम भारतवासी देवी-देवता थे। देवी-देवताओं के चित्र तो हैं ना। अगर चित्र नहीं होते तो यह भी नहीं समझ सकते थे।... यह सब बातें बाप ही आकर समझाते हैं, फिर तुम कोई को भी समझा सकते हो। उनको कह सकते हो - ये बातें निराकार बाबा हमको समझाते हैं।" सा.बाबा 11.05.11 रिवा.

"प्रदर्शनी में यह भी समझाना है कि हम अपनी कमाई से, अपने ही तन-मन-धन से अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। हम कोई से भीख नहीं माँगते हैं, जरूरत ही नहीं है। सभी भाई-बहने इकट्ठे होकर राजधानी स्थापन करते हैं।... हम अपनी पाई-पाई इकट्ठा कर विश्व का मालिक बनते हैं। कितनी वण्डरफुल बात है।" सा.बाबा 12.05.11 रिवा.

"गवर्मेन्ट से तुम्हारी प्रतिज्ञा है कि हम भारत में फिरसे सतयुगी-श्रेष्ठाचारी, 100 प्रतिशत पवित्रता, सुख-शान्ति का दैवी स्वराज्य स्थापन करेंगे। कैसे हम स्वराज्य स्थापन कर रहे हैं, इस विकारी दुनिया का कैसे विनाश होगा, सो आकर समझो।... ऐसा क्लीयर लिखना चाहिए।" सा.बाबा 22.03.11 रिवा.

"संगम पर यह थोड़े समय की मेहनत है, फिर तो प्रकृति भी आपकी दासी होगी और दास-दासियाँ भी बहुत होंगी। फिर आपको सामान उठाने की जरूरत नहीं होगी। अभी अपना राज्य

स्थापन हो रहा है। इस समय गुप्त वेष में हो, सेवाधारी हो, फिर राज्य अधिकारी बनेंगे। ... जितनी अभी तन-मन-धन और सम्पर्क से सेवा करते हो, उतना ही वहाँ सेवाधारी मिलेंगे।”

अ.बापदादा 26.02.95

“बाप आया है - राजधानी स्थापन करने। अभी यह राजधानी स्थापन हो रही है। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब पावन और खुशी में रहेंगे।... बाप ने राजाई दी, फिर वह राजाई कहाँ चली गई ? यह भी तुम जानते हो कि रावण राज्य शुरू होने से पतित बन जाते हैं। ... तुमने 84 जन्मों का चक्र पूरा किया, अब यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है। अब फिर से अपना वर्सा लेना है। तुमको मुक्तिधाम में बैठ नहीं जाना है। तुम्हारा आलराउण्ड पार्ट है।”

सा.बाबा 15.06.11 रिवा.

“हम नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं, तो अन्दर में कितना फखुर रहना चाहिए। ... जब पढ़ाई पूरी हो जाती है, इम्तहान हो जाता है, तब लड़ाई लगती है। तुम्हारी पढ़ाई पूरी हुई तो यह लड़ाई लगेगी। यह है नई दुनिया के लिए नया ज्ञान, इसलिए मनुष्य बेचारे मूँझते हैं।”

सा.बाबा 25.01.11 रिवा.

“तुम विचार करो लक्ष्मी-नारायण की राजधानी क्या होगी, कैसे हीरो-जवाहरातों के महल होंगे। ... वहाँ भी हम अपने मकान आदि बनायेंगे। ऐसे नहीं कि नीचे से द्वारिका निकल आयेगी, जैसे शास्त्रों में दिखाया है। ... भक्ति और ज्ञान दो अलग-अलग चीजें हैं। अब तुमको ज्ञान मिल रहा है, जिससे तुम इमना ऊंच बनते हो। तो जरूर भक्ति का वैराग्य होगा।”

सा.बाबा 17.01.11 रिवा.

“सतयुग से त्रेता में आते हैं तो दो कला कम हो जाती है, तो उनकी क्या महिमा करेंगे। गिरने वालों की महिमा थोड़ेही होती है। ... अभी नई दुनिया स्थापन होनी है, जहाँ देवी-देवताओं का राज्य होता है। वे पुरुषोत्तम थे, वह राज्य पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही स्थापन होता है। ... यह ज्ञान तुम बच्चों की बुद्धि में अच्छी तरह रहना चाहिए, इसलिए तुम स्वदर्शन चक्रधारी बनते हो।”

सा.बाबा 23.11.10 रिवा.

“हर चीज में कॉन्सट्रक्शन और डिस्ट्रक्शन होता है, सतो, रजो, तमो में आती है। बाप नई दुनिया का कॉन्सट्रक्शन कराते हैं, फिर इस पुरानी दुनिया का डिस्ट्रक्शन हो जाता है। पुरानी दुनिया बदलकर नई हो जाती है। यह लक्ष्मी-नारायण नई दुनिया के चिन्ह हैं। ... कलियुग अन्त और सतयुग आदि का यह संगमयुग है। अभी कलियुग बदल कर सतयुग बनता है।”

सा.बाबा 25.11.10 रिवा.

“यह 84 का चक्र फिरता ही रहेगा, इसका अन्त नहीं है। यह भी तुम नम्बरवार पुरुषार्थ

अनुसार ही जानते हो। ... तुम बच्चे जानते हो कि ड्रामा अनुसार अभी बड़ी लड़ाई लग नहीं सकती क्योंकि अभी पूरी राजाई स्थापन हुई नहीं है, होनी जरूर है। जब तक पूरी राजाई स्थापन हो हम भी तैयारी कर रहे हैं और वे भी तैयारी करते रहते हैं।"

सा.बाबा 17.06.10 रिवा.

"तुम बच्चे जानते हो हम आत्माओं का बेहद का बाप इस ब्रह्मा तन में आया हुआ है, ब्रह्मा तन में आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं। कल्प पहले भी आदि सनातन देवी-देवता धर्म अर्थात् सूर्यवंशी राजधानी स्थापन हुई थी। बाप यह स्थापना का कार्य कल्प-कल्प करते हैं। ... अभी हम इस बाबा से फिर से सुखधाम का वर्सा ले रहे हैं।"

सा.बाबा 8.07.11 रिवा.

"यह है हमारी गॉडली स्टूडेण्ट लाइफ। परमात्मा ने जिन स्टूडेण्ट्स को राजयोग सिखाया था, वे राजा-रानी बनें थे। इसमें लड़ाई आदि की बात नहीं है। इन लक्ष्मी-नारायण ने कोई लड़ाई से थोड़ेही यह बादशाही पाई है। ... यह है सारी पढ़ाई की बात। बाबा हमको राजयोग सिखलाते हैं, जिससे हम राजाओं का राजा बनते हैं।"

सा.बाबा 9.07.11 रिवा.

Q.श्रीकृष्ण को उनके माँ-बाप राजसिंहासन पर बिठायेंगे या उनके साथी अर्थात् उनके साथ योगबल से जन्म लेने वाले साथी राजा चुनेंगे और राजसिंहासन पर बिठायेंगे ?

बाबा ने कहा है - जब लक्ष्मी-नरायण गद्दी पर बैंठेंगे अर्थात् श्रीकृष्ण राजसिंहासन पर बैठेगा और 1-1-1 सम्वत् आरम्भ होगा तो पुरानी दुनिया का कोई नहीं होगा। बाबा ने ये भी कहा है कि श्रीकृष्ण के माँ-बाप उनको गद्दी बिठायेंगे। अब प्रश्न उठता है कि श्रीकृष्ण के माँ-बाप पुरानी दुनिया के कहे जायेंगे या नई दुनिया के ? नई दुनिया के और पुरानी दुनिया का निर्णायक बिन्दु क्या है ? एडवान्स पार्टी वाले सब जन्म तो भोगबल से ही लेंगे क्योंकि बाबा ने कहा है - योगबल से जन्म पहले-पहले श्रीकृष्ण का ही होता है।

"श्रीकृष्ण की कितनी महिमा है। उनके माँ-बाप की इतनी महिमा नहीं है। उनके बाप की महिमा क्यों नहीं है, यह भी अभी तुम जानते हो। कृष्ण की आत्मा ने अपने पूर्व जन्म में अच्छी रीति पढ़ाई की, जिस कारण माँ-बाप से भी ऊंच पद पाया है।... अच्छी रीति याद नहीं करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे, फिर धर्मराज की सजायें खानी पड़ेंगी।"

सा.बाबा 7.07.11 रिवा.

"औरों को रास्ता बताने वाले खुद ही भूल जाते हैं। बाप का बनकर कोई पाप कर्म करते हैं तो और ही जास्ती दुर्गति को पा लेते हैं।... यह राजाई स्थापन हो रही है। इसमें फर्क देखो

कितना पड़ जाता है। कोई तो पढ़कर आसमान में चढ़ जाते हैं, कोई पट में पड़ जाते हैं अर्थात् कोई तो महाराजा-महारानी बनते हैं और कोई दास-दासी बन जाते हैं।"

सा.बाबा 23.04.11 रिवा.

"यह लक्ष्मी-नारायण सारे विश्व के मालिक थे, जिनका मन्दिर बनाकर पूजा करते हैं। परन्तु यह कोई जानते नहीं हैं कि इन लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य कैसे लिया। ... तुम बच्चे जानते हो - निराकार बाप अभी रूप बदलकर साकार में आये हैं। जब तक निराकार साकार में न आये तो राजयोग का ज्ञान कैसे सिखाये। बाप कहते हैं मैं इस साधारण तन में टेम्प्रेरी आता हूँ।"

सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

"सतयुग में भारत ही था, और कोई खण्ड नहीं थे। बुद्धि कहती है सतयुग में पहले डीटी डॉयनेस्टी का राज्य होगा, उनके गाँव होंगे, छोटे-छोटे इलाके होंगे। यह भी विचार सागर मन्थन करना होता है, साथ-साथ शिवबाबा के साथ बुद्धि का योग भी लगाना है। हम याद से ही बादशाही लेते हैं। याद से ही आत्मा की कट उतरती है।"

सा.बाबा 16.04.11 रिवा.

"देही-अभिमानी बनने में ही मेहनत है। विश्व के महाराजा-महारानी एक बनते हैं, जिनकी लाखों प्रजा बनती है। प्रजा बनना तो बहुत सहज है। हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना तो सहज है परन्तु जब अपने को आत्मा बिन्दी समझ बाप को याद करेंगे, तब पावन बनेंगे। चक्र के राज़ को जानना सहज है, बाकी देही-अभिमानी हो बाप को याद करना, यह मुश्किल है।"

सा.बाबा 20.04.11 रिवा.

"बाप कहते हैं - मैं कल्प के संगमयुग पर ही आता हूँ, मैं आकर तुमको शूद्र से ब्राह्मण बनाता हूँ, फिर ब्राह्मण ही पढ़कर देवता बनते हैं। फिर तुम 21 जन्म के लिए देवता बन जाते हो। सूर्यवंशी, चन्द्रवंशी राजा-प्रजा देवता तो सब होते हैं, बाकी ऊंच पद पाना, हर एक के पुरुषार्थ पर है। ... अभी तुम जानते हो - अब हमारे 84 जन्म पूरे हुए। अब हमको स्वर्ग में जाना है। पहले मूलवतन में जाकर, फिर स्वर्ग में आयेंगे।"

सा.बाबा 11.04.11 रिवा.

"कृष्ण ने जन्म लिया, बड़े होकर राजधानी चलाई, उसमें महिमा की तो बात ही नहीं। सतयुग-त्रेता में सुख का राज्य चला आया है। वह राज्य कब और कैसे स्थापन हुआ, यह तुम बच्चों की बुद्धि में अभी है, जब बाप ने आकर बताया है। बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ, तुम बच्चों को वर्सा देने।... परन्तु मेरा नाम भूल कर गीता में कृष्ण का नाम डाल दिया है।"

सा.बाबा 7.03.11 रिवा.

"सृष्टि एक ही है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी एक ही है, वह रिपीट होती रहती है। सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग फिर होता है संगमयुग। ... स्थापना, विनाश से पहले होगी, सतयुग में तो स्थापना नहीं होगी। भगवान जरूर पतित दुनिया में आकर सतयुग पावन दुनिया की स्थापना करेगा। ... पावन बनने की सहज युक्ति बाप बताते हैं कि देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध छोड़ देही-अभिमानी बन बाप को याद करो।" सा.बाबा 28.02.11 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और कल्प-वृक्ष, सृष्टि-चक्र, त्रिमूर्ति, लक्ष्मी-नारायण के चित्र

परमपिता परमात्मा आकर सृष्टि-चक्र की सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान देते हैं और विश्व में पुन: राजतन्त्र की स्थापना करते हैं। इस सत्य का ज्ञान सारे विश्व की आत्माओं को देने के लिए बाबा ने झाड़, सृष्टि-चक्र, त्रिमूर्ति, लक्ष्मी-नारायण आदि के चित्र बनवाये हैं और इस ज्ञान को रिलीजियो-पॉलिटीकल हिस्ट्री-जॉग्राफी के रूप में स्पष्ट किया है।

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा ने हमको इस सारे बेहद सृष्टि की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान दिया है, जो कल्प-वृक्ष, सृष्टि-चक्र और त्रिलोक के चित्रों से स्पष्ट समझ में आ जाता है। जिसके लिए बाबा कहते हैं ये चित्र अन्धों के आगे आइना हैं अर्थात् कितनी भी कम बुद्धि वाला हो, वह भी इन चित्रों को देखने से सहज इस ज्ञान को समझ जायेगा। इसलिए बाबा ने इसको "रिलीजियो-पॉलिटीकल हिस्ट्री-जॉग्राफी ऑफ दि वर्ल्ड" की संज्ञा दी है।

"प्रजापिता ब्रह्मा की रचना होती है, फिर वृद्धि होती है। आत्मायें तो अविनाशी हैं, उनकी वृद्धि नहीं कहेंगे। वृद्धि मनुष्यों की होती है। आत्माओं का तो लिमिटड नम्बर है। जब तक परमधाम में आत्मायें हैं, तब तक वहाँ से आते रहेंगे और यह सृष्टि रूपी झाड़ बढ़ता रहेगा। ऐसे नहीं कि सूख जायेगा। बनियन ट्री का झाड़ सारा खड़ा है, फाउण्डेशन है नहीं। तुम्हारा भी ऐसे है। देवी-देवता धर्म का फाउण्डेशन है नहीं। कुछ न कुछ निशानियाँ हैं। मनुष्य देवताओं के मन्दिर बनाते रहते हैं, परन्तु उनको यह पता थोड़ेही है कि उनका राज्य कब था, फिर कहाँ गया? यह नॉलेज तुम ब्राह्मणों को ही है।" सा.बाबा 13.10.10 रिवा.

"अतीन्द्रिय सुख गोप-गोपियों का ही गाया हुआ है। ढेर बच्चे हो जायेंगे। जो भी इस सेपलिंग वाले होंगे, वे आते जायेंगे। झाड़ को बढ़ना ही है। देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। और धर्मों की स्थापना में ऐसा नहीं होता है। उनके धर्म के तो ऊपर से आते हैं। ... यहाँ तो बाप भविष्य देवी-देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। बाप संगमयुग पर आकर नया सेपलिंग लगाते

हैं।" सा.बाबा 15.10.10 रिवा.

"यह खेल सुख और दुख का, हार और जीत का बना हुआ है। इसको तुम ही समझते हो। गाया हुआ है - माया से हारे हार है और माया पर जीत पाने से जीत है। माया पर जीत बाप ही आकर आधा कल्प के लिए पहनाते हैं। फिर आधा कल्प हारना पड़ता है। यह कोई नई बात नहीं है। यह कल्प-कल्प का खेल है।"

सा.बाबा 28.10.10 रिवा.

"अभी सारी सृष्टि रोगी है, बाप आकर सारे विश्व का ऑपरेशन करता है। अविनाशी सर्जन भी बाप का नाम है। ... वह बेहद सृष्टि का ऑपरेशन करने वाला है। सतयुग में मनुष्य तो क्या जानवर भी रोगी नहीं होते हैं। बाप अपना और बच्चों के पार्ट का ज्ञान देते हैं। इसको रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का ज्ञान कहते हैं, जो तुम अभी ले रहे हो। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए।" सा.बाबा 28.10.10 रिवा.

"विनाश होने में भी टाइम लगता है। कितनी बड़ी दुनिया है, कितने ढेर मकान आदि हैं, जो सब गिरकर खत्म होंगे। ... बाकी सतयुग में छोटा झाड़ होगा, देहली परिस्तान बन जायेगी, जहाँ पर लक्ष्मी-नारायण का राज्य चलता है। ... वहाँ तुम कितने थोड़े होंगे। कहाँ इतने करोड़ों मनुष्य, फिर कहाँ 9 लाख होंगे। सबकुछ तुम्हारा होगा। बाप ऐसी राजाई देते हैं, जो हमसे कोई छीन न सके।" सा.बाबा 28.10.10 रिवा.

"अब 84 जन्मों का चक्र पूरा हुआ है, पुरानी दुनिया खलास हो, फिर नई दुनिया होगी। तुम्हारी बुद्धि में है कि कैसे इस झाड़ की वृद्धि होती है। यह राजाई स्थापन हो रही है। सब इकट्ठे थोड़ेही जायेंगे। ब्राह्मणों का झाड़ बहुत बड़ा होगा, फिर थोड़े-थोड़े करके जायेंगे।... थोड़ा भी सुना तो प्रजा में आ जायेंगे।" सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

"अभी तुम जानते हो सबसे जास्ती जन्म जरूर वे लेते हैं, जो पहले-पहले सतयुग में आते हैं। मैक्सीमम 84 जन्म तुम भारतवासियों ने ही लिए हैं, मिनीमम है एक जन्म। ... अभी तुम बता सकते हो कि सतयुग, त्रेता में कौन-कौन राज्य करते थे, जो किसको पता नहीं है। सतयुग में यह लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे, जिनके यह चित्र हैं। उनकी कितना समय राजधानी चली, वह तुम अभी बता सकते हो।" सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"प्राचीन भारत खण्ड ही है, जहाँ देवी-देवताओं का राज्य था, अब नहीं है। अभी उन देवी-देवताओं के मन्दिर हैं, चित्र हैं। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा ज्ञान है। ज्ञान है दिन, भक्ति है रात। बाप आकर रात को दिन बनाते हैं।" सा.बाबा 2.05.11 रिवा.

"आत्माओं का भी झाड़ है। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारे झाड़ का ज्ञान रहता है।

आत्माओं का भी झाड़ है, तो जीवात्माओं का भी झाड़ है। ... मैं आत्मा, इस शरीर से अलग हूँ, यह समझना गोया जीते जी मरना। आप मुये मर गई दुनिया।"

सा.बाबा 26.04.11 रिवा.

"जो बच्चे विचार सागर मन्थन कर ऐसे-ऐसे चित्र बनाते हैं, तो बाबा भी उनकी शुक्रिया करते हैं या तो कहेगे कि बाबा ने उस बच्चे को टच किया है। बच्चों ने सीढ़ी बहुत अच्छी बनाई है। 84 जन्मों को जानने से तुम सारे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। यह है फर्स्ट क्लास चित्र।" सा.बाबा 5.03.11 रिवा.

"अभी नये झाड़ की सेपलिंग लगती है, धीरे-धीरे वृद्धि होती जायेगी। यह छोटे-छोटे मठ-पन्थ आदि इस कल्प वृक्ष की टाल-टालियाँ हैं। उसमें कोई मेहनत थोड़ेही लगती है। नई दुनिया की स्थापना करना मेहनत का काम है। ... गीता है देवी-देवता धर्म का शास्त्र। बाकी जो छोटे-छोटे धर्म, मठ-पंथ हैं, उनका कोई गायन नहीं है। ब्राह्मण हैं सबसे ऊंच, ब्राह्मणों का काम है सबको कथा सुनाना।" सा.बाबा 23.06.11 रिवा.

"रामराज्य और रावण राज्य किसको कहा जाता है, पतित से पावन और फिर पावन से पतित कैसे बनते हैं। इस खेल का राज बाप ही अभी बैठ समझाते हैं। बाप नॉलेजफुल, बीजरूप है। चेतन्य है। वही आकर इस कल्प-वृक्ष का राज़ समझाते हैं। आधा कल्प है दैवी राज्य और आधा कल्प है आसुरी राज्य। जो अच्छे-अच्छे बच्चे हैं, उनकी बुद्धि यह नॉलेज रहती है, वे आप समान भी बनाते हैं ना।" सा.बाबा 28.01.11 रिवा.

"तुम्हारे इन चित्रों में सारे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ आ जाता है।... बच्चों को पढ़कर पढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। जितना जास्ती पढ़ेंगे और पढ़ायेंगे, उतना ऊंच पद पायेंगे। बाप कहते हैं - मैं तदबीर तो कराता हूँ, परन्तु तकदीर भी तो हो ना। हर एक ड्रामा अनुसार पुरुषार्थ करते रहते हैं। ड्रामा का राज भी बाप ने समझाया है।"

सा.बाबा 7.10.10 रिवा.

"यह सृष्टि एक बड़ा झाड़ है। बाप कितना अच्छी रीति इसका राज समझाते हैं। तुम्हारा ये झाड़ कितना अच्छी समझ से बनाया हुआ है, जो कोई भी झट समझ जायेगे कि हम किस धर्म के हैं। हमारा धर्म किसने स्थापन किया ?... यह सब ड्रामा में नूँध है, फिर भी होगा 5000 वर्ष के बाद। यह चक्र शुरू से कैसे रिपीट होता है, यह अभी तुम जानते हो।"

सा.बाबा 13.08.10 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और आत्माओं का सुख-दुख

Q.आत्मा के सुख-दुख का भौगोलिक परिवर्तन से क्या सम्बन्ध है अर्थात् भौगोलिक परिवर्तन और आत्मा के सुख-दुख का क्या सम्बन्ध है ?

यह सृष्टि कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रॉलब्ध पर आधारित एक सुख-दुख का खेल है। इसमें आत्मा, परमात्मा और प्रकृति तीन मुख्य पार्टधारी हैं। आत्मायें जैसा कर्म करती हैं, उस अनुसार आत्माओं को प्रकृति द्वारा फल मिलता है, जिसके लिए अनेक प्रकार के ऐतिहासिक और भौगोलिक परिवर्तन होते हैं, जिनके फल स्वरूप आत्माओं को उनके कर्मों का फल सुख या दुख के रूप में मिलता है। इस सुख-दुख के लिए कल्पान्त और कल्प के मध्य में विशाल भोगोलिक परिवर्तन होते हैं, जिसके फलस्वरूप विश्व के इतिहास में अद्भुत परिवर्तन होता है। दुनिया नर्क से स्वर्ग अर्थात् सुख की दुनिया और सुख से नर्क अर्थात् दुख की दुनिया बन जाती है। इसका ज्ञान भी अभी ज्ञान सागर परमात्मा ने दिया है।

"मैं दुख-सुख से न्यारा हूँ। तुम दुख भोगते हो, फिर तुम ही सुख भोगते हो सतयुग में। तुम्हारा पार्ट मेरे से भी ज्यादा है। मैं तो आधा कल्प वहाँ ही आराम से बैठा रहता हूँ वानप्रस्थ में। भक्ति मार्ग में तुम मुझे पुकारते आते हो। ऐसे नहीं कि मैं वहाँ बैठ तुम्हारी पुकार सुनता हूँ। मेरा पार्ट ही इस समय का है। ड्रामा के पार्ट को भी मैं जानता हूँ। अब ड्रामा पूरा हुआ है, मुझे जाकर पतितों को पावन बनाने का पार्ट बजाना है। ... एक्यूरेट टाइम पर मुझे आना पड़ता है।"

सा.बाबा 2.11.10 रिवा.

"जब सब तमोप्रधान बन जाते हैं, तब एक्यूरेट टाइम पर मुझे आना पड़ता है। मैं इस साधारण तन में आता हूँ और आकर तुम बच्चों को दुख से छुड़ाता हूँ। ... अभी कितना हाहाकार होना है। हाहाकार के बाद जयजयकार हो जायेगी। नेचुरल केलेमिटीज़ भी बहुत मदद करती हैं।... समुद्र भी जरूर उछल खायेगा, धरती को हप करेगा।"

सा.बाबा 2.11.10 रिवा.

"यहाँ ही तुमको दुखधाम से पार सुखधाम में जाना है क्योंकि अभी तुम बच्चों को पता पड़ा है कि दुखधाम क्या है और सुखधाम क्या है। ... अभी तुम अपने 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जान गये हो। तुम जानते हो अभी हमको पुण्यात्मा बनना है। दुनिया में कोई भी 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को नहीं जानते हैं। ज्ञान सागर बाप ही आकर बताते हैं।"

सा.बाबा 3.08.10 रिवा.

"स्वर्ग को परमधाम नहीं कहेंगे। परमधाम माना परे ते परे धाम। स्वर्ग तो यहाँ ही होता है। मूलवतन है परे से परे, जहाँ हम आत्मायें रहती हैं। सुख-दुख का पार्ट तुम यहाँ बजाते हो।... इस समय तुम हो संगमयुगी, बाकी सब हैं कलियुगी।... अभी तुम बच्चे संगम पर हो। इस संगमयुग को भी याद करना पड़े।" सा.बाबा 22.05.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और महाभारत की लड़ाई

इस सृष्टि-चक्र में महाभारत की लड़ाई का बहुत महत्व है, जिसके कारण इस विश्व का आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक ढाँचा ही बदल जाता है अर्थात् इसके द्वारा विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी में रात-दिन का परिवर्तन होता है अर्थात् रात से दिन हो जाता है, दुख की दुनिया का अन्त, सुख की दुनिया की आदि होती है अर्थात् अति दुख की दुनिया से अति सुख की दुनिया बन जाती है।

अभी कल्पान्त में सभी आत्मायें इस धरा पर पार्ट बजाने आ जाती हैं, फिर महाभारत लड़ाई के बाद सबसे कम आत्मायें इस धरा पर रहती हैं। अधिकांश आत्मायें परमधाम चली जाती हैं। अभी जो अनेक धर्म विश्व में हैं अर्थात् सारे कल्प से अधिक धर्म-मठ-पंथ इस समय हैं, इस लड़ाई मे उन सबका अन्त हो, एक ही देवी-देवता धर्म विश्व में रह जाता है।

राजनैतिक क्षेत्र में भी आज विश्व में अनेक देश हैं, अनेक प्रकार के प्रजातन्त्र के राजतन्त्र हैं, वे सब इस लड़ाई में खत्म हो जाते हैं और विश्व में एक ही चक्रवर्ती राजाई की स्थापना हो जाती है। भले वहाँ और भी राजाइयाँ होती हैं परन्तु वे सब एक ही चक्रवर्ती राजाई के साथ प्रेम और सद्भाव से सम्बन्धित होती हैं। उनमें किसी प्रकार का मतभेद नहीं होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह महाभारत लड़ाई, लड़ाई अवश्य है लेकिन यह कल्याणकारी लड़ाई है, जिसके द्वारा आत्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति मिलती है, विश्व से दुख-अशान्ति खत्म हो सुख-शान्ति चैन की स्थापना होती है।

"तुम सबको जगाते रहते हो। जो बहुतों को जगायेंगे, वे ऊंच पद पायेंगे। यह वही महाभारत लड़ाई है, बाप भी राजयोग सिखाने जरूर आया होगा। ... ड्रामा अनुसार स्वर्ग की स्थापना जरूर होनी है। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन होता है, वैसे कलियुग के बाद सतयुग जरूर होना है। तुम बच्चों की बुद्धि में खुशी के नगाड़े बजने चाहिए।"

सा.बाबा 21.03.11 रिवा.

"साइन्स वाले स्टार्स में दुनिया ढूँढने के लिए कितना माथा मारते रहते हैं। माथा मारते-मारते मौत सामने आ जायेगा। यह सब है साइन्स का अति घमण्ड। ... दूसरी तरफ मौत के लिए बॉम्बस बना रहे हैं। समझते भी हैं कि कोई प्रेरक है। खुद कहते हैं वर्ल्ड वार जरूर होनी है। यह वही महाभारत लड़ाई है।" सा.बाबा 22.07.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और सौर-मण्डल

इस सृष्टि-चक्र अर्थात् विश्व-नाटक के सफलतापूर्वक मंचन में सौर-मण्डल के सभी ग्रहों का महत्वपूर्ण स्थान है, उन सबका इस विश्व-नाटक पर प्रभाव होता है। इस विश्व की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी में सौर-मण्डल में सूर्य, चान्द और पृथ्वी का मुख्य स्थान है, जिनके आधार पर यह विश्व-नाटक चलता है। यह विश्व-नाटक इस पृथ्वी अर्थात् भूमण्डल पर चलता है, जिस नाटक को रोशन करने वाले सूर्य, चान्द, तारे हैं। इस सौर-मण्डल के सभी ग्रह आकाश तत्व में चक्कर लगाते रहते हैं और उनके चक्कर लगाने की दिशा भी निश्चित होती है। इस चक्कर लगाने में पृथ्वी अपनी धूरी पर चक्कर लगाती है, जिससे दिन-रात होते हैं। चन्द्रमा पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगाता है, जिससे अमावस्या-पूर्णमासी होती है और पृथ्वी सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है, जो एक साल में पूरा होता है और उससे भूमण्डल पर ऋतु-परिवर्तन होता है। इन तीनों के चक्कर कहें या सौर-मण्डल सभी ग्रह-नक्षत्रों का कहें, सब साथ-साथ चलते रहते हैं। यह सूर्य, चान्द, नक्षत्रों का चक्कर सतयुग में भी चलता है तो कलियुग में भी चलता है, दोनों समय पर उनका प्रभाव आत्माओं पर उनके कर्मों अनुसार ही पड़ता है अर्थात् कर्मानुसार उससे आत्माओं को सुख या दुख मिलता है।

"बाबा हम बच्चों की सेवा करते हैं, हम फिर औरों की सेवा करते हैं, इसलिए बाप की और हमारी पूजा होती है। बाबा तो सदैव पूज्य है, हमको भी पूज्य बना रहे हैं। ... तुम कितनी सेवा करते हो। यह सूर्य, चांद, सितारे आदि तो हैं ही हैं। सतयुग में भी हैं तो अभी भी हैं। उनका बदल-सदल नहीं होता है। ... तुम्हारी बहुत महिमा है। तुम धरती के सितारे हो। सितारे भी हैं तो चांद-सूर्य भी हैं।" सा.बाबा 8.07.11 रिवा.

"सूक्ष्मवतन वा मूलवतन में सूर्य-चान्द ही नहीं तो नाटक कैसे चलेगा। खेल सारा यहाँ चलता है। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा बेहद का खेल है। यह सारा बेहद का माण्डवा है, पुनर्जन्म

भी यहाँ ही लेना होता है। सूक्ष्मवतन में पुनर्जन्म होता नहीं है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारा बेहद का खेल है।”
सा.बाबा 22.05.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और विकार

सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी पर हम विचार करें तो जड़-जंगम-चेतन तीनों की उतरती कला तो सतयुग से ही आरम्भ हो जाती है, परन्तु वहाँ आत्मा में विकार नहीं होते हैं, इसलिए विकर्म नहीं होते, जिससे आत्माओं को किसी प्रकार की दुख-अशान्ति नहीं होती है। सभी आत्मायें सुख-शान्ति-सम्पन्न होती हैं, इसलिए परस्पर कोई वैमनस्य नहीं होता है, आत्मा में किसी प्रकार अन्तर्द्वन्द नहीं होता है। आत्मिक शक्ति होने से प्रकृति भी सहयोगी होती है। द्वापर से जब आत्मा में देहाभिमान आ जाता है तो विकारों की प्रवेशता होती है, जिससे विकर्म होना आरम्भ हो जाते हैं, जिसके फलस्वरूप आत्मायें दुख-अशान्ति का अनुभव करती हैं। सतयुग-त्रेता में आत्मा में देहभान तो होता है परन्तु देहाभिमान नहीं होता है, इसलिए विकारों की प्रवेशता नहीं होती है।

“अभी फिर हमको पुण्यात्मा बनना है। कितना पुण्यात्मा बनें हैं, वह हर एक अपनी दिल से पूछे। पापात्मा से पुण्यात्मा कैसे बनेंगे, वह भी बाप ने समझाया है। यज्ञ, तप आदि करने से तुम पुण्यात्मा नहीं बनेंगे। वह है भक्ति मार्ग। ... भक्ति मार्ग में साहूकार ग़रीबों को दान करते हैं परन्तु वे ग़रीब पतित हैं, तो पतित, पतितों को दान करेंगे, तो उसका फल क्या पायेंगे। पतित ही बनते जाते हैं, गिरते ही जाते हैं।”
सा.बाबा 27.05.11 रिवा.

“आधा कल्प सतयुग-त्रेता में देवी-देवताओं का राज्य था, जहाँ सब निर्विकारी थे। फिर आधा कल्प तक रावण राज्य चला। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब विकारी भोगी बन गये। ... द्वापर से पतित-भोगी बन गये, फिर और धर्म भी शुरू होते गये। अमृत का जो नशा था, वह खलास हो गया। दुनिया में लड़ाई झगड़े होने लगे।... भक्ति मार्ग शुरू हुआ।”
सा.बाबा 6.04.11 रिवा.

“यह भी ड्रामा का एक खेल बना हुआ है, जो फिरता रहता है। रावण तुम्हारा पुराना दुश्मन है, वह तुमको अन्धेरे में ले जाता है, फिर बाप आकर सोझरे में ले जाते हैं।... सतयुग-त्रेता में है रामराज्य, द्वापर से रावण राज्य शुरू हुआ, तब आत्मा में विकारों की प्रवेशता हुई।”
सा.बाबा 1.04.11 रिवा.

“अभी तुमको बाप द्वारा परिचय मिला है। अभी तुम रचता बाप को और रचना के आदि-मध्य-अन्त को जानते हो। दुनिया को यह पता नहीं है कि यह चक्र कैसे फिरता है, अभी कौनसा समय है।... शिवबाबा आते हैं भारत को फिर से शिवालय बनाने। रावण ने वेश्यालय बना दिया है।... निर्विकारी देवताओं को विकारी मनुष्य पूजते हैं। फिर निर्विकारी ही विकारी बनते हैं।” सा.बाबा 18.03.11 रिवा.

“पुजारी को अपवित्र और पूज्य को पवित्र कहेंगे। सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम्हारी बुद्धि में है। सतयुग में कौन-कौन राज्य करते थे, कैसे उन्होंको राज्य मिला, यह तुम अभी जानते हो, और कोई नहीं है, जो इन बातों को जानता हो।... तुम्हारी कब क्रिमिनल दृष्टि नहीं जानी चाहिए, इसमें ही मेहनत है। आधा कल्प क्रिमिनल और आधा कल्प सिविल रहती हैं।”

सा.बाबा 3.12.10 रिवा.

“बाप ही आकर तुमको राजयोग सिखाकर डबल सिरताज देवी-देवता बनाते हैं। ... देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, उनका भी मन्दिर है। परन्तु वे कैसे और कब वाम मार्ग में जाते हैं, उसकी कोई तिथि-तारीख नहीं है। चित्रों को देखने से सिद्ध होता है कि काम चिता पर बैठने से काले बनते हैं, जिससे नाम-रूप बदल जाता है।” सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

“अभी तुम्हारी आत्मा को सिविल आई मिलती है, जो 21 जन्मों तक काम करती है। वहाँ कोई भी क्रिमिनल नहीं बनते हैं। ... जो नारायण है, वही अन्त में आकर भाग्यशाली रथ बनते हैं, उनमें ही बाप की प्रवेशता होती है, तो भाग्यशाली हुए ना। ब्रह्मा सो विष्णु, विष्णु सो ब्रह्मा, यह 84 जन्मों की हिस्ट्री बुद्धि में रहनी चाहिए।”

सा.बाबा 11.10.10 रिवा.

“अभी बाप तुमको सर्व शास्त्रों का सार समझाते हैं और फिर वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी भी बतलाते हैं।... बाप का बनकर अगर गटर में गिरा तो जितना पढ़ा, वह चला नहीं जाता है, उसका फल तो मिलेगा ही। परन्तु गिरने से कल्प-कल्पान्तर का घाटा पड़ जाता है।... बाप का बनकर अगर हार खा लेते हैं तो वे 100 गुणा काले बन जाते हैं, हड्डी-गुड्डी सब टूट जाती है।” सा.बाबा 17.09.10 रिवा.

“इस समय तुम बच्चे ही सृष्टि के राज को जानते हो। सतयुग में है डिटी डिनायस्टी, रावण राज्य में आसुरी डिनायस्टी। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग। ... ब्राह्मणों की है विकारों से लड़ाई। सबसे बड़ा है काम विकार, काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से जगतजीत बनेंगे। ... पुरुषार्थ करते-करते, तूफान आते-आते अन्त में तुम्हारी जीत हो जायेगी, माया थक जायेगी।”

सा.बाबा 23.09.10 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और आत्मिक स्थिति

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी का प्रभाव आत्माओं की स्थिति पर पड़ता है और आत्माओं की स्थिति के आधार पर विश्व के आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक घटना-चक्र चलते हैं अर्थात् प्रभावित होते हैं, इसलिए विश्व की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी का आत्माओं की स्थिति से क्या सम्बन्ध है, वह जानना भी आवश्यक है, उसके सम्बन्ध में भी ज्ञान सागर बाबा ने बहुत कुछ बताया है।

सारे सृष्टि-चक्र में आत्मा की तीन स्थितियाँ होती हैं, उनका का विश्व की आध्यात्मिक, धार्मिक और राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी पर क्या प्रभाव होता है, वह भी जानना अति आवश्यक है। आत्मा की ये तीन स्थितियाँ हैं आत्माभिमानी स्थिति, देहभान की स्थिति और देहाभिमान की स्थिति। सतयुग-त्रेता में आत्मा की स्थिति देहभान से प्रभावित देही-अभिमानी स्थिति होती है, इसलिए वहाँ आत्मा से कोई पाप कर्म नहीं होते हैं, परन्तु देहभान के कारण आत्मा की उतरती कला अवश्य होती है, जिसके प्रभाव से जड़-जंगम प्रकृति की भी उतरती कला होती है।

द्वापर-कलियुग में आत्मिक शक्ति के ह्रास होने से आत्मा पर दैहिक शक्ति प्रभावित (overpowered) हो जाती है, जिसको देहाभिमानी स्थिति कहा जाता है। देहाभिमान के कारण आत्मा विकारों के वशीभूत पाप कर्मों में लिप्त हो जाती है, जिससे जड़-जंगम प्रकृति भी तीव्रता से तमोप्रधान की ओर अग्रसर होती है, जिसके फलस्वरूप आत्मायें अपने कर्मानुसार दुख-अशान्ति की अनुभूति करती हैं।

संगमयुग पर ज्ञान सागर परमात्मा आकर आत्माओं को आत्मा, परमात्मा, सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिससे आत्मा की स्थिति देहाभिमानी और आत्माभिमानी के साथ-साथ परमात्माभिमानी होती है अर्थात् आत्मायें देहाभिमान से मुक्त हो आत्माभिमानी बनने का पुरुषार्थ करती हैं, जिसके लिए परमात्माभिमानी स्थिति अति आवश्यक है। ये परमात्माभिमानी स्थिति ही आत्माओं को वह शक्ति प्रदान करती है, जिससे आत्मायें देहाभिमान से मुक्त हो पुनः आत्माभिमानी बनती हैं। परमात्मा पिता ही आत्माओं को यथार्थ ज्ञान देकर देहाभिमान से मुक्त होकर देही-अभिमानी स्थिति में स्थित रहने के लिए आत्माभिमानी स्थिति के गुण-धर्मों का ज्ञान देते हैं, उसका अभ्यास भी कराते हैं, जिससे आत्मायें पावन बनती हैं और घर वापस जाती हैं। जहाँ से सृष्टि-चक्र का नया चक्र आरम्भ होता है।

संगमयुग पर परमात्माभिमानी स्थिति में स्थित आत्मायें ही अतीन्द्रिय सुख अर्थात् आनन्द का अनुभव करती हैं। ये अतीन्दिय सुख अर्थात् आनन्द संगमयुग की विशेष प्राप्ति है, संगमयुग की विशेष अनुभूति है, जो सारे कल्प में आत्मा को नहीं हो सकती है। द्वापर-कलियुग में आत्मायें जो आत्म-कल्याण के लिए पुरुषार्थ करती हैं, उसमें जब आत्मा देह से न्यारी होकर निर्संकल्प स्थिति में स्थित होती है तो नाम-मात्र के लिए इसका अनुभव होता है, जो आत्माओं को पुरुषार्थ के लिए प्रेरित करता है।

"हमारे बच्चे जो शूद्र से ब्राह्मण बनते हैं, वे भी पूरा देही-अभिमानी नहीं बनते हैं। घड़ी-घड़ी देहाभिमान में आ जाते हैं। यह है सबसे पुराना रोग, जिससे तुम्हारा ये हॉल हुआ है। देही-अभिमानी बनने में बड़ी मेहनत है। जितना देही-अभिमानी बनेंगे, उतना बाप को भी याद करेंगे और अथाह खुशी में भी रहेंगे।... परवाह थी पारब्रह्म परमेश्वर की, वह मिल गया, बाकी क्या चाहिए।"

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

"देवी-देवतायें आत्माभिमानी थे, जानते थे कि एक देह को छोड़कर दूसरी लेनी है। बाकी वे परमात्माभिमानी नहीं थे। तुम जितना बाप को याद करेंगे, देही-अभिमानी बनेंगे, उतना बहुत मीठा बनेंगे। ... भल कोई-कोई भाषण बहुत अच्छा करते हैं, परन्तु चलन भी तो चाहिए। देहाभिमान आने से फेल हो जाते हैं, वह खुशी और नशा नहीं रहता है। बड़े विकर्म भी उनसे होते हैं।"

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

सतयुग-त्रेता में देवी-देवताओं की जो आत्माभिमानी स्थिति होती है, वह नाम-मात्र ही होती है क्योंकि उनको आत्मा का यथार्थ ज्ञान नहीं होता है, परन्तु आत्मिक शक्ति होने के कारण आत्मा सहज समय पर देह का त्याग कर नई देह को धारण करती है। आत्मिक शक्ति होने के कारण उनसे कोई विकर्म नहीं होता है क्योंकि आत्मिक शक्ति देह पर प्रभावित रहती है अर्थात् इन्द्रियाँ आत्मा के नियन्त्रण में रहती हैं।

"दुनिया का विनाश होता है, उस समय भारत में ही थोड़े बचते हैं। प्रलय तो कब होती नहीं है, परन्तु बहुत खलास हो जाते हैं, थोड़े बचते हैं तो जैसे प्रलय हो जाती है। थोड़े से यहाँ भारत में बचते हैं, बाकी सब मुक्तिधाम में चले जायेंगे। बाप कहते हैं - बच्चे, देही-अभिमानी बनों, नहीं तो पुराने सम्बन्धी याद पड़ते रहते हैं। ... वे सद्गति को पा न सकें, क्योंकि दुर्गति वालों को याद करते रहते हैं। तुमको तो पूरा नष्टोमोहा बनना है।"

सा.बाबा 18.03.11 रिवा.

"बाप को सभी आत्मयें याद करती हैं। पहले तुम देहाभिमानी थे, तो कुछ भी नहीं जानते थे।

अभी बाप ने तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनाया है।... अभी तुम बच्चे जानते हो कि यह दुनिया बदल रही है। इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है, नई दुनिया की स्थापना बाप कर रहे हैं। एक गीता में ही विनाश का वर्णन है।" सा.बाबा 3.08.10 रिवा.

"बाप ज्ञान का सागर है, वह कहते हैं - बच्चे, तुम भी पूरे ज्ञान के सागर बनो। जितना मेरे में ज्ञान है, उतना तुम भी धारण करो। शिवबाबा को देह का नशा नहीं है। तुम भी देही-अभिमानी बनो। ... इस बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानना चाहिए ना। अभी है संगमयुग। फिर से दैवी राज्य स्थापन हो रहा है। इस पुरानी दुनिया का विनाश होना है।"

सा.बाबा 13.07.10 रिवा.

"पतित विकारी महाराजायें भी निर्विकारी पावन महाराजाओं का मन्दिर बनाकर पूजते हैं। पहले-पहले शिव का मन्दिर बनाते हैं, फिर देवताओं का बनाते हैं। आपही पूज्य और आपही पुजारी तुम बनते हो। मनुष्य समझते हैं कि भगवान आपही पूज्य और आपही पुजारी है। ... बाप कहते - अभी तुम आत्माभिमानी बनते हो, सो भी नम्बरवार, पुरुषार्थ अनुसार ही बनते हो।" सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और स्वर्ग-नर्क

प्राय: सभी धर्मों में भिन्न-भिन्न नामों से स्वर्ग-नर्क का वर्णन है, परन्तु यथार्थ रीति स्वर्ग-नर्क क्या होता है और कहाँ होता है, कैसा होता है, उसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी क्या है, वह कोई नहीं जानता है, जो ज्ञान सागर परमात्मा ने अभी बताई है और उसके द्वारा इस विश्व में पुन: स्वर्ग की स्थापना कर रहे हैं। जो इस हिस्ट्री-जॉग्राफी को यथार्थ रीति जानते हैं, निश्चय करते हैं, वे ही यथार्थ रीति पुरुषार्थ कर स्वर्ग के अधिकारी बनते हैं।

"जैसी पोजीशन होती है, ऐसी उनकी सामग्री भी रहती है। राजाओं के महल देखो कितने अच्छे-अच्छे होते हैं। ... सो भी कलियुग, पतित दुनिया में। वहाँ तो बहुत फर्स्टक्लास महल होते हैं। वहाँ की भेंट में तो यहाँ कुछ भी नहीं है। यह सब अल्पकाल सुख देने वाले हैं।... कल की बात है। कल हम आदि सनातन देवी-देवता धर्म के थे, फिर पतित बनें तो अपने को हिन्दू कह देते हैं।" सा.बाबा 30.04.11 रिवा.

"तुम सबको समझा सकते हो कि भारत स्वर्ग और नर्क कैसे बनता है, आओ तो हम तुमको सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझायें। यह बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी ईश्वर और ईश्वर के बच्चे ही जानते हैं। ... इस हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानने से तुम सब कुछ जान जायेंगे और तुम

बेहद के बाप से बेहद का वर्सा ले लेंगे। ... इस नालेज को जानने से कितना खुशी का पारा चढ़ता है।"

सा.बाबा 13.04.11 रिवा.

"भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, परन्तु उन्होंने यह राज्य कब और कैसे पाया, यह कोई नहीं जानते। वे सूर्यवंशी पुनर्जन्म लेते सीढ़ी उतरते चन्द्रवंशी में आये। यह भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी कोई नहीं जानते। ... बाप कहते हैं - बच्चे, आज से 5 हजार वर्ष पहले तुम स्वर्ग में थे। यह भारत स्वर्ग था, वही फिर नर्क बना।"

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

"भारत गोल्डन एज्ड था, सो अभी आइरन एज्ड बना है। अब तुम बच्चों ने ड्रामा को अच्छी रीति समझ लिया है। ... शिवबाबा को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, तो जरूर वह हेविन का गेट खोलने आयेगा और आयेंगे भी तब जब हेल होगा। बाबा हेल और हेविन के संगम पर आकर हेविन का द्वार खोलकर हेल का द्वार बन्द कर देते हैं।"

सा.बाबा 4.04.11 रिवा.

"और सतसंगों में अनेक प्रकार की कहानियाँ सुनाते हैं, उनसे कोई फायदा नहीं है। बाप अभी जो सत्य नारायण की सच्ची कहानी सुनाते हैं, जिसको सुनने से तुम नर से नारायण बन जायेंगे। यह अमरकथा भी हुई। ... अभी तुम समझते हो बरोबर भारत में ही स्वर्ग था, जहाँ लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, जिनके चित्र भी हैं, मन्दिर भी बने हुए हैं, अभी वे हैं नहीं।"

सा.बाबा 6.04.11 रिवा.

"बाप को हेविनली गॉड फादर कहते हैं, तो जरूर गॉड फादर ने हेविन स्थापन किया होगा, परन्तु कैसे स्थापन किया, वह नहीं जानते हैं। हेविन स्थापन करने हेविन में तो नहीं आयेंगे। जरूर हेल और हेविन के संगम पर ही आयेंगे। शिवरात्रि भी मनाते हैं। ... जो यह ज्ञान समझते हैं और औरों को समझाते हैं, धारण कराते हैं, वे बाप की दिल पर चढ़ते हैं।"

सा.बाबा 18.03.11 रिवा.

"सतयुग को नया युग और कलियुग को पुराना युग कहेंगे। कोई से भी पूछो नया युग फिर पुराना कैसे होता है, कोई भी बता नहीं सकेंगे। ... अभी तुम जानते हो हम नये युग से पुराने में कैसे आये हैं अर्थात् स्वर्गवासी से नर्कवासी कैसे बनें हैं।"

सा.बाबा 27.10.10 रिवा.

"यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। आधा कल्प के बाद स्वर्ग नीचे चला जायेगा, फिर आधा कल्प बाद ऊपर आ जायेगा। ... बाप ने सारा चक्र का राज़ समझाया है। तुम ज्ञान लेकर ऊपर जाते हो, चक्र पूरा होता है, फिर नये सिर चक्र शुरू होगा। यह सदा बुद्धि में चलना

चाहिए। इस नॉलेज से बुद्धि भरपूर रहना चाहिए।”

सा.बाबा 11.10.10 रिवा.

“तुमको प्रदर्शनी में लिखना चाहिए कि इस लड़ाई के पहले ज्ञान सागर बाप स्वर्ग का उद्घाटन कर रहे हैं, फिर विनाश के बाद स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे। ... अब बाप तुमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर से रिपीट होनी है। बाप ही पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाते हैं। ये सब समझने की बाते हैं।”

सा.बाबा 14.08.10 रिवा.

“स्वर्ग है वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड, जिसको सिर्फ तुम ही जानते हो। तुम ही वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड के लिए अपनी-अपनी तकदीर अनुसार पुरुषार्थ कर रहे हो। ... तुम जानते हो - बरोबर वण्डरफुल दुनिया है ना। यहाँ है माया का राज्य, यह भी कितना वण्डरफुल है। मनुष्य क्या-क्या करते रहते हैं, परन्तु दुनिया में कोई समझते नहीं हैं कि हम नाटक में खेल कर रहे हैं।”

सा.बाबा 31.08.10 रिवा.

“अभी तुम्हारी बुद्धि में सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है। जानते हो हेविनली गॉड फादर हमको हेविन के लायक बना रहे हैं। परमात्मा बाप कल्प-कल्प कल्प के बाद हमको हेविन के लायक बनाते हैं। दुनिया में एक भी मनुष्य नहीं है, जिसको पता हो कि हम एक्टर हैं।”

सा.बाबा 23.06.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और भारत एवं भगवान, भारत और स्वर्ग-नर्क का सम्बन्ध

भारत सारे सृष्टि-चक्र का केन्द्र-बिन्दु है, जहाँ से सारे विश्व की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी का संचालन होता है। जिसके लिए बाबा ने कहा है - भारत पावन था तो सारा विश्व पावन था और जब भारत पतित बना है तो सारा विश्व पतित बन गया है। भगवान भारत में ही आकर सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं और ज्ञान देकर पुनः भारत को सिरताज बनाते हैं।

बाबा ने यह भी कहा है कि यह सारा सृष्टि-चक्र भारत पर आधारित है। भारत और विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी को हम विचार करें तो यह हमारे सामने स्पष्ट हो जाता है। परमात्मा का अवतरण भारत में ही होता है, भारत ही अविनाशी भूमि है, जहाँ आकर परमपिता परमात्मा आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना करते हैं अर्थात् नये कल्प-वृक्ष की कलम लगाते हैं, जिससे सारे कल्प में विभिन्न धर्मों, मठ-पंथों रूपी शाखायें-प्रशाखायें निकलती हैं और यह

कल्प-वृक्ष वृद्धि को पाता है। भारत ही स्वर्ग बनता है और भारत ही पूरा नर्क बनता है, जिस स्वर्ग और नर्क का सभी धर्मों में वर्णन है।

धर्म स्थापना और नई दुनिया की स्थापना की धूरी भारत है। भारत में भी आबू तीर्थ महान है, जो परमात्मा के कर्तव्य की धूरी है। धर्म की स्थापना, नये कल्प-वृक्ष की कलम लगाने के कर्तव्य का केन्द्र बिन्दु आबू है और राज्य की स्थापना का केन्द्र बिन्दु देहली होगा। बाबा ने कहा है देहली कल्प के आदि से लेकर अन्त तक राजधानी रहती है। भले हर युग में उसका नाम अलग-अलग होता है।

अन्त में जब विनाश होता है, तब भारत ही बचता है और उसमें भी वर्तमान भारत का कुछ भाग ही बचेगा, फिर अन्य भूभाग समयान्तर में विस्तार को पायेंगे और ये भारत का विस्तार पश्चिम में मिस्त्र, उत्तर में रशिया, पूरव में इण्डोनेशिया, जकार्ता आदि देशो, दक्षिण में लंका आदि तक होता है। इसलिए भारतीय सभ्यता के अवशेष सुदूर मिस्त्र, रशिया, चाइना, इण्डोनेशिया, श्रीलंका आदि में पाये जाते हैं।

भारत की सम्पन्नता से प्रभावित होकर योरोप के अनेक लोगों ने भारत के साथ सम्बन्ध बनाने का पुरुषार्थ किया है, भारत की खोज में निकले हैं। समयान्तर में विभिन्न धर्मों और सभ्यताओं ने अपनी तरह से भारत पर राज्य भी किया है, भारत की धन-सम्पदा को लूटा है, अपने देशों में ले गये हैं। जिसके लिए बाबा कहते हैं - वे सब किसी न किसी रूप में भारत को वह रिटर्न करेंगे। ये विश्व-नाटक की अति सूक्ष्म मशीनरी है।

भारत पर अनेक विदेशियों ने आक्रमण किये, भारत को लूटा और लूटने के प्रयास किये। यह सब होते हुए भी भारतवासियों ने अपनी मानवता को नहीं छोड़ा, जिसका जागृत उदाहरण है कि पृथ्वीराज चौहान ने 16 बार मोहम्मद गौरी को हराया, उसको कैद किया और क्षमा कर दिया। सत्तरहवीं बार जब मोहम्मद गोरी ने पृथ्वीराज को हराया और कैद किया तो उनके साथ जो दुर्व्यवहार किया, वह तो सब जानते हैं और फिर भी पृथ्वीराज ने उसके घर में ही अपनी वीरता का परिचय दिया। ऐसे अनेकानेक उदाहरण भारतीय सभ्यता के उत्कर्ष के हैं।

यह सृष्टि आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का एक खेल है। आत्मायें और परमात्मा परमधाम में रहते हैं और वहाँ इस सृष्टि रंगमंच पार्ट बजाने आते हैं, तो प्रकृतिकृत शरीर धारण कर पार्ट बजाते हैं। आत्मायें गर्भ आदि से शरीर धारण करती हैं और पार्ट बजाते-बजाते सतोप्रधान से तमोप्रधान बनती हैं। परमात्मा परकाया प्रवेश होकर अपना पार्ट बजाते हैं और कभी स्थाई रूप से शरीर में नहीं बैठते, इसलिए वे इस शरीर और प्रकृति के गुण-धर्मों से

प्रभावित नहीं होते हैं, इसलिए वे सदा ही सतोप्रधान हैं, कभी तमोप्रधान नहीं बनते हैं। इस खेल में सतयुग से लेकर कलियुग तक विभिन्न धर्मपितायें आकर अपना-अपना धर्म स्थापन करते हैं और धर्मवंश की आत्मायें आकर अपना पार्ट बजाती हैं, उनकी राजाई चलती है। यह सारा ज्ञान परमात्मा ही आकर कल्पान्त में देते हैं।

भारत सर्व धर्मों के परमपिता परमात्मा शिव की अवतरण भूमि है और आदि पिता प्रजापिता ब्रह्मा की कर्मभूमि है, जो इस कल्प-वृक्ष के बीज और मूल हैं और सभी धर्म इस कल्प-वृक्ष की शाखायें हैं, इसलिए प्राय: सभी मुख्य धर्मवंशों ने भारत भूमि पर राज्य किया है या किसी न किसी रूप से उनका विशेष सम्बन्ध रहा है। अभी परमपिता परमात्मा ब्रह्मा और ब्राह्मणों द्वारा इस कल्प-वृक्ष की पुन: कलम लगा रहे हैं।

पूरा स्वर्ग और पूरा नर्क भारत ही बनता है और उसमें भी वर्तमान भारत। सतयुग के आदि में जो भारत होता है और उसका जो विस्तार होता है, तो उस विस्तार के स्वर्ग और नर्क में महान अन्तर होता है। पूरा स्वर्ग और पूरा नर्क वर्तमान भारत ही बनता है क्योंकि यहाँ से ही नई दुनिया की स्थापना की नींव पड़ती है और यहाँ पर ही पहले-पहले सतयुगी राजाई की स्थापना होती है।

विनाश के बाद भारत ही बचता है क्योंकि भारत भूमि अविनाशी है और भारत में परमात्मा राजयोग सिखाकर जो देवी-देवता धर्म की राजाई स्थापन करते हैं, उसका बाद में विस्तार होता जाता है, जो विस्तार अफ्रीका के उत्तरी भाग, योरोप के दक्षिणी भाग अर्थात भारत के पूरव-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण एशिया में होता जाता है। फिर जब द्वापर से देवी-देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं, दैवी धर्म और सभ्यता का पतन होता है, तो इस धरा पर अन्य धर्म स्थापन होते हैं, उनकी राजाई स्थापन होती है तो जो अखण्ड विश्व था, उसका विभाजन होता है और उन देशों का नामकरण होता है, जिससे जो दिल्ली से सम्बन्धित राजाई होती है, उसका संकुचन होता है और उसका नाम भारत पड़ता है, जो समयान्तर में हिन्दुस्तान भी कहा जाता है। भारत का वह संकुचन होते-होते वर्तमान भारत बचता है।

आज भारत में जो इतिहास और भूगोल पढ़ाया जा रहा है, वह गुलामी का इतिहास और भूगोल है अर्थात् यथार्थ नहीं है। यथार्थ तो परमात्मा ने अभी आकर बताया है। उदाहरणार्थ - भारत में जो इतिहास पढ़ाया जाता है, उसमें पढ़ाया जाता है कि आर्य अर्थात् सुधरे हुए लोग भारत में मध्येशिया से आये, परन्तु ये सत्य नहीं है। इतिहास में ये परिवर्तन भारत को गुलाम बनाकर रखने के लिए भारतीय सभ्यता और भारतीयों के सम्मान को गिराने के लिए उस समय के शासकों के द्वारा किया गया था, जो आज भी चल रहा है। भारत के

सत्ताधारियों को न इस सत्य का ज्ञान है और न ही इस पर विचार करने और सुनने का समय है। वास्तविकता पर विचार करें और जिस सत्य का ज्ञान ज्ञान-सागर परमात्मा ने दिया है, उसके अनुसार भारत आर्यों की जन्म स्थली है, जहाँ से आर्य अर्थात् दैवी सभ्यता सारे विश्व में फैली थी। फिर जब अन्य धर्म और सभ्यतायें विश्व में स्थापित हुई और उनकी राजाई स्थापन हुई तो भारत का विभाजन होना आरम्भ हुआ तो कुछ आर्य, उन देशों को छोड़कर भारत में आ गये, जैसा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बटवारे में भी हुआ। उस बटबारे में जो हिन्दू पाकिस्तान को छोड़कर भारत में आये तो यह तो नहीं कहेंगे कि भारत में हिन्दू नहीं थे, पाकिस्तान से हिन्दू आये।

ऐसे ही जॉग्राफी के क्षेत्र में नये दिन की आदि 12 बजे से होती है, जबकि भारत में सूर्योदय 5-6 बजे से होता है। यह भी गुलामी की प्रथा है क्योंकि ब्रिटेन में दिन का आरम्भ 12-1 बजे होता है, इसलिए वहाँ नया दिन 12 बजे आरम्भ होता है। गुलामी के कारण अंग्रेजों के समय यहाँ भी वही प्रथा थी, जो आज भी चल रही है। भल सारे विश्व की एकता के लिए यह समझ अच्छी भी मान ली जाये, परन्तु सत्य से आँखें बन्द तो नहीं की जा सकती हैं।

“भारत में जब सतयुग था तो पवित्र देवी-देवतायें राज्य करते थे। जरूर उन्होंने कोई से यह स्वर्ग की प्राप्ति की होगी। स्वर्ग की स्थापना करने वाले बाप के सिवाए यह प्राप्ति कोई करा न सके। पतित-पावन बाप ही पतितों को पावन बनाये पावन दुनिया का राज्य देने वाला है। सौदा कितना सस्ता देते हैं। सिर्फ कहते हैं - यह तुम्हारा अन्तिम जन्म है, इसमें पवित्र बनो तो 21 जन्म पवित्र दुनिया के मालिक बनोंगे।” सा.बाबा 6.02.11 रिवा.

“बाप समझाते हैं - हे बच्चो, तुम भारतवासी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी थे, विश्व के मालिक थे, वहाँ कोई दूसरा धर्म नहीं था, उसको स्वर्ग, कृष्णपुरी कहा जाता है। यहाँ है कंसपुरी।... शिव जयन्ति मनाते हैं। शिव है निराकार, तो निराकार की जयन्ति कैसे हो सकती है ? जरूर वह किसमें आते हैं।” सा.बाबा 1.04.11 रिवा.

“महाभारी लड़ाई लगेगी, सब खत्म हो जायेंगे। बाकी एक भारत खण्ड रहेगा। भारत भी बहुत छोटा होगा। स्वर्ग कितना छोटा होगा। ... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी शुरू से। तो जरूर स्वर्ग से ही रिपीट करेंगे, पिछाड़ी से तो नहीं करेंगे। यह ड्रामा का चक्र अनादि है, जो फिरता रहता है। इस तरफ है कलियुग, उस तरफ है सतयुग। तुम अभी संगमयुग पर हो।” सा.बाबा 28.01.11 रिवा.

“गाया जाता है - दे दान तो छूटे ग्रहण। अभी सबके ऊपर राहू का ग्रहण है, सारे भारत पर राहू का ग्रहण है। तुम जानते हो अब हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा बैठी है। भारत स्वर्ग था,

तो बृहस्पति की दशा थी, इस समय है राहू की दशा। अब फिर बेहद के बाप से बृहस्पति की दशा बैठती है। बृहस्पति की दशा से 21 जन्म सुख रहता है।"

सा.बाबा 11.07.11 रिवा.

Q.सतयुग-त्रेता में भारत की क्या सीमायें थीं और उन सीमाओं का विस्तार और संकुचन कैसे होता है ?

किसी देश का विस्तार और संकुचन भारत के समान नहीं होता है। भारत अर्थात् दैवी धर्म और सभ्यता का विस्तार। परमपिता परमात्मा दैवी धर्म की स्थापना वर्तमान भारत में करते हैं और विनाश के समय वर्तमान भारत का ही कुछ भूभाग बचता है, जहाँ दैवी धर्म और सभ्यता का बीज प्रत्यारोपित होता है, जो बाद में विस्तार को पाते मिस्र, वेवीलोनिया, दक्षिणी योरोप, मध्येशिया, चीन, इण्डोनेशिया तक होता है और फिर जब द्वापर से संकुचन होता है तो वर्तमान भारत बचता है। ऐसे विस्तार और संकुचन किसी देश का नहीं होता है। भले ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार और संकुचन हुआ है, परन्तु उसको देश का विस्तार और संकुचन नहीं कहा जा सकता है।

"सभी नेशन वाले जानते हैं कि भारत प्राचीन देश है। पहले-पहले सिर्फ भारत ही था। यह कोई नहीं जानते हैं। ... भारत सबसे ऊंच खण्ड है। मनुष्य सृष्टि की पहली-पहली बिरादरी यहाँ होती है। यह भी ड्रामा बना हुआ है। ... भारत जैसा दानी खण्ड और कोई नहीं होता है। इस समय तुम अपना तन-मन-धन सभी इस यज्ञ में स्वाह करते हो। इसको कहा जाता है राजस्व अश्वमेध अविनाशी गीता ज्ञान यज्ञ।" सा.बाबा 27.05.11 रिवा.

"तुमको ईश्वर पढ़ाते हैं, कोई मनुष्य नहीं पढ़ाते हैं। यह ब्रह्मा भी तो मनुष्य है। मनुष्य कोई को भी पावन बना नहीं सकते। ... बुद्धि भी कहती है - सतयुग में सिर्फ भारतवासी देवी-देवतायें ही होंगे। वहाँ और कोई धर्म वाले नहीं थे। अभी तुमको यह ज्ञान मिला है कि नई दुनिया में पहले सूर्यवंशी देवी-देवतायें थे, फिर चन्द्रवंशी, वैश्य वंशी, शुद्रवंशी बनें।"

सा.बाबा 30.05.11 रिवा.

"तुम समझते हो जरूर सतयुग में बहुत थोड़ी आत्मायें होंगी। वहाँ बहुत सुखी होंगी, फिर वे ही 84 जन्म भोग बहुत दुखी हुई हैं। अभी तुमको सारे सृष्टि-चक्र का मालूम पड़ा है। तुम्हारी बुद्धि ही अभी इन बातों में चलती है, और किसी मनुष्य की बुद्धि इन बातों में नहीं चलती है।... तुम समझते हो अभी हमारे द्वारा बाबा स्वर्ग की स्थापना करा रहे हैं।"

सा.बाबा 16.05.11 रिवा.

"बाप कहते हैं मैं सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी पवित्र धर्म स्थापन करता हूँ। ब्राह्मण धर्म है चोटी। ऊंच ते

ऊंच है रुहानी बाप, जो रूहों को आप समान बनाते हैं। बाप ज्ञान का सागर, सुख का सागर है तो तुमको भी ऐसा बनाते हैं।... सतयुग आदि से कलियुग अन्त तक की सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी भारत की ही है, जो बाप ही आकर बताते हैं।"

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"बाप को पतित-पावन कहकर बुलाते हैं, परन्तु वह कैसे पावन बनाते हैं, वह नहीं जानते हैं। अभी तुम समझते हो कि बाप कैसे आकर पतित से पावन बनाते हैं। तुम यह भी जानते हो कि सतयुग में सिर्फ हमारा ही छोटा सा झाड़ होगा। सतयुग में सिर्फ भारत ही होगा, बाकी इतने जो खण्ड हैं, उनका नाम-निशान नहीं होगा। भारत खण्ड ही स्वर्ग होगा।"

सा.बाबा 2.05.11 रिवा.

"भारत बाप का जन्म स्थान है। भारत स्वर्ग था, अभी देखो भारत का क्या हॉल हो गया है। बाप को ड्रामा अनुसार तरस आता है। ... भारत की यथार्थ महिमा का किसको पता नहीं है। बाप ही आकर भारत की सत्य कहानी सुनाते हैं। भारत की कहानी माना दुनिया की कहानी। इसको सत्य नारायण की कहानी भी कहा जाता है।"

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

"सतयुग में भारत में लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, सारा विश्व भारत था और कोई खण्ड ही नहीं था। यह हिस्ट्री गवर्मेन्ट पढ़ाती नहीं है। ... जो हिस्ट्री पढ़ाते हैं, वह अधूरी हिस्ट्री है। लक्ष्मी-नारायण के राज्य का कोई को पता नही है। बाप ही समझाते हैं कि यह सारा सृष्टि-चक्र कैसे फिरता है।... जब तुम पापात्मा बन जाते हो, तब मैं आता हूँ पुण्यात्मा बनाने।"

सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"भारत बहुत साहूकार था, दुख की कोई बात नहीं थी। उस समय और कोई धर्म नहीं था, एक ही देवी-देवता धर्म था। यह जो वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है, यह कोई नहीं जानते हैं। अभी तुम इसको अच्छी रीति समझते हो।... अभी फिर बाप आये हैं भारत को साहूकार बनाने। भारत सतयुग में बहुत साहूकार था, वहाँ देवी-देवताओं का राज्य था। वह कहाँ गया, यह कोई नहीं जानते हैं।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"यह सारी भारत की ही कहानी है। भारत का इस ड्रामा में आलराउण्ड पार्ट है। और सब धर्म बाद में आते हैं। बाप आकर 84 जन्मों का राज़ समझाते हैं। बाप अन्त में आते हैं। आदि में आये तो आदि-अन्त की नॉलेज कैसे सुनाये। ... जरूर आदि-अन्त की नॉलेज सुनाने अन्त में आना पड़े। यह सब बड़ी समझने की बातें हैं।"

सा.बाबा 1.02.11 रिवा.

"रुहानी बाप बैठ रुहानी बच्चों को 84 जन्मों की कहानी सुनाते हैं। बच्चे यह भी समझते हैं कि सभी तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। जो पहले-पहले सतयुग की आदि में आते हैं, वे ही 84 जन्म लेते हैं। भारत में पहले-पहले पूज्य देवी-देवता धर्म का ही राज्य था। लक्ष्मी-नारायण का राज्य था तो जरूर उनकी डिनायस्टी होगी, राजघराने के मित्र-सम्बन्धी, प्रजा आदि भी होगी।"

सा.बाबा 18.11.10 रिवा.

"भारत अविनाशी खण्ड है, जो कभी लोप नहीं होता है। आधा कल्प यह एक ही खण्ड रहता है। और सब खण्ड बाद में नम्बरवार इमर्ज होते हैं।... सबको बोलो - वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे चक्र लगाती है, वह आकर समझो। प्राचीन ऋषि-मुनियों का कितना मान है, परन्तु वे भी सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को नहीं जानते थे। हाँ, उनमें पवित्रता की ताकत रहती है, जिससे भारत को थमाते हैं।" सा.बाबा 21.10.10 रिवा.

"परमपिता परमात्मा है सबका पूज्य, इसलिए सब धर्म वाले उनकी पूजा करते हैं। ऐसे बाप का जन्म यहाँ भारत में होता है। ... सतयुग में यह पता नहीं रहता कि हमारे पीछे चन्द्रवंशी राज्य होगा। यहाँ तुम सब जानते हो कि यह-यह पास्ट हो गया, फिर यह-यह होगा।... कलियुग जो पास्ट हो गया, उसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनने से क्या फायदा।"

सा.बाबा 3.09.10 रिवा.

**Q.**क्या भारत में आर्य मध्येशिया से आये, जैसा भारत के इतिहास में पढ़ाया जाता है? यह कहने का आधार या कारण क्या है?

"सतयुग को भी ऐसा नहीं कहेंगे कि ईश्वर का राज्य है। राज्य तो देवी-देवताओं का है। बाप कहते हैं - मैं राज्य नहीं करता है, राज्य स्थापन करता हूँ। ... बाप फिर से दैवी राज्य स्थापन कर रहे हैं। सच्चा बाबा, तुमको अपनी और रचना के आदि-मध्य-अन्त की सच नॉलेज दे रहे हैं। बाप तुमको बेहद की हिस्ट्री जॉग्राफी सुनाते हैं।"

सा.बाबा 5.04.11 रिवा.

"बहुत कहते भी हैं - भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी फुल होनी चाहिए, सो नहीं है। तो उनको समझाना पड़े। तुम्हारे सिवाए कोई समझा न सके। परन्तु उसके लिए देही-अभिमानी स्थिति चाहिए। ... इनके ऊपर तो कितनी फिकरात रहती है। भल समझते हैं कि यह सब ड्रामा अनुसार होता है, फिर भी समझाने के लिए युक्तियाँ तो रचनी होती हैं ना।"

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

**Q.**सतयुग-त्रेता में चक्रवर्ती राजाई का अन्य राजाइयों से क्या सम्बन्ध होता है?

Q.भारत की हिस्ट्री-जॉग्राफी का अन्य धर्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी से क्या सम्बन्ध है?

Q.प्राय: सभी मुख्य धर्म-वंश वालों ने भारत पर राज्य किया, उसका कारण क्या है?

"यह सब भारत की ही बात है। भारत में ही देवी-देवताओं का राज्य था, उनके चित्र मन्दिरों में पूजे जाते हैं। ... क्योंकि वे महाराजा-महारानी पवित्र थे। यथा राजा-रानी तथा प्रजा सब पूज्य होते हैं। तुम ही पूज्य, फिर पुजारी बनते हो।" सा.बाबा 12.05.11 रिवा.

"भारत बाप का जन्म स्थान है। भारत स्वर्ग था, अभी देखो भारत का क्या हॉल हो गया है। बाप को ड्रामा अनुसार तरस आता है।... भारत की यथार्थ महिमा का किसको पता नहीं है। बाप ही आकर भारत की सत्य कहानी सुनाते हैं। भारत की कहानी माना दुनिया की कहानी।"

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

"यह सारा नाटक भारत पर ही बना हुआ है। भारत ही हेविन और भारत ही हेल बनता है। और धर्म वालों के लिए ऐसे नहीं कहेंगे। वे तो हेविन में होते ही नहीं है। ... सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो में आने में, यह सीढ़ी उतरने में 5 हजार वर्ष लगते हैं। धीरे-धीरे आत्मा में खाद पड़ती जाती है। अभी तुमको फिर से आत्माभिमानी बनना है।"

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"देहाभिमान की सबसे कड़ी बीमारी है, जो तुमको लग पड़ी है, जिसके कारण तुम अपने धर्म-कर्म को भूल गये। ... भारतवासी समझ नहीं सकते कि प्राचीन भारत, जिसको स्वर्ग, हेविन कहा जाता है, उसका ये हॉल कैसे हुआ। आजकल तो भारत की फुल हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानते ही नहीं हैं। बच्चों को भी थोड़ा ज्ञान होता है तो देहाभिमान आ जाता है।"

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

"सबको बाप और सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज सुनाना है, जिससे मनुष्य स्वर्ग के मालिक बन जायें। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि यह नाटक कैसे चक्र लगाता है। यह भी एक कहानी है। ... तुम जानते हो - 5 हजार वर्ष पहले भारत में हम देवी-देवताओं का राज्य था। हम पूज्य थे, फिर पुजारी बनें।" सा.बाबा 2.07.11 रिवा.

## भारत और आध्यात्म का सम्बन्ध

भारत को ही आध्यात्म का गुरू माना जाता है अर्थात् भारत से ही आध्यात्मिक ज्ञान सारे विश्व में जाता है। आध्यात्म के मूल परमात्मा जब भारत में आते हैं और आध्यात्मिक ज्ञान देते हैं, तो उस ज्ञान को अन्य सभी आत्माओं के कल्याणार्थ अपने बच्चों को सारे विश्व में भेजते हैं, जिससे सबका कल्याण होता है। जिसकी यादगार रूप में भक्ति मार्ग में अनेक

धर्मगुरु भारत के प्राचीन राजयोग के नाम पर हठयोग का विदेशों में प्रचार करने जाते हैं। ज्ञान सूर्य भारत में ही उदय होता है, जिसका प्रकाश सारे विश्व में फैलता है इसलिए भारत को लाइट-हाउस कहा जाता है। भक्ति मार्ग में आध्यात्मिक ज्ञान का जो गीता शास्त्र है, उसका भी सभी देशों में मान है। बाबा ने कहा है - सर्वव्यापी का ज्ञान भी गीता से ही सब धर्मों और देशों में गया है।

"बाप का वर्सा तो सब बच्चों को जरूर मिलना चाहिए। एक वर्सा है मुक्ति का, दूसरा है जीवनमुक्ति का। ... मुक्ति तो सबको मिलती है, बाकी जीवनमुक्ति जो पढ़ेंगे, उनको ही मिलेगी। भारत में बरोबर जीवनमुक्ति थी, बाकी इतनी सब आत्मायें मुक्तिधाम में थी। ... भारत में लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर हैं, उनको यह राजाई कहाँ से मिली, उन्होंने कितना समय राज्य किया, फिर कहाँ चले गये, यह कुछ भी मनुष्य नहीं जानते।"

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

"द्वापर से कलियुग अन्त तक भक्ति मार्ग चलता है, उसमें ज्ञान होता नहीं है। ज्ञान से होती है सद्गति। जब तक सर्व का सद्गतिदाता बाप न आये, तब तक किसकी सद्गति हो न सके। बाप कहते हैं - मैं कल्प के संगमयुग पर आता हूँ। ... जब सृष्टि-चक्र पूरा होता है, तब ही बाप आकर सर्वात्माओं को वापस ले जाते हैं। इसको कहा जाता है रुहानी ज्ञान, जो सुप्रीम रूह ही देते हैं।" सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

**Q.** सभी आत्माओं को भारत की आकर्षण क्यों होती है ?

भारत सर्वात्माओं के बाप की अवतरण भूमि है, जहाँ से परमपिता परमात्मा ने सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का वर्सा दिया है। इसलिए भारत के प्रति सर्वात्माओं का आकर्षण जाने-अन्जाने रहता ही है।

"यह सृष्टि वैराइटी धर्मों का मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है, निराकार परमात्मा शिव ही कल्प-वृक्ष का चैतन्य बीजरूप है।... भारत ऊंच ते ऊंच खण्ड गाया जाता है। भारत परमपिता परमात्मा शिव का बर्थ-प्लेस है, वह यहाँ आकर पतितों को पावन बनाते हैं। शिव की पूजा भी भारत में ही होती है, उनकी जयन्ति भी यहाँ ही मनाई जाती है।" सा.बाबा 23.05.11 रिवा.

"आत्माओं को इतनी शान्ति क्यों याद आती है, क्योंकि शान्तिधाम आत्माओं का घर है। ... तुम जानते हो प्रलय कभी होती नहीं है। बाबा अविनाशी है तो उनका बर्थ-प्लेस भी अविनाशी है। बच्चों को बहुत खुशी रहनी चाहिए।... अगर सबको पता होता कि भारत सर्व के गति-सद्गति, दुख से मुक्ति दिलाने वाले शिवबाबा का बर्थ-प्लेस है तो उसका बहुत मान होता।"

सा.बाबा 15.07.11 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और विनाश

भारत के अनेक शास्त्रों में और दुनिया के अनेक धर्म-सम्प्रदाओं की ऐसी मान्यता है कि दुनिया में विनाश होगा तो विश्व में जनसंख्या पूर्णतया खत्म हो जायेगी और सारी पृथ्वी जलमग्न हो जायेगी। साइन्स की भी कुछ ऐसी ही धारणायें हैं। परन्तु अभी परमात्मा ने इसका यथार्थ ज्ञान दिया है, उसके अनुसार विश्व में न कभी प्रलय होती है, न सृष्टि की कभी नई रचना हुई है और न ही कभी सृष्टि का सम्पूर्ण विनाश होता है। यह सृष्टि-चक्र अनादि-अविनाशी है, जो अनादि काल से चलता आ रहा है और अनन्त काल तक चलने वाला है। यह केवल नये से पुराना और पुराने से नया होता है और पुनरावृत्त होता है। ये सृष्टि-चक्र के पुनरावृत्ति की भी बड़ी रोचक कहानी है, जो इसको समझ लेता है, वह इसके परमानन्द को अनुभव करता है। परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है कि यह विनाश का समय है परन्तु सृष्टि का सम्पूर्ण विनाश नहीं होगा। विनाश के समय पृथ्वी का अधिकांश भाग जल-मग्न हो जायेगा, भारत का कुछ भाग बचेगा और भारत में ही कुछ आत्मायें बचेंगी, जहाँ से नई दुनिया की कलम लगेगी। यदि भारत के धर्म-ग्रन्थों को यथार्थ दृष्टि से देखें तो उनमें भी कुछ इसका वर्णन है, जिसको बाबा कहते हैं आटे में नमक के बराबर सत्य है। शास्त्रों में वर्णन है कि विनाश के समय मनु, सत्यरूपा और सप्त ऋषि बचे थे, जिनसे आगे सृष्टि की वृद्धि हुई।

Q.विनाश अर्थात् विश्व-परिवर्तन कब तक ?

बाबा ने कहा है - जो भी त्रेता के अन्त तक स्वर्ग में आने वाली जो भी आत्मायें हैं, वे सब साकार में आये परमात्मा को पहचानेंगी और ब्रह्मा को अपना बाप जरूर मानेंगी, तब ही उनको स्वर्ग का वर्सा मिलेगा।

"भारत में लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर हैं, उनको यह राजाई कहाँ से मिली, उन्होंने कितना समय राज्य किया, फिर कहाँ चले गये, ... अभी यहाँ कोई राजाई तो है नहीं, प्रजा का प्रजा पर राज्य है।... विनाश की भी तैयारियाँ चल रही हैं। देहली परिस्तान तो बनना ही है। परन्तु कैसे बनेंगी, यह कोई मनुष्य नहीं जानते हैं, जो बाप ही बताते हैं।"

सा.बाबा 13.05.11 रिवा.

"अभी जितना-जितना मनुष्य तमोप्रधान बनते जायेंगे, उतना दुनिया में दुख-अशान्ति बढ़ती जायेगी। आगे चलकर मनुष्य बहुत दुखी होंगे। विनाश होगा, फिर जय-जयकार हो जायेगी। तुम बच्चों ने जो विनाश दिव्य दृष्टि से देखा है, सो फिर प्रैक्टिकल में इन आँखों से देखना है। स्थापना का साक्षात्कार भी बहुतों ने किया है।" सा.बाबा 14.05.11 रिवा.

"बॉम्बस आदि बनाते रहते हैं। यह कोई भी चीज़ रखने के लिए थोड़ेही बनाई जाती है। ... बॉम्बस की लड़ाई के साथ अर्थक्वेक होगी, अकाल पड़ेगा आदि कुदरती आपदायें भी आयेंगी... अब तुम जानते हो विनाश तो होना ही है। कल्प पहले भी यह हुआ था। कल्प का ज्ञान तो कोई में है नहीं। यह तो बाप ही तुमको समझाते हैं।"

सा.बाबा 11.05.11 रिवा.

"अगर श्रेष्ठ वृत्ति में स्थित हो तो कोई भी वायुमण्डल, वायब्रेशन्स आदि डगमग कर सकते हैं क्या ? वृत्ति से ही वायुमण्डल बनता है। अगर आपकी वृत्ति शुद्ध और श्रेष्ठ है तो वृत्ति के आधार से वायुमण्डल को शुद्ध बना सकते हो। ... वायुमण्डल के कारण मेरी वृत्ति चंचल हुई, जब ये शब्द बोलते हो, उस समय अपने को क्या समझते हो ?"

अ.बापदादा 6.08.72

"तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे, फिर विनाश शुरू हो जायेगा। विनाश का बड़ा भारी सीन है। यह सब ड्रामा में नूँध है। तुम जानते हो - उस समय हमारी अवस्था एकरस रहेगी, हम खुशी में सदैव हर्षित रहेंगे। यह दुनिया तो खलास होनी ही है। हम जानते हैं कि कल्प-कल्प संगमयुग आता है, तब विनाश होता है। सिर्फ बॉम्बस नहीं, नेचुरल केलेमिटीज़ भी बहुत मदद करती हैं।" सा.बाबा 10.05.11 रिवा.

"उथल-पुथल होनी ही है, उसकी भी तैयारी हो रही है। बॉम्बस आदि भी बनाते रहते हैं। ... यह सब अपने ही विनाश के लिए कर रहे हैं। मौत सामने खड़ा है। तुम जानते हो - इतने महल आदि सब मिट्टी में मिल जायेंगे। ... बॉम्बस आदि गिरने और भूकम्प आदि आने से पृथ्वी का 3 चौथाई भाग खलास हो जाता है, बाकी एक भाग बच जाता है। भारत एक हिस्से में है ना, वह बचेगा।" सा.बाबा 26.04.11 रिवा.

"ये बॉम्बस आदि यादवों ने बनाये हैं, जिससे अपना आपही विनाश करेंगे। ... कौरवों और पाण्डवों की लड़ाई है नहीं। तुम हो सच्चे-सच्चे वैष्णव। लड़ाई होती है यवनों और कौरवों की, जिससे रक्त की नदियाँ बहती हैं। पाण्डव तो हिंसक लड़ाई कर न सकें। नेचुरल केलेमिटीज़ भी बहुत आनी है।" सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

"भल कहा जाता है शंकर की प्रेरणा से बॉम्बस आदि बनाते हैं, परन्तु यह सारी ड्रामा में नूँध है। इस यज्ञ से ही यह विनाश ज्वाला निकली है। बाप कोई प्रेरणा आदि नहीं करते हैं। यह सब ड्रामा में नूँध है। शिवबाबा आकर यह सारा ज्ञान देते हैं।"

सा.बाबा 26.03.11 रिवा.

"यह शिव वा रुद्र का ज्ञान यज्ञ है। यज्ञ में ब्राह्मण जरूर चाहिए। इस रुद्र ज्ञान यज्ञ से विनाश

ज्वाला प्रज्ज्वलित होती है। ... यह विनाश ज्वाला इस यज्ञ से प्रज्ज्वलित होती है। पतित दुनिया का विनाश तो होना ही है। नहीं तो पावन दुनिया कैसे आये। पतित दुनिया का विनाश होगा, इसमें तो खुश होना चाहिए।" सा.बाबा 18.02.11 रिवा.

"भारत स्वर्ग था, तब कहते हैं प्राचीन भारत। भारत को ही बहुत मान देते हैं। भारत सबसे बड़ा भी है और सबसे पुराना भी है। ... अभी विनाश सामने खड़ा है। जो अच्छी रीति समझते हैं, उनको अन्दर में बहुत खुशी रहती है।... आगे चल देखना क्या-क्या होता है। बहुत भयंकर सीन है। तुम बच्चों ने साक्षात्कार भी किया है। मुख्य है याद की यात्रा में रहना, अशरीरी बनना।" सा.बाबा 19.02.11 रिवा.

"सबको सुधारने का कन्ट्रेक्ट ड्रामा के प्लेन अनुसार बाप ने उठाया है। बच्चों को मुरली कभी मिस नहीं करनी चाहिए। मुरली का कितना गायन है।... यह पढ़ाई बहुत-बहुत कमाई की है। अभी की पढ़ाई से जन्म-जन्मान्तर के लिए फल मिल जाता है। विनाश का सारा तैल्लुक तुम्हारी पढ़ाई से है। तुम्हारी पढ़ाई पूरी होगी और यह लड़ाई शुरू हो जायेगी।"

सा.बाबा 25.01.11 रिवा.

"याद को ही बल कहा जाता है, ज्ञान तो है सोर्स ऑफ इन्कम। याद से ही शक्ति मिलती है और विकर्म विनाश होते हैं। ... स्प्रीचुअल नॉलेज एक बाप के पास ही है और वह ब्राह्मणों को ही कल्प के संगमयुग पर देते हैं।... बाप को और 84 के चक्र को याद करेंगे तो फिर चक्रवर्ती राजा बन जायेंगे। आप समान बनायेंगे, प्रजा बनायेंगे, तब तो राजा बनेंगे और प्रजा पर राज्य करेंगे।" सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

"और सब धर्म वालों के शास्त्र आदि कायम रहते हैं। तुमको ज्ञान मिलता ही है संगम पर, फिर विनाश होता है, तो कोई शास्त्र आदि नहीं रहता है। इसलिए लिए यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। ... पतित-पावन बाप के बच्चे तुम भी मास्टर पतित-पावन हो। अगर किसको रास्ता नहीं बताते हो तो पाई-पैसे का पद मिल जायेगा। फिर भी तो बाप से मिले ना। यह भी कम थोड़ेही है।" सा.बाबा 29.10.10 रिवा.

"नैचुरल केलेमिटीज़ तो आनी ही है। विनाश होना ही है।... बुद्धि कहती है - विनाश होना जरूर है। उस तरफ के लिए बॉम्बस भी तैयार हैं, नेचुरल केलेमिटीज़ आदि फिर हैं यहाँ के लिए। उसमें बड़ी हिम्मत चाहिए। ... मैं आत्मा हूँ, देह का भान टूट जाये, यह अवस्था पक्की करनी है।" सा.बाबा 8.09.10 रिवा.

"तुम जब 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे, तब विनाश की भी तैयारी पूरी होगी। वे विनाश के लिए और तुम अविनाशी पद पाने के लिए तैयारी कर रहे हो। कौरवों और पाण्ड्वों की लड़ाई हुई

नहीं है। लड़ाई लगती है कौरवों और यादवों की।... यहाँ के लिए ही गायन है पहले जब रक्त की नदियाँ बहती हैं, तब फिर घी की नदियाँ बहेंगी।... वे आपस में बॉम्बस से लड़कर खत्म हो जायेंगे, यहाँ फिर सिविलवार की ड्रामा में नूँध है।"

सा.बाबा 22.07.10 रिवा.

"मनुष्य जब लड़ाई देखते हैं तो कहते हैं - यह तो महाभारत की लड़ाई की निशानी है। बाप कहते हैं - यह रिहर्सल होती रहेगी, यह लड़ाई चलते-चलते बन्द हो जायेगी। तुम जानते हो अभी हमारी स्थापना पूरी थोड़ेही हुई है, जो फाइनल लड़ाई लग जाये।"

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

"शिवबाबा की जयन्ति तो सारी दुनिया में मनानी चाहिए परन्तु भारतवासी ही नहीं मनाते हैं तो दूसरे कैसे मनायें, इसलिए भारत की यह बुरी गति हुई है। मौत भी बुरी गति से यहाँ होता है। वहाँ तो बॉम्बस आदि ऐसे बनाते हैं, जो गैस निकला और खलास। जैसे क्लोरोफार्म लग जाता है। यहाँ तो खून की नदियाँ बहेंगी।" सा.बाबा 9.01.10 रिवा.

"बॉम्बस भी उनको बनाने ही हैं, बन्द होना इम्पॉसिबुल है। कल्प पहले जो हुआ था, सो अब रिपीट जरूर होगा। ... ड्रामा विनाश जरूर करायेगा। रक्त की नदियाँ यहाँ भारत में बहेंगी। सिविलवार में एक-दूसरे को मारते हैं ना। तुम्हारे में भी बहुत थोड़े हैं, जो यह जानते हैं कि अब यह दुनिया बदल रही है।" सा.बाबा 9.01.10 रिवा.

"वास्तव में बाप ने यह यज्ञ रचा हुआ है। इस यज्ञ का किसको पता ही नहीं है। रुद्र ज्ञान यज्ञ रचा ही था कि विनाश के लिए। वे फिर यज्ञ रचते हैं कि विनाश न हो, शान्ति हो जाये। परन्तु ऐसे तो शान्ति हो न सके। ... अभी तुम सतयुग से लेकर कलियुग के अन्त तक सारे चक्र को जानते हो। तुम्हारी बुद्धि में हू-ब-हू ऐसे है, जैसे बाप की बुद्धि में, इसलिए तुमको मास्टर ज्ञान का सागर कहा जाता है।" सा.बाबा 14.07.11 रिवा.

## उतरती कला और चढ़ती कला की हिस्ट्री-जॉग्राफी

बाबा ने कहा है - यह सृष्टि का सारा खेल चढ़ती कला और उतरती कला का है। सतयुग आदि में जब आत्मा परमधाम से नीचे आती है, तब से उसकी उतरती कला आरम्भ हो जाती है और जैसे ही सृष्टि-चक्र का काँटा नये चक्र में प्रवेश करता है, सृष्टि की उतरती कला आरम्भ हो जाती है। इसलिए बाबा कहते हैं - उतरने में 5000 वर्ष लगते हैं और चढ़ने में एक सेकेण्ड लगता है अर्थात् संगमयुग के थोड़े से समय में बाबा ज्ञान देकर आत्माओं को चढ़ती कला में ले जाते हैं अर्थात् जो देवी-देवतायें उतरते-उतरते अन्त में राक्षसी प्रवृत्ति वाले बन

जाते हैं, बाबा आकर उनको फिर से दैवी प्रवृत्ति वाले अर्थात् कलाहीन से 16 कला सम्पूर्ण बनाते हैं। उतरती कला कैसे होती है और फिर चढ़ती कला कैसे होती है, उसकी सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी ज्ञान सागर परमात्मा बताते हैं।

"मनुष्य सब दिन प्रतिदिन सीढ़ी नीचे ही उतरते रहते हैं। अभी कोई सीढ़ी चढ़ नहीं सकता।... यह लक्ष्मी-नारायण भी सीढ़ी नीचे उतरते आये हैं, 16 कला सम्पूर्ण से 14 कला बनें।... सीढ़ी उतरते उतरते बिल्कुल ही पतित बन गये हैं। अब फिर स्वर्ग का मालिक कौन बनाये ? यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है।"

सा.बाबा 4.06.11 रिवा.

"अभी बाप ने तुमको तुम्हारे 84 जन्मों की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाई है। तुम सतयुग में राज्य करते थे, सदा सुखी थे, फिर दिन-प्रतिदिन उतरते-उतरते तमोप्रधान, दुखी, पतित बन गये हो।... बाप कहते हैं - तुम विचार करो कि यह हुनर और कोई में है ? किसी मनुष्य में यह हुनर हो नहीं सकता। किसको विश्व का मालिक बनाना, उसकी युक्ति बेहद का बाप ही बताते हैं।"

सा.बाबा 5.05.11 रिवा.

"हम कैसे सीढ़ी चढ़ते हैं और फिर कैसे उतरते हैं, यह भी तुम बच्चों की बुद्धि में नम्बरवार बैठता है। ईश्वरीय मत से सीढ़ी चढ़ते हो, फिर आसुरी मत से सीढ़ी नीचे उतरते आये हो। ... 84 जन्मों के बाद फिर पहला नम्बर जन्म होगा। अभी तुम ईश्वरीय बुद्धि से सारे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। तुम्हारा यह जीवन बहुत अमूल्य है। इस जन्म की ही बहादुरी है।"

सा.बाबा 30.04.11 रिवा.

"नई दुनिया राइज़ होती है, तो जरूर पुरानी दुनिया फॉल होती है। राइज़ और फॉल कैसे होता है, यह तुम जानते हो। यह एक स्टोरी है - राज्य लेना और राज्य गँवाना। ... बाप समझाते हैं - तुम कैसे सीढ़ी उतरते हो और फिर कैसे चढ़ते हो। ... इन सब बातों को समझने और समझाने के लिए विचार सागर मन्थन करना होता है।"

सा.बाबा 2.04.11 रिवा.

"तुमको 84 जन्मों की सीढ़ी उतरते-उतरते सतो, रजो, तमो में जरूर आना है। फिर बाप आकर तुमको सतोप्रधान बनाते हैं। ... भारतवासी शिव जयन्ति मनाते हैं, परन्तु बाप कब आये, यह कोई नहीं जानता है। ... यह एक अनादि-अविनाशी खेल है। वह है हद का ड्रामा, यह है बेहद का ड्रामा। अभी तुम वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी आदि से अन्त तक जानते हो।"

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

"देहाभिमान के कारण डाउनफाल होता है। ऐसा हो, तब तो बाप आये राइज़ करने। यह

राइज़ और डाउन फॉल का खेल है।... 84 जन्म लेते, तुम सीढ़ी नीचे उतरते आये हो। अभी तुम बच्चे यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानते हो, और कोई इसको नहीं जानते।... समझते साइन्स ने बहुत उन्नति की है, परन्तु यह नहीं समझते कि दुनिया और ही पतित नर्क बन गई है।" सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में सृष्टि-चक्र का सारा ज्ञान है। तुम जानते हो हम कैसे हार खाते हैं, कैसे वाम मार्ग में जाते हैं, कैसे सीढ़ी उतरते हैं, फिर बाप आकर कैसे सीढ़ी चढ़ाते हैं।... बाप कहते हैं - मैंने ही आकर आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना की थी। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी बाप के सिवाए कोई समझा न सके। यह जैसे एक कहानी है।"

सा.बाबा 11.03.11 रिवा.

"अभी बाप दैवी राजाई स्थापन कर रहे हैं। जब सूर्यवंशी हैं तो चन्द्रवंशी नहीं है। सूर्यवंशी घराना पूरा हुआ, फिर चन्द्रवंशी बनते हैं। अभी तुम जानते हो - हम ब्राह्मण वंशी बने हैं, देवता वंशी बनने के लिए। हम राजाई के लिए यह पढ़ाई पढ़ रहे हैं। पहले हम सूर्यवंशी बनेंगे, फिर सीढ़ी नीचे उतरते-उतरते वैश्य, शूद्रवंशी बनेंगे। अभी तुमको अपने 84 जन्मों की स्मृति आई है।" सा.बाबा 20.06.11 रिवा.

"यह सृष्टि-चक्र अनादि-अविनाशी, एक्यूरेट बना-बनाया है, इसको जानना है। सतयुग-त्रेता पास्ट हुए, जहाँ देवी-देवताओं का राज्य चलता है। उसको कहा जाता है स्वर्ग और सेमी स्वर्ग। ... धीरे-धीरे कलायें कम होती जाती हैं। दुनिया जो नई सो पुरानी जरूर होगी। ... यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य, त्रेता में राम-सीता का राज्य चलता है।" सा.बाबा 14.01.11 रिवा.

"यह 84 जन्मों का चक्र है। इस 84 के चक्र में तुम ही आते हो। सभी तो 84 जन्म नहीं लेते हैं। ... यह 84 जन्मों का पार्ट बजाते आत्मा एकदम टायर्ड हो गई है। आत्मायें सीढ़ी उतरते-उतरते सतोप्रधान से तमोप्रधान दुखी बन गये हैं। अभी बाप फिर तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हैं। ... नई दुनिया को स्वर्ग कहा जाता है। अभी यह पुरानी दुनिया बदलनी है। वह सतयुगी राजधानी स्थापन हो रही है।" सा.बाबा 5.11.10 रिवा.

"सतयुग में 1250 वर्ष तक इस (लक्ष्मी-नारायण) डॉयनेस्टी ने राज्य किया था। आगे तुम यह नहीं जानते थे, अभी बाप ने तुम बच्चों को स्मृति दिलाई है कि तुमने आधा कल्प सारे विश्व पर राज्य किया था।... वहाँ से तुम नीचे उतरते आये, अब फिर बाप चढ़ती कला में ले जाते हैं।" सा.बाबा 14.06.10 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और ज्ञानमार्ग-भक्तिमार्ग

सतयुग-त्रेता स्वर्ग कहलाता है, जहाँ ज्ञान की प्रॉलब्ध होती है। देवी-देवताओं का राज्य होता है, प्रकृति सतोप्रधान होती है, आत्माओं को मनवाँच्छित फल देने वाली होती है। द्वापर से जब देवी-देवता वाम मार्ग में जाते हैं तो नर्क का अर्थात् मृत्युलोक आरम्भ होता है, आत्माओं में देहाभिमान आता है, देहाभिमान से विकारों की प्रवेशता होती है, जिससे विकर्म होना आरम्भ होते हैं, जिससे आत्माओं को दुख-अशान्ति होती है और उस दुख-अशान्ति से छूटने के लिए भक्ति मार्ग का आरम्भ होता है। नर्क भी पहले सतोप्रधान होता है, फिर तमोप्रधान नर्क बनता है, ऐसे ही भक्ति भी पहले अव्यभिचारी होती है, फिर व्यभिचारी बनती है अर्थात् पहले एक शिवबाबा की ही भक्ति होती है, फिर अनेकों की भक्ति होती है और कलियुग के अन्त में तो भक्ति के व्यभिचारीपन की भी चरम सीमा हो जाती है।

“दुनिया में मनुष्य, मनुष्य को भक्ति सिखलाते हैं, वे किसको ज्ञान देकर सद्गति नहीं कर सकते। वेद-शास्त्र आदि सब हैं भक्ति मार्ग के। सद्गति तो ज्ञान से होती है। सब पुनर्जन्म को भी मानते हैं। बीच में तो कोई भी वापस जा नहीं सकता। सृष्टि-चक्र के अन्त में बाप ही आकर सबको वापस ले जाते हैं। इतनी सब आत्मायें कहाँ जाकर रहेंगी ? वहाँ भी सबके रहने का अलग-अलग सेक्शन है।” सा.बाबा 26.04.11 रिवा.

“दुनिया में किसको भी पता नहीं कि अभी भक्ति मार्ग खत्म हो, ज्ञान मार्ग जिन्दाबाद होना है। यह तुम बच्चों को ही मालूम है। इसलिए भक्ति मार्ग वाले अभी तक देवताओं के मन्दिर बनाते रहते हैं। तुम ब्राह्मण तो अभी मन्दिर नहीं बनायेंगे। ... तुम बच्चे अभी जानते हो कि हम श्रीमत पर सचखण्ड स्थापन करके, उसके मालिक बनेंगे।” सा.बाबा 21.04.11 रिवा.

“सतयुग में सर्व सुख होते हैं, फिर वह सुख भी प्राय: लोप हो जाता है। आधा कल्प के बाद रावण आकर सब सुख छीन लेता है। ... ब्रह्मा का दिन और ब्रह्मा की रात गाई हुई है। ज्ञान दिन और भक्ति रात होती है। दोनों आधा-आधा होगा ना।”

सा.बाबा 4.04.11 रिवा.

“यह है ज्ञान, वह है भक्ति। यह स्प्रीचुअल नॉलेज स्प्रीचुअल फादर सुप्रीम रूह ही आकर तुमको देते हैं। अभी तुम बच्चों को देही-अभिमानी बनना पड़े। उसके लिए अपने को आत्मा समझ मामेकम् याद करो। शिवबाबा है सर्व आत्माओं का बाप, आत्मायें सब परमधाम से यहाँ पार्ट बजाने आती हैं। सब आत्मायें शरीर धारण का पार्ट बजाती हैं। इसको कर्मक्षेत्र कहा जाता है। यह बड़ा भारी खेल है।” सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

"राजाओं के दरबार में सभी नम्बरवार बैठते हैं। यह बाबा तो बहुत अनुभवी है ना। यहाँ की दरबार है पतित राजाओं की, पावन राजाओं की दरबार कैसी होगी। (वहाँ भी नम्बरवार ही बैठेंगे) ... तुम जानते हो हम स्वर्ग के महाराजा-महारानी बनते हैं, फिर हम गिरते-गिरते भक्त बनेंगे, तो पहले-पहले शिवबाबा के पुजारी बनेंगे। जिसने स्वर्ग का मालिक बनाया, उनकी ही पूजा करेंगे।" सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"अभी तुम ब्राह्मण हो। सतयुगी देवी-देवतायें भी मनुष्य ही हैं, परन्तु उनको देवता कहते हैं। मनुष्य कहने से जैसे उनकी इन्सल्ट हो जाती है, इसलिए देवी-देवता वा भगवान-भगवती कह देते हैं। ... बाप ज्ञान का सागर है। तुमको बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझने से बेहद का राज्य मिल जायेगा।" सा.बाबा 27.10.10 रिवा.

"हम ब्राह्मण हैं, बाप को तो ब्राह्मण नहीं कहेंगे। वह है ऊंच ते ऊंच भगवान। वह है निराकार।... तुम्हारा यादगार देलवाड़ा मन्दिर देखो कैसा अच्छा है। जरूर संगम पर ही दिल ली होगी। आदि देव, आदि देवी और बच्चे तपस्या में बैठे हैं। उनकी हिस्ट्री-जॉग्राफी को तुम्हारे सिवाए कोई जानते नहीं है।" सा.बाबा 29.10.10 रिवा.

"यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, यह नटशेल में सारा चक्र बुद्धि में रहना चाहिए। ... ज्ञान मार्ग में चित्रों की दरकार नहीं है। भक्ति मार्ग में जो चित्र आदि बनाये हैं, उनको करेक्ट करने के लिए चित्र आदि बनाने पड़ते हैं।... वास्तव में यह सब ड्रामा में नूँध है। कोई कुछ करता थोड़ेही है, सब ड्रामा अनुसार होता है।"

सा.बाबा 24.07.10 रिवा.

"तुमको बाप ने समझाया है कि भक्ति मार्ग कैसे चलता है, इस मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ की उत्पत्ति, पालना और संहार कैसे होता है वा ड्रामा का आदि-मध्य-अन्त क्या है? ... यह बच्चों को यह अच्छी रीति समझना चाहिए कि अभी कलियुग का अन्त है, संगम पर ही बाप से वर्सा मिलता है। अभी हम संगम पर हैं, जबकि पुरानी दुनिया बदल नई बन रही है।"

सा.बाबा 8.07.11 रिवा.

"बाप आकर बच्चों को सारे सृष्टि-चक्र का राज़ समझाते हैं। अभी भक्ति मार्ग खत्म होता है। भक्ति से उतरती कला होती है, ज्ञान से तुम्हारी चढ़ती कला होती है। अभी बाप ज्ञान दे रहे हैं। ज्ञान से तुम ऊंच ते ऊंच पद पा लेते हो, फिर उतरती कला आरम्भ हो जाती है और उस प्रॉलब्ध का सुख कम होता जाता है। ... भारत में सबसे जास्ती भक्ति होती है। भारत खण्ड में ढेर मन्दिर हैं।" सा.बाबा 2.07.11 रिवा.

"भारत की ही मुख्य बात है, और सब खण्ड तो हैं ही अलग। भारतवासी ही 84 जन्म लेते

हैं, वे तो आते ही बाद में हैं। ... अभी तक तुम पत्थरों की पूजा करते आये हो। तुम कितना भी माथा मारो, फायदा कुछ नहीं है। ... 84 जन्म लेते-लेते तुम सतोप्रधान से तमोप्रधान पतित बनना ही है, सतयुग के बाद कलियुग जरूर आना है।"

सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

"अभी तुम राजयोग की तपस्या कर रहे हो, उसका यादगार देलवाड़ा मन्दिर है। तुम हो चेतन्य देलवाड़ा, वह जड़ यादगार है। ... अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है, फिर तुम स्वर्ग में जायेंगे, वहाँ ये मन्दिर आदि कुछ भी नहीं होंगे।... शिवबाबा जो तुमको इतना साहूकार बनाते हैं, भक्ति में तुम उनका मन्दिर बनायेंगे। इन बातों को तुम अभी ही जानते हो।"

सा.बाबा 12.07.11 रिवा.

## नई दुनिया और पुरानी दुनिया के निर्णायक बिन्दु

### सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्रॉफी और योगबल-भोगबल

नई दुनिया और पुरानी दुनिया अर्थात् स्वर्ग और नर्क की सीमा रेखा के विषय में विचार करें तो अनेक बातें हैं। दोनों दुनियायें एक सिकके के दो पहलू हैं और दोनों में रात-दिन का अन्तर है, परन्तु इस अन्तर को समझने के लिए मुख्य बात जो है, वह है -योगबल से जन्म और भोगबल से जन्म। नई दुनिया अर्थात् स्वर्ग में जन्म योगबल से होता है, इसलिए उनको देवी-देवता कहा जाता है और उनकी पूजा होती है। पुरानी दुनिया अर्थात् नर्क में जन्म भोगबल से होता है, इसलिए उनको पुजारी कहा जाता है। पुजारी, पूज्य देवी-देवताओं की पूजा करते हैं। ये योगबल क्या है, उसका ज्ञान और उसको कमाने का विधि-विधान परमात्मा ही बताते हैं। उसके लिए ही परमात्मा आकर आत्मा, परमात्मा और सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं। उस योगबल से आत्मा पावन बनती है और नई दुनिया अर्थात् स्वर्ग में जाने की अधिकारी बनती है।

नई दुनिया के सब कार्य योगबल के आधार पर होते हैं, जो योगबल आत्मा संगमयुग पर परमात्मा के साथ योग होने से संचित करती है। द्वापर-कलियुग के सारे कार्य भोगबल से प्रभावित होते हैं। आत्माओं के हर कार्य में वासना समाई हुई होती है। योगबल अर्थात् आत्मा का प्रकृति पर शासन और भोगबल अर्थात् प्रकृति की शक्ति अर्थात् दैहिक शक्ति का आत्मा पर शासन। योगबल का आधार है देही-अभिमानी स्थिति और भोगबल का आधार है देही अर्थात् आत्मिक स्वरूप की विस्मृति।

"हर एक धर्म-स्थापक को पुनर्जन्म लेकर उस धर्म की पालना करनी है, वापस कोई भी जा नहीं सकता। एक भी एक्टर वापस घर जा नहीं सकता, सबको सतो, रजो, तमो में आना ही है।... जब तक बाप न आये, तब तक कोई भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठाचारी बन न सके। भ्रष्टाचारी उनको कहा जाता है, जो विकार से पैदा होते हैं। इसलिए इसको हेल कहा जाता है। हेविन में विकार होता नहीं है।" सा.बाबा 20.05.11 रिवा.

"अभी हम फिर से योगबल से अपना राज्य ले रहे हैं। तुमको बाप ने समझाया है कि योगबल से ही विश्व की राजाई पा सकते हो। बाहुबल से कोई विश्व की राजाई पा नहीं सकते। यह बेहद का ड्रामा बना हुआ है। यह बेहद का खेल है। इस खेल की समझानी बाप ही देते हैं। बाप तुमको शुरू से लेकर इस सारी दुनिया की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाते हैं।"

सा.बाबा 27.04.11 रिवा.

"बाप राजयोग सिखाते हैं, जिस योगबल से तुम विश्व के मालिक बनते हो। अभी यह सूर्यवंशी डॉयनेस्टी स्थापन हो रही है। भारत में सूर्यवंशी डॉयनेस्टी का राज्य था, फिर पुनर्जन्म लेते-लेते चन्द्रवंशी में आये, वृद्धि होती गई। ... तुम वास्तव में सूर्यवंशी थे, फिर चन्द्रवंशी, वैश्य, शूद्रवंशी में आये। यह 84 जन्मों का वृतान्त बाप ही आकर बताते हैं।"

सा.बाबा 25.04.11 रिवा.

"तुम वारियर्स हो योगबल के। तुम योगबल से विश्व के मालिक बनते हो। बाहुबल से भल कोई कितनी भी कोशिश करे परन्तु विश्व पर जीत पा नहीं सकते, विश्व के मालिक बन नहीं सकते। ... बाप कहते हैं - मैं सर्वशक्तिवान हूँ, तुम मुझे याद करने से सतोप्रधान बन जायेंगे। जब सर्वात्मायें सतोप्रधान बन जायेंगी, तब फिर आत्माओं की बारात निकलेगी। यह है शिव की बारात। शिवबाबा के पिछाड़ी सर्वात्मायें मच्छरों सदृश्य भागेंगी।"

सा.बाबा 9.11.10 रिवा.

"यह प्रवृत्ति मार्ग है, सन्यासियों का है निवृत्ति मार्ग। वह अलग है। यह भी बाबा ने समझाया है - अगर शंकराचार्य नहीं आता तो भारत में पवित्रता का अंश भी नहीं रहता, भारत बिल्कुल ही जल मरता। यह भी ड्रामा में नूँध है भारत को थमाने के लिए।... बाबा प्रतिज्ञा करते हैं - अगर तुम निरन्तर याद करने का पुरुषार्थ करेंगे तो तुम्हारे विकर्म विनाश हो जायेंगे, तुम पावन बन जायेंगे।" सा.बाबा 9.07.11 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और योग

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और गीता-ज्ञान

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और विभिन्न शास्त्र एवं धर्म-ग्रन्थ

निराकार ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा शिव का पार्ट इस संगमयुग पर ही चलता है, वही आकर इस सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी का यथार्थ ज्ञान देते हैं, जिस ज्ञान को गीता ज्ञान कहा जाता है और जो योग सिखाते हैं, उसको राजयोग कहा जाता है क्योंकि इस गीता ज्ञान की धारणा और राजयोग के अभ्यास से आत्मायें पावन बनती हैं, विश्व में एक धर्म, एक राज्य की स्थापना होती है, सृष्टि का नया चक्र आरम्भ होता है, सृष्टि सतोप्रधान बनती है, इसलिए इस योग को राजयोग कहा जाता है। इस गीता ज्ञान और राजयोग के द्वारा ही कल्प-वृक्ष की नई कलम लगती है

परमात्मा ज्ञान का सागर है, वही आकर हमको पढ़ाता है, जिस पढ़ाई से आत्मायें पतित से पावन, तमोप्रधान से सतोप्रधान, दुखी से सुखी बनती हैं अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति को पाती हैं, इसलिए ही सभी आत्मायें दुखी होती हैं तो परमात्मा को याद करती हैं।

ज्ञान सागर परमात्मा आकर जो ज्ञान देते हैं और राजयोग सिखाते हैं, उसका विश्व की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक स्थिति पर गहरा प्रभाव पड़ता है अर्थात् सृष्टि में आमूल-चूल परिवर्तन होता है अर्थात् विश्व नर्क से स्वर्ग, रात से दिन, पतित से पावन बन जाता है, जहाँ एक धर्म, एक ही चक्रवर्ती राज्य, एक भाषा होती है। जहाँ आत्मायें मृत्यु-भय और मृत्यु-दुख से मुक्त अमर होती हैं अर्थात् विश्व मृत्युलोक से अमरलोक बन जाता है। इसलिए ही भारत के राजयोग की सारे विश्व में महिमा है।

“हम आत्मा, परमात्मा बाप के बच्चे हैं, सदा इस खुशी में रहना है। देहाभिमान में आने से माया चमाट लगाती है। ... बाप की याद में ही माया से युद्ध चलती है। बाकी वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तो मोस्ट सिम्पुल है। ... पहले-पहले किसको भी यह सबक सिखाना है कि अपने को आत्मा निश्चय कर, बाप को याद करो तो तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जायेंगे।”

सा.बाबा 20.05.11 रिवा.

परमात्मा ने जो गीता ज्ञान दिया है, उसके आंध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक सब प्रकार का ज्ञान है, इसलिए ही लौकिक गीता का भी विश्व में बहुत मान है। इसलिए ही

गीता को सर्वशास्त्रों का माई-बाप कहा जाता है। जिसके लिए बाबा ने कहा है कि मैंने कल्पान्त में जो गीता-ज्ञान दिया है, उसका भक्ति मार्ग की गीता में आटे में नमक के समान कुछ ज्ञान है। "भगवानुवाच - मैं तुमको राजयोग सिखाकर राजाओं का राजा बनाता हूँ। श्रीमत भगवत् गीता है मुख्य। ... वास्तव में ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों को मिलता है, जिससे तुम बाप को और बाप की रचना के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। और तो सब मनुष्य घोर अन्धियारे में हैं, तुमको बाप से रोशनी मिली है। तुम्हारी आत्मा सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जान गई है।" सा.बाबा 6.06.11 रिवा.

"पहले-पहले यह ज्ञान देवी-देवताओं के पुजारियों को और जो गीता पढ़ने वाले हैं, उनको सुनाओ। वे ही इन बातों को समझेंगे। ... कृष्ण को वा ब्रह्मा को भगवान नहीं कहा जा सकता है। सर्व का सद्गति दाता एक ही निराकार शिव है। ... सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की हिस्ट्री-जॉग्राफी दूसरा कोई जानता ही नहीं है। निराकार परमात्मा शिव ही कल्प-वृक्ष का चेतन्य बीजरूप है।" सा.बाबा 23.05.11 रिवा.

"विनाश काले विपरीत बुद्धि कहा जाता है। अब विनाश सामने खड़ा है। गीता है सर्वशास्त्र शिरोमणि श्रीमत भगवत् गीता, उससे ही फिर और सब शास्त्र निकले हैं। तुम जानते हो गीता है डीटी धर्म का शास्त्र। ... बाप कहते हैं - मैं कल्प-कल्प आकर तुम बच्चों को सद्गति देता हूँ। इस समय तुम सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जानते हो।"

सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"बाप मनुष्य सृष्टि का बीज होने के कारण कहते हैं - मैं इस सारे झाड़ के आदि-मध्य-अन्त को जानता हूँ, इसलिए मुझे नॉलेजफुल कहा जाता है। तुमको भी अभी सारी नॉलेज है कि बीज से झाड़ कैसे निकलता है। झाड़ बढ़ने में टाइम तो लगता है।... अन्त में सारा झाड़ जड़जड़ीभूत अवस्था को पाता है, तब मैं आता हूँ और नये झाड़ की कलम लगाता हूँ।"

सा.बाबा 14.03.11 रिवा.

"गीता में जो व्यास ने श्लोक आदि बनाये हैं, वे कोई भगवान ने नहीं गाये हैं। भगवान निराकार जो ज्ञान का सागर है, वह आकर ज्ञान देते हैं। ... कल्प-कल्प मैं आकर समझाता हूँ - देह के सब धर्म त्याग, अपने को आत्मा समझ, मामेकम् याद करो, आत्माभिमानी बनों। ... गीता में ही है मैं आकर राजयोग सिखाता हूँ। आता भी तब हूँ, जब कोई भी राजा का राज्य नहीं रहता है।" सा.बाबा 15.03.11 रिवा.

"पिछाड़ी में ऐसे लड़ेंगे, जो खून की नदियाँ बहेंगी। तुम्हारी तो कोई से लड़ाई नहीं है, तुम योगबल में रहते हो। तुम याद में रहेंगे तो कोई भी तुम्हारी सामने बुरे विचार से आयेंगे, तो

उनको भयंकर साक्षात्कार हो जायेगा और वे झट भाग जायेंगे। ... जो पक्के बच्चे हैं, पुरुषार्थ में अच्छा रहते हैं, जिनकी बुद्धि में है - मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा न कोई। उनकी ही ऐसी स्थिति होगी।”

सा.बाबा 20.02.11 रिवा.

“गीता को ही सर्व शास्त्रमई शिरोमणी कहा जाता है। इस संगमयुग पर ही बाप आकर ब्राह्मण कुल और देवता कुल स्थापन करते हैं। ... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हू-ब-हू रिपीट कहा जाता है। यह ड्रामा रिपीट होता रहता है। हर आत्मा को सतो, रजो, तमो में आना ही है। ... संगमयुग पर मैं आकर तुमको सारे सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी सत्य बताता हूँ।”

सा.बाबा 14.01.11 रिवा.

“अभी सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी धर्म स्थापन हो रहा है। बाप आकर ब्राह्मण कुल स्थापन करते हैं। इसको डिनायस्टी नहीं कहेंगे। यह परिवार है। अभी राजाई न पाण्डवों को है और न कौरवों को है। जिन्होंने गीता पढ़ी होगी, वे इन बातों को जल्दी समझेंगे। यह भी है गीता ज्ञान। ... श्रीकृष्ण तो गीता ज्ञान दे न सके। वह तो होगा सतयुग में। ... गीता का बहुत प्रभाव है। गीता का लॉकेट बनाकर भी पहनते हैं, परन्तु गीता ज्ञान दाता को भूल गये हैं।”

सा.बाबा 8.11.10 रिवा.

“अभी देखो ज्ञान-विज्ञान भवन नाम रखा है। जैसे कि वहाँ ज्ञान-योग सिखाया जाता है। बिगर अर्थ नाम रख देते हैं। ... अभी तुम ज्ञान-विज्ञान को जानते हो। योग से होती है हेल्थ, जिसको विज्ञान कहा जाता है और यह है ज्ञान, जिसमें वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाई जाती है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वह जानना होता है।”

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और परिवर्तन

परिवर्तन इस सृष्टि का अनादि-अविनाशी नियम है अर्थात् इस विश्व में हर क्षण परिवर्तन होता है, जिस परिवर्तन के सिद्धान्त के अनुसार इस विश्व की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी में निरन्तर परिवर्तन होता है। यह परिवर्तन दो प्रकार का होता है। एक होता सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की दिशा में परिवर्तन और दूसरा है तमोप्रधानता से सतोप्रधानता की दिशा में परिवर्तन। सतयुग की आदि से कलियुग के अन्त तक जो परिवर्तन होता है, वह विश्व को और और आत्माओं सतोप्रधानता से तमोप्रधानता की ओर ले जाने वाला परिवर्तन है। पुरुषोत्तम संगमयुग पर परमात्मा आकर जब ज्ञान देते हैं और आत्माओं को

राजयोग सिखाते हैं तो आत्मायें तमोप्रधान से सतोप्रधान बनती हैं और आत्माओं के सतोप्रधान बनने से सारा विश्व सतोप्रधान बन जाता है अर्थात् संगमयुग पर जो परिवर्तन होता है, वह तमोप्रधान से सतोप्रधानता की दिशा में होता है।

सतत परिवर्तन और विविधता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है और जो इस विश्व-नाटक की हिस्ट्री-जॉग्राफी को रोचक बनाता है। इस परिवर्तन में आत्माओं के परिवर्तन का प्रभाव प्रकृति पर और प्रकृति के परिवर्तन का प्रभाव आत्माओं पर पड़ता है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

Q.जब दोनों प्रकार के परिवर्तन निश्चित हैं तो आत्माओं के लिए क्या कृत्य है?

जो आत्मा इस सत्य को समझती है, उसके लिए इस विश्व-नाटक के हर दृश्य को साक्षी होकर देखना और ट्रस्टी होकर पार्ट बजाना ही यथार्थ है और इस विश्व-नाटक के इस सत्य को समझने वाला इस स्थिति को अवश्य धारण करता है।

## दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और विश्व में प्राकृतिक परिवर्तन

वास्तविकता पर विचार करें तो विश्व में प्राकृतिक परिवर्तन का मूलाधार पवित्रता अर्थात् ब्रह्मचर्य ही है। जब विश्व में योगबल से सन्तानोत्पत्ति का विधि-विधान आरम्भ होता है तो भी विश्व में प्राकृतिक परिवर्तन होता है अर्थात् उथल-पुथल होती है और जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं और भोगबल से सन्तानोत्पत्ति का विधि-विधान आरम्भ होता है तो भी प्राकृतिक परिवर्तन होता है, उथल-पुथल होती है।

"अभी बाप आकर सतयुगी राजधानी स्थापन करते हैं। स्थापना होती ही है संगम पर। ... अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। बाप आकर स्वर्गवासी बनाते हैं, फिर नर्क पुरानी दुनिया का विनाश जरूर होना चाहिए। कल्प-कल्प विनाश होता ही है। नई दुनिया सो पुरानी और पुरानी सो नई होती है। ... तुम्हारी बुद्धि में है कि नर्क के बाद स्वर्ग जरूर आयेगा।"

सा.बाबा 25.05.11 रिवा.

"बच्चे कहते हैं - बाबा, हम आपकी श्रीमत पर आपसे फिर से बेहद का वर्सा पा रहे हैं। यह कोई नई बात नहीं है। बच्चों को अभी यह नॉलेज मिली है। बच्चे जानते हैं - हम कल्प-कल्प सुखधाम का वर्सा पाते रहते हैं। ... कल्प-कल्प पाते हैं, फिर धीरे-धीरे गँवाते हैं। बाप ने समझाया है कि यह अनादि खेल बना हुआ है।"

सा.बाबा 11.03.11 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और नये सृष्टि-चक्र की कलम

ये सृष्टि एक चक्र है क्योंकि इसकी सारी हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्रवत् चलती है अर्थात् इस सृष्टि-चक्र की न कभी रचना हुई है और न कभी इसका विनाश होता है। परमात्मा आकर इस सृष्टि-चक्र का ज्ञान देते हैं, जिससे इसकी नई कलम लगती है। परमात्मा के द्वारा दिये गये ज्ञान से किन-किन बातों की कलम लगती है, वह जानना भी अति आवश्यक है। जो इस सत्य ज्ञान को समझ जाते हैं, वे इस विश्व-नाटक का परम सुख अनुभव करते हैं।

इस परमात्म-ज्ञान के द्वारा पुरानी दुनिया से नई दुनिया की कलम लगती है।

शूद्रों से ब्राह्मणों की और फिर ब्राह्मणों से देवताओं की कलम लगती है अर्थात् परमात्मा शूद्र से ब्राह्मण बनाते, फिर ब्राह्मणों को पढ़ाते हैं, जिससे वे देवता बनते हैं। शूद्र से एडवान्स पार्टी और एडवान्स पार्टी से देवताओं की कलम लगती है।

आत्माओं के गुण-धर्म-संस्कारों की कलम लगती है।

अनेक धर्मों से एक सत् धर्म की कलम लगती है अर्थात् जो आत्मायें विभिन्न धर्मों में परिवर्तित हो गई हैं, वे पुनः इस सत् धर्म में परिवर्तित होती हैं। फिर द्वापर से इस देवी-देवता धर्म की आत्मायें जो वाम मार्ग में चली जाती हैं, उनसे विभिन्न धर्मवंशों की कलम लगती है अर्थात् शाखायें-प्रशाखायें निकलती हैं।

राजाई की भी कलम लगती है। कलियुग के अन्त में सारे विश्व में प्रजातन्त्र की राज-व्यवस्था होती है, जो राजतन्त्र के बाद ही आई है। परमात्मा आकर राजतन्त्र की राज-व्यवस्था स्थापन करते हैं अर्थात् प्रजातन्त्र से राजतन्त्र की कलम लगाते हैं।

नर्क से स्वर्ग की और स्वर्ग से नर्क की कलम लगती है। संगम पर परमात्मा आकर नर्क से स्वर्ग की कलम लगाते हैं, फिर द्वापर से जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं तो स्वर्ग से नर्क की कलम लगती है। त्रेता के बाद जब द्वापर की आदि होती है, तो जरूर त्रेता के अन्त में ही आत्माओं के गुण-धर्म और संस्कारों में परिवर्तन होता होगा, तब ही वे द्वापर से वाम मार्ग में जाते हैं।

रावणराज्य से रामराज्य की और रामराज्य से रावणराज्य की कलम लगती है।

इस विश्व का भौगोलिक परिवर्तन होता है, जिससे भौगोलिक परिवर्तन की भी कलम लगती है। कल्पान्त में अनेक भूभाग जलमग्न हो जाते हैं, पृथ्वी अपनी धूरी पर 90 अंश पर सीधी होती है तो अनेक भूभाग जो अभी हैं, वे जलमग्न हो जाते हैं। ऐसे ही द्वापर आदि में भी परिवर्तन होता है। यथार्थता को देखें तो भौगोलिक कलम का यह सिद्धान्त हर क्षण चलता है।

रामराज्य, रावण राज्य का ज्ञान संगमयुग पर ही आत्माओं को होता है। आत्मायें रावण सम्प्रदाय से निकलकर राम सम्प्रदाय में आती हैं अर्थात् रावण की सेना से निकल, राम की सेना में आते हैं। संगम पर ही यादव-कौरव-पाण्डव तीनों इकट्ठे होते हैं।

वे अनुभव करती हैं कि उनको बाबा की मदद पहले से ही थी। द्वापर से जब आत्मायें विकारी बनती हैं तो जरूर विकारी बनने से पहले कुछ-कुछ भक्ति का अंश आता होगा। बाबा भी कहते हैं कि जिन्होंने बहुत भक्ति की होगी, वे ही ज्ञान में भी पहले आयेंगे। ब्रह्मा बाबा की जीवन भी इसके लिए दर्पण है।

"अभी तुम अजुन थोड़े हो, वृद्धि होती रहेगी, आगे चलकर तुम बहुत हो जायेंगे।... जो आकर यह नॉलेज लेंगे, वे समझेंगे कि अभी हमने ज्ञान सागर बाप से सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज पाई है।... अभी तुमको मालूम पड़ा है कि हम विश्व के मालिक थे, तो तुम्हारी बुद्धि में बड़ा अच्छा नशा रहना चाहिए, बाप को और सृष्टि-चक्र को याद करते रहना चाहिए।" सा.बाबा 11.03.11 रिवा.

"झाड़ में देखो - एकदम तमोप्रधान दुनिया के अन्त में ब्रह्मा खड़ा है, फिर वही नीचे तपस्या कर रहे हैं। सतयुग में इन लक्ष्मी-नारायण की डॉयनेस्टी चलती है। सम्वत् भी इन लक्ष्मी-नारायण से गिना जायेगा। ... बाप कहते हैं - मैं एक ही बार स्वर्ग की स्थापना करने आता हूँ। यह एक ही दुनिया है, जिसका चक्र फिरता रहता है।"

सा.बाबा 3.12.10 रिवा.

"अभी झाड़ कितना बड़ा है, कितनी टाल-टालियाँ निकलती रहती हैं, कितने धर्म फैल रहे हैं। पहले तो सारे विश्व में एक मत, एक धर्म, एक राज्य था। सारे विश्व पर इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। यह भी तुमको अभी मालूम पड़ा है कि हम ही सारे विश्व के मालिक थे, फिर 84 जन्म भोग कंगाल बनें। अभी फिर हम विश्व के मालिक बनते हैं। अभी तुम काल पर जीत पहनते हो।" सा.बाबा 3.12.10 रिवा.

भक्ति से ज्ञान मार्ग की और ज्ञान मार्ग से भक्ति मार्ग की कलम लगती है। जो आत्मायें ज्ञान में आती हैं।

"आत्माओं का परमात्मा के साथ मेला यहाँ लगता है। सेन्टरों पर आत्मा-परमात्मा का मेला नहीं कहेंगे। ... उन मेलों में मनुष्य मेले होते हैं, उनको आसुरी मेला कहा जाता है। यह है ईश्वरीय मेला, इससे तुम उज्ज्वल बनते हो। ... अभी ड्रामा अनुसार तुम इस मेले में आये हो। यह भी ड्रामा में नॅध है। धीरे-धीरे वृद्धि होती रहेगी। अभी तुम्हारा जो पार्ट चल रहा है, वह कल्प बाद फिर चलेगा।" सा.बाबा 28.05.10 रिवा.

# विश्व में दैवी राज्य, दैवी सभ्यता और नग्न सभ्यता अर्थात् आदिवासी सभ्यता

Q.बाबा ने हमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का स्पष्ट ज्ञान दिया है, जो हमारी पढ़ाई का मूलाधार है। तो जब सृष्टि-चक्र के आदि में दैवी सभ्यता, दैवी राज्य था तो विश्व में प्राय: सभी खण्डों में ये जो नग्न-सभ्यता अर्थात् आदिवासी सभ्यता किसी न किसी रूप में पाई जाती है, इसकी आदि कहाँ से हुई, इसका कारण क्या बना ? क्या ये नग्न-सभ्यता के आदिवासी दैवी सभ्यता के सदस्य हैं या नहीं ?

Q.जबकि नई दुनिया के आदि में दैवी सभ्यता होती है, तो विश्व में नग्न सभ्यता का प्रदुर्भाव कब से होता है, उसका कारण या आधार क्या बना, जब सभी धर्मों की आदि तो दैवी सभ्यता से ही होती है ?

वास्तव में दुनिया के सभी खण्डों के आदिवासी या नग्न-सभ्यता वाले दैवी सभ्यता या देवी-देवता धर्म के ही होंगे क्योंकि उसके पहले और कोई सभ्यता थी नहीं। जब द्वापर के आदि में उथल-पुथल होती है, पृथ्वी की धूरी परिवर्तन होती है तो अनेक खण्डों का नव-निर्माण होता है। पहले जो भू-खण्ड दैवी सभ्यता की राजाइयों के साथ थे, परन्तु उन राजाइयों की राजधानियों से दूर थे, वे ऐसे स्थानों पर चले गये, जहाँ से उनका सम्बन्ध उस राजाई से कट गया और वे समयान्तर में ऐसा जीवन जीने के लिए बाध्य हो गये। तो अवश्य वे सब भी अन्त तक इस दैवी संगठन में अवश्य आयेंगे।

वैसे भी देखे तो देवी-देवताओं ने कोई नया अविष्कार आदि नहीं किया। जो सतयुग के आदि में साइन्स एण्ड टेक्नॉलॉजी थी, वह धीरे-धीरे खत्म होती गई, फिर जब द्वापर आदि में दैवी सभ्यता का पतन हुआ और आसुरी सभ्यता की आदि हुई तो जो उथल-पुथल हुई, उसके कारण इस नग्न सभ्यता का आदि हुआ होगा।

"इस समय खास भारत और आम सारी दुनिया दुर्गति में हैं। बाप आकर दुर्गति से सद्गति में ले जाते हैं। खास तुम सुखधाम में जायेंगे। बाकी सब शान्तिधाम में चले जायेंगे। ... सतयुग में एक ही देवी-देवता धर्म होता है, बाकी सब आत्मायें मुक्तिधाम में चली जाती हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट कहते हैं, तो जरूर एक ही हिस्ट्री-जॉग्राफी होगी, जो रिपीट होती है।"

सा.बाबा 28.09.10 रिवा.

"मनुष्य सब पुकारते हैं कि बाबा आकर हमको पतित से पावन बनाओ। ऐसे नहीं कहते हैं कि आकर वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाओ। यह तो बाप खुद ही आकर सुनाते हैं कि तुम पावन

से पतित कैसे बनें, फिर पतित से पावन कैसे बनेंगे ? हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वह भी बाप बताते हैं। यह 84 का चक्र है, जो फिरता रहता है।"

सा.बाबा 28.09.10 रिवा.

"अभी तुम सब धर्मों का हिसाब निकाल कर बता सकते हो। इब्राहम ने आकर इस्लाम धर्म स्थापन किया, उससे पहले दूसरे कोई धर्म का नाम है नहीं। तुम सब अंगे-अखरे बता सकते हो। तो तुमको कितना नशा रहना चाहिए।"

सा.बाबा 29.09.10 रिवा.

"मनुष्य आवागमन से निकलना चाहते हैं, परन्तु इससे कोई निकल नहीं सकता है। हर एक को अपना पार्ट बजाना ही है। यह अनादि बना-बनाया खेल है, जो रिपीट होता रहता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हू-ब-हू रिपीट होती है। सतयुग में फिर वे ही देवतायें आयेंगे, जो कल्प पहले आये थे। फिर इस्लामी, बौद्धी आदि सब आयेंगे और यह ह्युमन झाड़ बढ़ता जायेगा।"

सा.बाबा 2.10.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और विश्व-नाटक की पुनरावृत्ति

विज्ञान वाले जो महाविस्फोट से यह जानने का प्रयत्न कर रहे हैं कि सृष्टि की रचना कैसे हुई ? अब प्रश्न उठता है कि इस सृष्टि की कभी रचना हुई है और यदि हुई है तो कैसे और किस-किस चीज़ की रचना हुई और क्या वे इस सत्य का पता लगा पायेंगे ? नहीं, क्योंकि इस सृष्टि न रचना हुई है और इसका कभी अन्त होगा। सृष्टि अनादि-अविनाशी है, इसलिए इसकी रचना का करेई प्रश्न ही नहीं उठता है, सृष्टि रचना के विषय में ज्ञान सागर परमात्मा ने सत्य, वैज्ञानिक और तर्कसंगत (Scintific and Logical) उत्तर दिया है। परन्तु साइन्स वाले जिस महाविस्फोट से यह जानने का प्रयत्न कर रहे हैं, उससे यह काम अवश्य होगा कि कल्पान्त में जो तत्वों में तमोप्रधानता आ गई है, संक्रमण हो गया है, वह समाप्त होकर वे अपने मूल स्वरूप अर्थात् सतोप्रधान स्वरूप में अवश्य आ सकते हैं अर्थात् ये काम हो सकता है और होगा भी क्योंकि इसके कारण ही सौरमण्डल में उथल-पाथल होगी। ज्ञान सागर परमात्मा ने जो इस सृष्टि के पुनरावृत्ति का राज़ बताया है, वही सत्य है क्योंकि इस सृष्टि न रचना तो कभी हुई नहीं है परन्तु इसकी कलम लगती है, जो कल्पान्त में परमात्मा आकर लगाते हैं और अभी लगा रहे हैं।

"बाप पहले शूद्र से कन्वर्ट कर ब्राह्मण बनाये, देवता बनाने के लिए पढ़ाते हैं। यह है ही सहज राजयोग की पढ़ाई। ... बाप कहते हैं - बच्चे देही-अभिमानी बनो। तुम अशरीरी आये थे, फिर यहाँ शरीर लेकर पार्ट बजाया।... तुम जानते हो - हम 84 जन्मों का चक्र लगाये नर्कवासी बने हैं, अब फिर से वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। हम फिर से जरूर स्वर्गवासी बनेंगे।" सा.बाबा 25.05.11 रिवा.

"अभी तुम सूक्ष्मवतन, मूलवतन का राज़ भी अच्छी रीति जानते हो। स्थूलवतन में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था अर्थात् हमारा राज्य था। ... अभी तुम बच्चों की बुद्धि में इस सीढ़ी चढ़ने और उतरने के खेल का राज़ बैठ गया है। अभी तुम्हारी बुद्धि में है कि कैसे यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। इसमें हमारा हीरो-हीरोइन का पार्ट है। हम ही हार खाते हैं और हम फिर जीत पाते हैं।" सा.बाबा 27.04.11 रिवा.

"भगवान तो ऊपर निर्वाणधाम में रहते हैं। असुल में हम आत्मायें भी वहाँ ही रहती हैं, यहाँ पार्ट बजाने आती हैं। पहले-पहले हम लक्ष्मी-नारायण के राज्य में थे।... हमने सूर्यवंशी में 1250 वर्ष राज्य किया, वहाँ अथाह सुख था, सभी निर्विकारी थे।... फिर 84 जन्म लेते सीड़ी नीचे उतरते आते हैं। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का चक्र है, जो फिरता रहता है।"

सा.बाबा 6.04.11 रिवा.

"बेहद के बाप को लिबरेटर-गाइड कहा जाता है क्योंकि वह सब आत्माओं को पावन बनाकर वापस घर ले जाते हैं। ... अभी दैवी झाड़ का सेपलिंग लग रहा है। हीरे से कौड़ी बनने में 84 जन्म लगते हैं। फिर नये सिरे से चक्र शुरू होगा। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। ... अभी राजधानी स्थापन हो रही है। सारा मदार तुम्हारे पुरुषार्थ पर है कि राजधानी में जो चाहो, वह पद लो।" सा.बाबा 24.03.11 रिवा.

"तुम्हारी आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट है। यह है बड़ी कुदरत। बाप का भी ड्रामा में पार्ट है। ... इतनी छोटी सी आत्मा में सारे ड्रामा का पार्ट है, जो रिपीट होता रहता है। मनुष्य ये बातें सुनकर वण्डर खाते हैं। ... बाप भी आत्मा है, परन्तु वह परम आत्मा है। उनकी आत्मा में सारे सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है, जो आकर बच्चों को समझाते हैं।" सा.बाबा 7.03.11 रिवा.

"अभी यह गीता के ज्ञान का एपीसोड रिपीट हो रहा है। ... कल्प पहले भी मैंने यह ज्ञान सुनाया था। जिन्होंको सुनाया, उन्होंने ने पद पा लिया, फिर यह ज्ञान प्रायः लोप हो जाता है। अभी तुम चक्र लगाकर आये हो। कल्प पहले जिन्होंने ये ज्ञान सुना है, वे ही यहाँ आयेंगे। अभी तुम जानते हो हम दैवी झाड़ का सेपलिंग लगा रहे हैं, मनुष्य को देवता बना रहे हैं।"

सा.बाबा 28.02.11 रिवा.

"सतयुग का सम्वत् लक्ष्मी-नारायण से शुरू होता है। तुम बच्चों की बुद्धि में 5000 वर्ष का पूरा हिसाब है, जो तुम किसको भी बता सकते हो।... अभी तुमको यह नॉलेज है कि इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी हू-ब-हू रिपीट होती है। तुम जानते हो बरोबर भारत स्वर्ग था, बरोबर अभी तुम स्वर्ग में जाते हो। भारत अविनाशी खण्ड है, जो कब विनाश नहीं होता है। भारत जैसी महिमा और कोई खण्ड की हो नहीं सकती।"

सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

"अभी तुमको स्मृति आई है कि बरोबर हम 5 वर्ष पहले भी बाबा से मिले थे, अभी फिर मिले हैं। ... तुम किसको भी समझा सकते हो कि यह 5000 वर्ष का सृष्टि-चक्र है। कहते भी हैं क्राइस्ट से 3 हजार वर्ष पहले पैराडाइज़ था।"

सा.बाबा 14.02.11 रिवा.

"अभी तुम अपनी हिस्ट्री-जॉग्राफी को भी जानते हो और सब धर्म वालों की हिस्ट्री-जॉग्राफी को भी जानते हो। यह 84 जन्मों की सीढ़ी है। तुम जानते हो हम कैसे स्वर्ग में आते हैं, फिर कैसे उतरते हैं। ... यह सब ड्रामा में तुम्हारा पार्ट पहले से ही नूँधा हुआ है। यह बेहद का ड्रामा है, जो हू-ब-हू रिपीट होता है।" सा.बाबा 15.06.11 रिवा.

"तुम सर्विस करते हो, यह भी नथिंग न्यू। यह अनेक बार किया है, फिर संगम पर यही धन्धा करेंगे, और क्या करेंगे। बाप भी आयेंगे पतितों को पावन बनाने। इसको कहा जाता है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी, जो रिपीट होती रहती है। ... यह भक्ति मार्ग भी ड्रामा में नूँध है। तुम जानते हो सतयुग से लेकर जो पास हुआ, वह सब रिपीट होगा।"

सा.बाबा 1.02.11 रिवा.

"तुमको प्रदर्शनी में लिखना चाहिए कि इस लड़ाई के पहले ज्ञान सागर बाप स्वर्ग का उद्घाटन कर रहे हैं, फिर विनाश के बाद स्वर्ग के द्वार खुल जायेंगे। ... अब बाप तुमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी फिर से रिपीट होनी है। बाप ही पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाते हैं। ये सब समझने की बाते हैं।" सा.बाबा 14.08.10 रिवा.

"कोई भी पतित आत्मा घर वापस जा नहीं सकती। पवित्र जरूर बनना है। शिव की बरात गाई हुई है। पहले तो सुप्रीम बाप को जाना चाहिए। ... बाप कहते हैं - मैं आता हूँ एक सत् धर्म की स्थापना करने, बाकी सभी धर्मों का विनाश हो जाता है। सृष्टि-चक्र को फिर से फिरना ही है। कहा भी जाता है कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। अभी पुरानी दुनिया है, फिर नई दुनिया को रिपीट होना है।" सा.बाबा 2.08.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और मूल्य अर्थात् आत्मा के गुण-धर्म

सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी पर विचार करें तो देखेंगे समयान्तर में आत्माओं के मूल्यों अर्थात् गुण-धर्मों में परिवर्तन होता रहता है। सारे कल्प में जीवात्माओं के गुण-धर्म चार प्रकार के होते हैं। एक हैं आध्यात्मिक मूल्य अर्थात् ईश्वरीय मूल्य, दूसरे हैं दैवी मूल्य, तीसरे हैं मानवीय मूल्य और चौथे हैं आसुरी मूल्य। इन चारो प्रकार के मूल्यों के विषय में यहाँ विचार करते हैं।

### आध्यात्मिक अर्थात् ईश्वरीय मूल्य

आध्यात्मिक अर्थात ईश्वरीय मूल्य संगमयुग पर ही होते हैं, जब परमात्मा इस धरा पर आते हैं और आत्माओं को यथार्थ ज्ञान देते हैं और ईश्वरीय कर्तव्य सिखलाते हैं। आध्यात्मिक मूल्यों को ईश्वरीय मूल्य भी कहा जायेगा क्योंकि आत्मा और परमात्मा एक ही वंश के हैं और आत्मायें जब अपने आत्मिक स्वरूप में होती हैं तो उनमें सारे ईश्वरीय गुण होते हैं। आत्मा और परमात्मा में अन्तर इतना रहता है कि परमात्मा उन गुणों का सागर है और उसमें वे गुण-धर्म सदा काल रहते हैं, परन्तु आत्माओं में वे गुण संगमयुग पर ही होते हैं। ईश्वरीय गुणों में ज्ञान प्रथम गुण है, इसलिए परमात्मा को ज्ञान का सागर कहा जाता है। फिर है पवित्रता। इसलिए ब्राह्मणों के 6 गुण विशेष गाये हुए हैं। ज्ञान लेना और ज्ञान देना, पवित्र बनना और बनाना, दान लेना और दान देना। परमात्मा आकर आत्माओं परिवार का ज्ञान देकर, उनमें विश्व-कल्याण की भावना जागृत करते हैं, जिससे आत्मायें विश्व-कल्याण का कर्तव्य करती हैं। यह विश्व-कल्याण का कर्तव्य संगमयुग पर ही ब्राह्मण आत्मायें करती है, जिससे सर्व आत्माओं का और जड़-जंगम प्रकृति का कल्याण होता है, सब पावन बनते हैं।

### दैवी मूल्य

दैवी मूल्य आत्माओं में सतयुग-त्रेता में होते हैं, जिससे वे मनुष्य देवी-देवता कहलाते हैं। पवित्रता अर्थात् योगबल। सतयुग में सारे कार्य योगबल से होते हैं। आत्माओं में स्वभाविक प्रेम, निर्भयता, निश्चिन्तता, निर्मानिता होती है, जिससे उनके जीवन में सुख-शान्ति रहती है। निर्विकारिता देवी-देवताओं के जीवन का सर्वश्रेष्ठ मूल्य अर्थात् गुण है।

# मानवीय मूल्य और आसुरी मूल्य

द्वापर से जब आत्मायें देहाभिमानी बनते हैं, तो उनमें आसुरी वेल्यू अर्थात् विकारी संस्कार जागृत हो जाते हैं, इसलिए वे जो भी कर्म करते हैं, उसमें कुछ न कुछ विकारों की गन्ध रहती ही है। परन्तु विचारणीय यह है कि जो आत्मायें परमधाम से नई आती हैं, उनमें कुछ समय के लिए मानवीय मूल्य रहते हैं, इसलिए द्वापर-कलियुग में आत्माओं में आसुरी गुण और मानवीय गुणों का समावेश रहता है। आसुरी मूल्यों में राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, आदि-आदि होते हैं, जिससे उनके कर्म-संस्कार स्वयं को भी दुखी करते हैं तो अन्यों के लिए भी दुखदायी होते हैं। परन्तु जो नई आत्मायें परमधाम से आती हैं, उनमें यह राग-द्वेष, भय-चिन्ता, दुख-अशान्ति, ईर्ष्या-घृणा, अहंकार-हीनता, आदि-आदि नहीं होते हैं। धर्म-पिताओं को धर्म स्थापना में अनेक प्रकार के कष्ट सहन करने पड़ते हैं, आत्माओं का विरोध सहन करना पड़ता है, परन्तु वे कब किसके लिए अशुभ नहीं सोचते हैं, किसको श्राप आदि नहीं देते हैं।

"बाप कहते हैं - हे बच्चे, तुमने देखा कि मेरे जीवन में कितना पाप था और कितना पुण्य था। बाप ने हिसाब तो बता दिया है कि तुम्हारे जीवन में आधा कल्प पुण्य, आधा कल्प पाप होते हैं। पुण्य का वर्सा बाप से मिलता है। ... तुम्हारी बुद्धि में आया है - बरोबर हम आधा कल्प पुण्यात्मा थे, फिर आधाकल्प पापात्मा बनें। अभी फिर हमको पुण्यात्मा बनना है। कितना पुण्यात्मा बनें हैं, वह हर एक अपनी दिल से पूछे।"

सा.बाबा 27.05.11 रिवा.

"अच्छे-अच्छे महारथी, ज्ञान सुनाने वाले भी देहाभिमान में आकर क्रोध, लोभ-मोह में आ जाते हैं।... सतयुग में दुख देने वाले कोई जानवर होते नहीं हैं। गायन है - शेर और बकरी एक साथ जल पीते हैं। इन बातों को भी नम्बरवार समझते हैं। कर्मभोग निकल जाये, कर्मातीत अवस्था हो जाये, यह मुश्किल होती है।"

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

"देवी-देवतायें आत्माभिमानी थे, जानते थे कि एक देह को छोड़कर दूसरी लेनी है। बाकी वे परमात्माभिमानी नहीं थे। तुम जितना बाप को याद करेंगे, देही-अभिमानी बनेंगे, उतना बहुत मीठा बनेंगे।... भल कोई-कोई भाषण बहुत अच्छा करते हैं, परन्तु चलन भी तो चाहिए। देहाभिमान आने से फेल हो जाते हैं, वह खुशी और नशा नहीं रहता है। बड़े विकर्म भी उनसे होते हैं।"

सा.बाबा 12.03.11 रिवा.

"वास्तव में नई दुनिया ब्राह्मणों की ही कहेंगे। चोटी ब्राह्मणों की है, परन्तु राजधानी देवी-

देवताओं से शुरू होती है। अभी तुम अपने लिए राजधानी स्थापन करते हो। ... यह 5 हजार वर्ष का खेल है। तुम बच्चे अभी जानते हो हमने 84 जन्म लिए हैं। ... अभी तुमको मास्टर ज्ञान का सागर, प्रेम का सागर, सुख का सागर बनना है।"

सा.बाबा 6.03.11 रिवा.

"हम ईश्वरीय औलाद हैं तो हमारे में कोई आसुरी अवगुण होना नहीं चाहिए। अपनी उन्नति आपही करनी है। ... यह भी जानते हो कि मरना तो सबको है, एक भी रहने का नहीं है। जो डियरेस्ट से डियरेस्ट हैं, वे सब चले जायेंगे। यह सिर्फ तुम ब्राह्मण ही जानते हो। ... तुम ईश्वरीय औलाद को अथाह खुशी होनी चाहिए।"

सा.बाबा 23.06.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और जनसंख्या

कल्पान्त में विश्व में सबसे अधिक जनसंख्या होती है क्योंकि सभी आत्मायें इस रंगमंच पर पार्ट बजाने आ जाती हैं और सतयुग में लक्ष्मी-नारायण के गद्दी पर बैठने के समय सबसे कम जनसंख्या होती है क्योंकि उस समय इस सृष्टि रंगमंच पर कोई और धर्म नहीं होता है। एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म होता है, उसकी भी बहुत थोड़ी अर्थात् 9, 16,108 के लगभग आत्मायें इस रंगमंच पर होती हैं, और सब आत्मायें घर परमधाम में होती हैं, फिर धीरे-धीरे यहाँ पार्ट बजाने आती रहती हैं और जनसंख्या बढ़ती जाती है।

"अभी मनुष्यों की कितनी वृद्धि होती रहती है। धरती तो वही रहती है, धरती तो बढ़ती-घटती नहीं है। बाकी धरती पर मनुष्य कम-जास्ती होते हैं। वहाँ सतयुग में बहुत कम मनुष्य होंगे, दुनिया तो यही होगी। दुनिया कोई छोटी-बड़ी नहीं होती है। अभी तुम श्रीमत पर योगबल से अपना राज्य-भाग्य स्थापन कर रहे हो तो तुम बच्चों को बड़ी खुशी रहनी चाहिए।"

सा.बाबा 6.05.11 रिवा.

"तुम सब ब्रह्मा कुमार-कुमारी हो, तुमको निश्चय है कि हम ब्रह्मा की सन्तान बनें हैं, बाप से सुख का वर्सा लेने के लिए। ... यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। सतयुग में फिर इन लक्ष्मी-नारायण का ही राज्य होगा। यह सृष्टि का चक्र फिरता ही रहता है। ... पहले-पहले सतयुग में देवी-देवताओं का बहुत छोटा झाड़ था।"

सा.बाबा 4.05.11 रिवा.

“अभी तुमको यह ज्ञान है कि एक बाबा हमको पढ़ा रहे हैं। अब यह खेल पूरा होता है। अभी सभी एक्टर्स यहाँ हाजिर हैं, बाबा भी आया हुआ है, रही हुई आत्मायें भी आती रहती हैं। जब सब आ जायेंगे, तब विनाश होगा, फिर बाप सबको साथ ले जायेंगे। सबको वापस घर जाना है, इस पतित दुनिया का विनाश जरूर होना है।”

सा.बाबा 2.05.11 रिवा.

“सतयुग के आदि में 9 लाख मनुष्य थे, फिर वृद्धि होते-होते सतयुग के अन्त में दो-ढाई करोड़ हो गये। फिर त्रेता में 12 जन्म चन्द्रवंशी में लिए। ... फिर द्वापर से रावण राज्य शुरू हुआ। देवतायें जो निर्विकारी थे, वे वाम मार्ग में जाकर विकारी बन गये। ... विकारी बनने से अर्थ-क्वेक आदि हुई, जिससे हीरे-जवाहरातों के महल धरती के अन्दर चले गये।”

सा.बाबा 6.04.11 रिवा.

“मनुष्य शिवबाबा का मन्दिर बनाते हैं, उनकी पूजा करते हैं परन्तु यह नहीं जानते कि वह कब आया, क्या आकर किया। इसको कहा जाता है ब्लाइण्ड फेथ, अन्धश्रृद्धा।... यह सब बड़ी वण्डरफुल बातें हैं। अभी तुम बच्चों की बुद्धि में सारे सृष्टि-चक्र की नॉलेज है। ... तुमको बुद्धि में आता है कि हम 84 जन्म लेते हैं, फिर कम जन्म वाले भी होंगे। ऐसे थोड़ेही कि सब 84 जन्म लेंगे।” सा.बाबा 24.02.11 रिवा.

“भारत में सूर्यवंशी डॉयनेस्टी हा राज्य था, वे सारे विश्व पर राज्य करते थे। उस समय और सभी आत्मायें शान्तिधाम में थी। 9 लाख का गायन भी है।... भारत सबसे ऊंच ते ऊंच खण्ड है। वास्तव में यह सभी का तीर्थ है, क्योंकि पतित-पावन बाप का जन्म स्थान है। जो भी सब धर्म वाले हैं, उन सभी की बाप आकर सद्गति करते हैं।”

सा.बाबा 3.02.11 रिवा.

“ड्रामा में एक्टर्स की लिमिट होती है। यह भी बना-बनाया खेल है। इसमें जितने भी एक्टर्स हैं, उनमें कम-जास्ती हो नहीं सकते। जब सब एक्टर्स स्टेज पर आ जाते हैं, फिर उनको वापस जाना है। जो भी एक्टर्स रहे हुए होंगे, वे सब आते रहेंगे। भल कोई कितना भी कन्ट्रोल करने के लिए माथा मारे, परन्तु कर नहीं सकते। ... जो भी एक्टर्स आने वाले हैं, वे सब यहाँ आकर शरीर धारण करते रहेंगे।” सा.बाबा 2.11.10 रिवा.

“बोलो, अब हम स्थापना कर रहे हैं नई दुनिया की, जहाँ बहुत कम आदमशुमारी होगी। नया झाड़ जरूर पहले छोटा ही होगा, फिर वृद्धि को पायेगा। ... सतयुग में जो राजधानी थी, वह फिर स्थापन हो रही है। राजधानी में सब प्रकार के पार्टधारी होते हैं, वे सब यहाँ ही अपने पुरुषार्थ अनुसार बनेंगे। ... तुम किसको भी समझा सकते हो कि नये विश्व की शुरूआत में

1250 वर्ष तक लक्ष्मी-नारायण की डायनेस्टी का राज्य था।"

सा.बाबा 2.11.10 रिवा.

"सतयुग में फिर कृष्ण होगा। नहीं तो वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होगी। सिर्फ एक कृष्ण तो नहीं होगा, यथा राजा-रानी तथा प्रजा भी होगी। यह भी समझ की बात है। ... स्वर्ग में सभी तो नहीं आयेंगे, न त्रेता में सब आ सकते हैं। झाड़ अहिस्ते-आहिस्ते वृद्धि को पाता रहता है। यह मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ है। परमधाम में है आत्माओं का झाड़।"

सा.बाबा 2.09.10 रिवा.

"सतयुग में कितने थोड़े मनुष्य, कितनी थोड़ी जमीन पर रहते हैं। अभी मनुष्य सृष्टि की हद पूरी होनी है। ऊपर परमधाम में जो आत्मायें हैं, वे सब आती रहती हैं, मनुष्य बढ़ते ही रहते हैं। जब वहाँ से आत्माओं का आना पूरा हो जायेगा, तुम कर्मातीत अवस्था को पायेंगे, फिर आत्माओं को शरीर छोड़कर जाना है। उनका आना पूरा होगा, तुम्हारा जाना होगा। यह समझ की बात है ना कि पहले-पहले हम ही जाकर वहाँ रहेंगे।"

सा.बाबा 6.07.11 रिवा.

"अभी बाबा ने समझाया है सतयुग की आदमशुमारी कितनी होगी, वहाँ बच्चे कैसे जन्म लेंगे। मनुष्य तो कुछ भी समझते नहीं हैं। कोई भी विद्वान, पण्डित, आचार्य नहीं, जो इस ड्रामा के चक्र को समझा सके। ... अभी बाप ने सारे चक्र का राज़ समझाया है, कर्म-अकर्म-विकर्म का भी सारा राज़ समझाया है। सतयुग में कर्म अकर्म हो जाते क्योंकि कोई बुरा कर्म होता ही नहीं है, इसलिए कर्म, अकर्म कहा जाता है। यहाँ जो भी कर्म करते, वे विकर्म हो जाते हैं।"

सा.बाबा 16.07.11 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और पुरुषार्थ

ज्ञान सागर परमपिता परमात्मा सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान देकर आत्माओं को राजयोग सिखाकर विश्व का राज्य अधिकारी बनाते हैं। जो आत्मायें इस हिस्ट्री-जॉग्राफी को समझते हैं, निश्चय कर बाबा की श्रीमत पर पुरुषार्थ करते हैं, वे ही नये कल्प में सतयुग के राज्य अधिकारी बनते हैं। सतयुग अर्थात स्वर्ग में आने का अधिकार प्राप्त करते हैं। ये सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बहुत रुचिकर है, जो इसको समझ लेता है, वह इसके परम सुख को अनुभव करता है।

"बच्चे जानते हैं कि यह पढ़ाई पढ़कर हमको सूर्यवंशी महाराजा-महारानी बनना है। दिल भी सबकी होती है ऊंच पद पाने की, पुरुषार्थ भी करते हैं, परन्तु बनेंगे सब नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार।... बाबा पुरुषार्थ की युक्तियाँ बताते रहते हैं। कमरे में त्रिमूर्ति का चित्र रख दो। याद रहेगा कि शिवबाबा हमको ब्रह्मा द्वारा विष्णुपरी का मालिक बनाते हैं, अभी हम बाबा से विश्व का मालिक बन रहे हैं।" सा.बाबा 21.04.11 रिवा.

"बिड़ला आदि भी नहीं जानते कि इन लक्ष्मी-नारायण ने यह राज्य-भाग्य कैसे और कब लिया। अभी तुम जानते हो तो तुमको बड़ी खुशी होनी चाहिए।... ये सब बातें बुद्धि से समझने और समझाने की हैं। मन्जिल ऊंची है, उसके लिए मेहनत भी करनी है। जो जैसा टीचर है, वह वैसे ही सर्विस करते हैं।" सा.बाबा 21.04.11 रिवा.

"इस नालेज को जानने से कितना खुशी का पारा चढ़ता है। तुम बच्चों का दिमाग पुर हो गया है। नॉलेजफुल बाप से अभी तुमको सारी नॉलेज मिल रही है। फिर हम जाकर लक्ष्मी-नारायण बनेंगे, वहाँ यह नॉलेज नहीं होगी। कितनी गुह्य समझने की बातें हैं।... यह चक्र कैसे फिरता है, यह समझाने में सहज है। नॉलेज के साथ पुरुषार्थ कर याद की यात्रा में भी रहे, यह बहुतों से होता नहीं है।" सा.बाबा 13.04.11 रिवा.

"ऐसे नहीं कि मैं नई सृष्टि रचता हूँ। नहीं, मैं पुरानी को ही नया बनाने के लिए आता हूँ, पुरानी और नई के संगम पर। अभी नई दुनिया बन रही है, पुरानी खलास होनी है। ... तुम तैयार हो जायेंगे तो सारी राजधानी तैयार हो जायेगी। कल्प-कल्प जिन्होंने जो पद पाया है, उस अनुसार उनका पुरुषार्थ चलता रहता है।" सा.बाबा 26.03.11 रिवा.

"तुम अभी यह गुह्य पढ़ाई पढ़ रहे हो, जिसको पढ़कर तुम्हें विद् रेस्पेक्ट पास होना है। यह लक्ष्मी-नारायण विद् रेस्पेक्ट पास हुए हैं। ... अभी मैं तुमको सभी वेदों, शास्त्रों का सार सुनाता हूँ, राजयोग सिखाता हूँ, जिससे तुम यह प्रालब्ध पाते हो। फिर यह ज्ञान खलास हो जाता है। सतयुग में कोई शास्त्र आदि होते नहीं हैं।" सा.बाबा 9.03.11 रिवा.

"देखो समय बदलता रहता है और बदलता रहेगा। दुनिया की हालतें नाज़ुक हो रही हैं और भी होंगी। होनी ही हैं। ... तो नाज़ुक समय तो आना ही है। समय नाज़ुक हो लेकिन आपकी नेचर नाज़ुक नहीं हो। ... जैसा समय वैसा अपने को एडजस्ट कर सको। ये अभ्यास आगे चलकर आपको बहुत काम में आयेगा।... फाइनल पेपर आपका नाज़ुक समय पर होना है।"
अ.बापदादा 26.02.95

"तुम आधा कल्प देहाभिमानी बने हो, अब तुमको इस एक जन्म में देही-अभिमानी बनना है। देह में रहने वाली जो आत्मा है, उसको परमात्मा समझाते हैं। आत्मा ही संस्कार ले जाती

है।... इस भारत में जो सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी थे, वे सब इस समय आकर ब्राह्मण बनेंगे, फिर वे ही देवता बनेंगे। अभी तुमको देही अभिमानी बनना है।"

सा.बाबा 16.02.11 रिवा.

"यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। कहते भी हैं हिस्ट्री मस्त रिपीट। पहले जो आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, वह फिर आयेगा और सब विनाश हो जायेंगे।... विनाश तो होना ही है। इस समय के लिए ही कहा जाता है - किसकी दबी रही धूल में... जो बाप की श्रीमत पर नई दुनिया की स्थापना में अपना तन-मन-धन सफल करेंगे, उनका ही सफल होगा।"

सा.बाबा 11.02.11 रिवा.

"लक्ष्मी-नारायण ने सतयुग की प्रॉलब्ध कहाँ से पाई ? अब तुम बच्चे अच्छी रीति जानते हो कि जरूर इन्होंने पास्ट जन्म में पुरुषार्थ करके ऐसी प्रॉलब्ध बनाई होगी। ... भारत ही नम्बरवन तीर्थ स्थान है। भारत परमपिता परमात्मा का बर्थ-प्लेस है, जो सबको सुख-शान्ति देते हैं। यह राज़ कोई की बुद्धि में बैठता नहीं है।"

सा.बाबा 13.06.11 रिवा.

"जो अच्छी रीति पढ़ते हैं, वे ऊंच बनते हैं। अभी तुम सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी जान गये हो। तुम 84 के चक्र को भी जानते हो। ... बाप कहते हैं - बच्चे, यह युद्ध का मैदान है ना। इसमें होपलेस नहीं होना चाहिए। याद के बल से ही माया पर जीत पानी है।"

सा.बाबा 20.07.10 रिवा.

"तुम यह ज्ञान नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार सबको समझाते रहते हो और वृद्धि को पाते रहते हो। यह सब ड्रामा में पहले से ही नूँध है। ड्रामा तुमको पुरुषार्थ कराते रहते हैं, तुम करते रहते हो। तुम जानते हो ड्रामा अविनाशी है, उसमें हमारा पार्ट भी अविनाशी है। ... यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी तुम्हारे सिवाए और कोई को मालूम नहीं है।"

सा.बाबा 3.06.10 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और मुक्ति-जीवनमुक्ति

परमपिता परमात्मा इस सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी सुनाकर आत्माओं को पुरुषार्थ कराकर मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव कराते हैं अर्थात् मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं, जो सर्व आत्माओं का जन्मसिद्ध अधिकार है।

"मनुष्य गति-सद्गति का अर्थ भी नहीं समझते हैं। गति-सद्गति माना मुक्ति-जीवनमुक्ति। सो तो

बाप ही दे सकते हैं। इस समय सर्व आत्माओं की गति-सद्गति होनी है। ... यह ड्रामा बना हुआ है, जिसको कोई भी जानते नहीं हैं। यह नॉलेज सिवाए बाप के कोई दे न सके। नॉलेजफुल बाप ही है, वही आकर पढ़ाते हैं। मनुष्य, मनुष्य को कभी सद्गति दे नहीं सकते।"

सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"यह स्वर्ग और नर्क, रामराज्य और रावणराज्य का खेल है, जिसको कोई भी नहीं जानते हैं। शास्त्रों में यह ज्ञान नहीं है। शास्त्रों का ज्ञान है फिलॉसॉफी, भक्ति मार्ग। वह कोई सद्गति के लिए नहीं है। बाप जो ज्ञान देते हैं, वह कोई शास्त्रों की फिलॉसॉफी नहीं है। यह है स्प्रीचुअल नॉलेज। बाप को स्प्रीचुअल फादर कहा जाता है, वह है सर्व आत्माओं का बाप, मनुष्य-सृष्टि का बीजरूप।"

सा.बाबा 7.04.11 रिवा.

"सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी आदि से अन्त तक कोई जानता नहीं है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सब बातें हैं। ... गीता में भी है देह सहित देह के सब धर्म छोड़ अपने को आत्मा समझ, मामेकम् याद करो। ... सदा काल का मोक्ष तो किसी को मिल न सके। यह अनादि-अविनाशी बना-बनाया ड्रामा है, इसलिए सदा काल के लिए कोई मोक्ष को पा नहीं सकता।"

सा.बाबा 14.01.11 रिवा.

"अन्त तक युद्ध चलती रहेगी। अन्त में कर्मातीत अवस्था होगी, तब वह लड़ाई भी शुरू होगी।... बाप कहते हैं - यह ज्ञान सबके लिए है। सब एक बाप को याद करते हैं।... मुक्ति-जीवनमुक्ति सबको मिलती है। सदा काल के लिए मोक्ष तो मिलता नहीं है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को रिपीट करना ही है। बुद्धि कहती है जब सतयुग था तो एक ही भारत था।"

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

"तुमको निश्चय है कि हम इस भारत को श्रेष्ठाचारी जरूर बनायेंगे, तब तो भ्रष्टाचारी दुनिया का विनाश होगा। ... यह किसको पता नहीं है कि शान्तिधाम अलग है, सुखधाम अलग है। सुखधाम में बहुत थोड़े मनुष्य होते हैं। ... वहाँ कोई शान्ति माँगते नहीं है। कर्म तो वहाँ भी करते हैं, परन्तु वहाँ अशान्ति नहीं होती है। मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम दोनों अलग हैं।"

सा.बाबा 4.07.11 रिवा.

## सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और रामराज्य-रावणराज्य

इस सृष्टि रंगमंच पर सारे कल्प में दो प्रकार का राज्य चलता है, एक है रामराज्य और दूसरा है रावण राज्य। जिसको भिन्न नाम रूप से याद किया जाता है। यथा दैवी राज्य,

आसुरी राज्य आदि। इस प्रकार विचार करें तो यह सृष्टि-चक्र दो भागों में विभाजित है। एक रामराज्य, दूसरा रावण राज्य; एक स्वर्ग और दूसरा नर्क; एक दैवी राज्य और दूसरा है आसुरी राज्य। दोनों की हिस्ट्री-जॉग्राफी में रात-दिन का अन्तर है।

"इस दुनिया साकार वतन में दो का राज्य चलता है। राम राज्य और रावण राज्य। आधा कल्प है राम राज्य और फिर आधा कल्प रावण राज्य। ... अभी यह है पुरानी दुनिया और नई दुनिया का संगम। तुम अभी संगम पर हो। ... अभी तुम्हारी बुद्धि में सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी चक्र लगाती रहती है। इस समय सब तमोप्रधान है, इसको क़यामत का समय कहा जाता है।"

सा.बाबा 7.02.11 रिवा.

"सतयुग में लक्ष्मी-नारायण का राज्य, त्रेता में राम-सीता का राज्य चलता है। यह हुआ आधा कल्प, दो युग पास्ट हुए, फिर आता है द्वापर-कलियुग। द्वापर से रावण राज्य शुरू होता है, देवतायें वाम मार्ग में चले जाते हैं तो विकार की सिस्टम चलने लगती है। ... सतयुग में भी पार्ट बजाते हैं, कर्म तो करते हैं ना, परन्तु वहाँ विकर्म नहीं होता, इसलिए उनके कर्मों को अकर्म कहा जाता है।"

सा.बाबा 14.01.11 रिवा.

"तुम बच्चे अभी माया पर जीत पाते हो। इसको कहा ही जाता है हार और जीत का खेल। ... बाप माया पर जीत पहनाये, पूज्य देवता बनाते हैं, फिर तुम माया रावण से हार खाकर पुजारी बनते हो। ... सतयुग-त्रेता में पूजा होती नहीं है। वह है पूज्य घराना। फिर द्वापर से शुरू होता है पुजारी घराना। तुम द्वापर से पुजारी बनते हो। इस समय सब पुजारी हैं।"

सा.बाबा 8.11.10 रिवा.

"बाबा ने झाड़ पर भी समझाया है। यह सृष्टि अनेक धर्मों का झाड़ है। अभी एक सत् धर्म की स्थापना और अनेक धर्मों का विनाश होता है। अभी रावण को जलाते हैं और दशहरा मनाते हैं। ... जो सारे विश्व की सेवा करते हैं, मनुष्य भक्ति में उनकी माला सुमिरण करते हैं। भारतवासी दशहरे के बाद फिर दीपावली मनाते हैं।"

सा.बाबा 16.10.10 रिवा.

"बाप ने बच्चों को बताया है - मैं आकर रामराज्य की स्थापना करने के लिए रावण पर विजय पहनाता हूँ। बच्चे जानते हैं - रामराज्य और रावण राज्य इस पृथ्वी पर ही होता है।... रावण राज्य भी सारे विश्व पर है और रामराज्य भी सारे विश्व पर होता है। रावण राज्य में कितने करोड़ मनुष्य हैं और रामराज्य में कितने थोड़े मनुष्य होंगे, फिर धीरे-धीरे वृद्धि को पाते रहेंगे।"

सा.बाबा 16.10.10 रिवा.

"कल्प-कल्प मैं तुम आत्माओं को पढ़ाने आता हूँ, तुमको ही राजाई देता हूँ। फिर तुम रावण

राज्य में चले जाते हो। ... अभी बाप द्वारा पैराडाइज़ की स्थापना हो रही है, उसके लिए यह महाभारत लड़ाई भी खड़ी है।" सा.बाबा 11.08.10 रिवा.

"अभी तुम मीठे बच्चे समझते हो, हम ईश्वरीय सन्तान हैं। यह पक्का निश्चय है ना। तुम ब्राह्मण समझते हो हम ईश्वरीय सम्प्रदाय स्वर्गवासी विश्व के मालिक बन रहे हैं। ... सतयुग में है दैवी सम्प्रदाय, कलियुग में है आसुरी सम्प्रदाय। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर आसुरी सम्प्रदाय से बदली हो दैवी सम्प्रदाय बनते हो। अभी तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय के हो। ... इससे भारी वस्तु (बड़ी प्राप्ति) कोई होती नहीं।" सा.बाबा 23.06.10 रिवा.

"यह जो कर्म की भोगना, बीमारी आदि होती है, यह है रावण के कारण। रावण की प्रवेशता होने के कारण मनुष्य जो भी कर्म करते हैं, वह विकर्म हो जाता है। सतयुग में रावण होता नहीं है। यह सुख-दुख का खेल बना हुआ है। इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का किसको भी पता नहीं है। ... यह लक्ष्मी-नारायण सतयुग में राज्य करते थे, संगम पर इन्होंने राजयोग सीखकर यह पद पाया है। यह सबको समझाना है।"

सा.बाबा 29.06.11 रिवा.

"जो पक्के-पक्के बच्चे हैं, वे समझते हैं हम बाबा से बेहद का वर्सा लेने के लिए यहाँ बैठे हैं। अभी हम ब्रह्मा द्वारा बेहद के बाप के बनें हैं। ... बाप कहते हैं - मैंने तुमको बेहद का वर्सा दिया था, स्वर्ग में भेजा था, फिर तुमसे माया ने छीन लिया, अब फिर देता हूँ। बाप वर्सा देते हैं, माया छीन लेती है। यह अनेक बार खेल हो चुका है और होता रहेगा। इसका आदि-अन्त नहीं है।" सा.बाबा 30.06.11 रिवा.

"अभी तुम्हारा ये ईश्वरीय परिवार है। बाप कहते हैं - जो अपने को आत्मा समझ बाप को याद करते हैं, वे ईश्वरीय परिवार के हैं। अगर देहाभिमान में आकर भूल जाते हैं तो आसुरी परिवार के हो गये। एक सेकेण्ड में ईश्वरीय परिवार के और फिर एक सेकण्ड में आसुरी परिवार के बन जाते हो। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे।"

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

"भारत में दैवी वर्ण था, अभी आसुरी वर्ण है। यह है संगम, अब तुमको आसुरी से दैवी वर्ण में जाना है। बरोबर यह महाभारत लड़ाई वही है, जो गाई हुई है।... मूल बात है गीता की। गीता में शिव के बदले कृष्ण का नाम डाल दिया है, इसलिए गीता खण्डन हुई तो सब शास्त्र खण्डन हो जाते हैं। ... यह भी तुम जानते हो - रामराज्य और रावणराज्य यहाँ ही होता है। अभी रावणराज्य है, तब तो रामराज्य चाहते हैं।"

सा.बाबा 14.07.11 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और राज-व्यवस्था (राजशाही)

इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी को हम विचार करें तो देखेंगे कि इसमें दो प्रकार की राज-व्यवस्थायें चलती हैं। एक है राजशाही (Kingdomship) और दूसरी है प्रजातन्त्र। सृष्टि-चक्र के कलियुग के थोड़े से समय को छोड़कर सारे चक्र में राजशाही की ही राज-व्यवस्था चली है। राजशाही में दो प्रकार के राजायें हुए हैं - एक हैं डबल सिरताज राजायें और दूसरे हैं सिंगल ताज वाले राजायें। डबल सिरताज वाले राजायें सतयुग-त्रेता में होते हैं, जिसको स्वर्ग कहा जाता है और वहाँ राजा-प्रजा सब दैवीगुणों से सम्पन्न देवी-देवता होते हैं। द्वापर से वे डबल सिरताज राजायें और प्रजा वाम मार्ग में जाते हैं अर्थात् देहाभिमानी बनते हैं, तब सिंगल ताज वाले राजायें होते हैं।

"सतयुग में डबल सिरताज राजायें होते हैं, फिर सिंगल ताज वालों की राजाई भी है। अभी वह राजाई भी नहीं रही है। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। तुम बच्चे अभी राजाई के लिए पढ़ते हो। इसको गॉड फादरली युनिवर्सिटी कहा जाता है।... बाप राजयोग सिखलाते हैं, सतयुग के लिए। बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनों। काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे।" सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

"यह ब्राह्मण कुल है। ब्राह्मणों की डॉयनेस्टी नहीं होती है। ब्राह्मण कुल की राजाई नहीं होती है। इस समय भारत में न ब्राह्मणों को राजाई है और न शूद्र कुल वालों को राजाई है। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य चलता है।... अभी संगमयुग है। इस संगमयुग जैसी महिमा और कोई युग की है नहीं। यह है पुरुषोत्तम संगमयुग।" सा.बाबा 23.11.10 रिवा.

"यह ज्ञान जो ब्राह्मण कुल के होंगे, देवता बनने वाले होंगे, उनकी ही बुद्धि में ही बैठेगा। वे झट कहेंगे, कल्प पहले भी हमने यह पढ़ा था, जरूर भगवान पढ़ाते हैं।... किसको भी बोलो - यह है बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी, यहाँ वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाई जाती है।... यह लक्ष्मी-नारायण भारत में ही राज्य करके गये हैं, अब नहीं हैं।... अभी बाप फिर से आया है, यह राज्य-भाग्य देने के लिए।" सा.बाबा 13.11.10 रिवा.

"तुम जानते हो - सारे विश्व में हमारी राजधानी होगी। यह तो अभी पंचायती राज्य है। पहले थे डबल ताजधारी, फिर एक ताज वाले राजायें हुए, अभी है नो ताज। बाबा ने मुरली में कहा था कि यह भी चित्र बनाओ - डबल सिरताज राजाओं के आगे सिंगल ताज वाले राजायें माथा झुकाते हैं। अभी बाप कहते हैं - मैं तुमको राजाओं का राजा डबल सिरताज बनाता हूँ। इसमें पहली मुख्य बात है पावन बनने की।" सा.बाबा 3.11.10 रिवा.

"तुम्हारी परमधाम से आने से अर्थात् नई दुनिया सतयुग के आदि से ही राजाई शुरू हो जाती है। और धर्म वालों की राजाई बाद में होती है, पहले नहीं होती है।... यह किसको भी बुद्धि में नहीं आता है कि अभी कलियुग में तो राजाई है नहीं, फिर सतयुग में इतनी राजाई कहाँ से आई। कलियुग अन्त में इतने ढेर धर्म हैं, फिर सतयुग में एक धर्म, एक राज्य कैसे हुआ ?"

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

"सतयुग में डबल सिरताज राजायें होते हैं, फिर सिंगल ताज वालों की राजाई भी है। अभी वह राजाई भी नहीं रही है। अभी तो प्रजा का प्रजा पर राज्य है। तुम बच्चे अभी राजाई के लिए पढ़ते हो। इसको गॉड फादरली युनिवर्सिटी कहा जाता है। ... बाप राजयोग सिखलाते हैं, सतयुग के लिए। बाप कहते हैं - काम महाशत्रु है, इस पर जीत पहनों। काम पर जीत पाने से तुम जगतजीत बनेंगे।" सा.बाबा 30.10.10 रिवा.

"यह चक्र शुरू से कैसे रिपीट होता है, यह अभी तुम जानते हो। यह पास्ट, प्रजेन्ट, फ्युचर का चक्र है। जो पास्ट हो जाता है, वह फिर फ्युचर होता है। इस समय तुमको यह नॉलेज मिलती है, फिर तुम राजाई ले लेते हो। इन देवताओं का राज्य चलता है। यह तुम किसको भी कहानी मिसल सुनाओ। बड़ी सुन्दर कहानी बन जायेगी।" सा.बाबा 13.08.10 रिवा.

"बाप को जितना याद करेंगे, उतना पावन बनेंगे और फिर ऊंच पद पायेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। ... नई दुनिया में राजाओं का राजा कैसे बन सकते हैं, उसके लिए बाप ही राजयोग सिखलाते हैं। बाप ही नॉलेजफुल है, परन्तु उनमें कौनसी नॉलेज है, यह कोई नहीं जानते हैं। सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की हिस्ट्री-जॉग्राफी बेहद का बाप ही सुनाते हैं।"

सा.बाबा 19.07.10 रिवा.

"तुम जानते हो - अभी हम पुरुषार्थ कर रहे हैं। जिन्होंने कल्प पहले जो पुरुषार्थ किया था, वह अभी भी कर रहे हैं। हम साक्षी होकर देखते हैं। एक होता है राजाई घराना, दूसरा होता है प्रजा घराना। उसमें कोई बहुत साहूकार होते हैं, कोई कम।... अभी तुमको ज्ञान का तीसरा नेत्र मिला है। बाप ज्ञान का सागर है तो जरूर बच्चों को ज्ञान ही देंगे।"

सा.बाबा 6.07.11 रिवा.

"पावन बनने की युक्ति बाप ही समझाते हैं। यह बाप भी कहते हैं - मैं भी पुरुषार्थ करता हूँ। बच्चों को भी कहता हूँ - बच्चे, एक-दो को सावधान कर उन्नति को पाना है। ... भारत पवित्र राजस्थान था, फिर अपवित्र राजस्थान बना है, अब फिर पवित्र राजस्थान बनना है। भारत सदैव राजस्थान रहा है। आदि से ही राजाई चलती आती है।"

सा.बाबा 14.07.11 रिवा.

# सृष्टि-चक्र की आध्यात्मिक, धार्मिक, राजनैतिक हिस्ट्री-जॉग्राफी और स्थिति (खुशी)

जब ज्ञान सागर परमात्मा से आत्माओं को इस सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान मिलता है और आत्मायें अपने स्वरूप को पहचानती हैं, इस विश्व-नाटक को यथार्थ रीति जानती हैं तो आत्माओं को परमानन्द की अनुभूति होती है क्योंकि आत्मिक स्वरूप परमानन्द-मय है और ये विश्व-नाटक परम सुखमय है। जो आत्मा इसकी हिस्ट्री-जॉग्राफी को यथार्थ रीति जानता है, वही इसके परमानन्द को अनुभव करता है।

"हम इस पुरानी दुनिया में थोड़े दिन के मुसाफिर हैं, अब बाप आया है घर ले जाने के लिए। जब पुरानी दुनिया पूरी होती है, तब बाप आते हैं नई दुनिया बनाने। इन बातों याद कर बच्चों को अन्दर में बहुत गद्गद होना चाहिए। नई दुनिया से पुरानी और पुरानी से नई दुनिया कैसे होती है, इस चक्र का ज्ञान अभी तुम्हारी बुद्धि में है।"

सा.बाबा 1.01.11 रिवा.

"तुम अभी सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त को जान गये हो। दुनिया में कोई इस बात को नहीं जानता है। ... तुम्हारे 84 जन्म पूरे हुए, अब यह चक्र पूरा होता है। तुम्हारी बुद्धि में अब यह सारा ज्ञान टपकता रहता है। ... तुम जानते हो अभी हमको विश्व का मालिक बनना है, तो उसमें सारी डीटी डायनेस्टी होगी। राजा-रानी, प्रजा आदि सब होंगे।"

सा.बाबा 25.11.10 रिवा.

"यह ज्ञान बड़ा वण्डरफुल है। भगवान पढ़ाते हैं, तुम कितने गुप्त स्टूडेण्ट हो। ... ज्ञान सागर बाप पढ़ाते हैं। यह पाठशाला है। पाठशाला को कभी कल्पना नहीं कहा जाता है। स्कूल में हिस्ट्री-जॉग्राफी पढ़ते हैं तो क्या वह कल्पना हुई ? यह भी वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी है ना।"

सा.बाबा 28.11.10 रिवा.

"भारत कितना साहूकार था, अभी कितना गरीब कंगाल बन गया है। फिर हिस्ट्री रिपीट होनी है। तुमको नशा रहना चाहिए कि बाप हमको फिर से डबल सिरताज बनाते हैं। तुम पास्ट और फ्युचर को जान गये हो।... अभी तुम समझते हो हम ब्राह्मण हैं स्वदर्शन चक्रधारी, हमको सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। वहाँ देवताओं को भी यह ज्ञान नहीं रहेगा।"

सा.बाबा 19.11.10 रिवा.

"वण्डर ऑफ दि वर्ल्ड स्वर्ग था। फिर वह सतयुग कहाँ गया, सतयुग से लेकर सीढ़ी कैसे उतरे, सतयुग से कलियुग कैसे हुआ, हमारी उतरती कला कैसे हुई - यह तुम बच्चों की ही

बुद्धि में आयेगा। किसको भी उस खुशी और उमंग से समझाना चाहिए। ... परन्तु यह उमंग उनको आयेगा, जो तकदीरवान होंगे। ये अविनाशी ज्ञान रत्न हैं, इन रतनों का सागर है बाप।"

सा.बाबा 31.08.10 रिवा.

"भक्ति मार्ग में पुकारते हैं - बाबा बन्धन से छुड़ाओ। अभी तुम ज्ञान मार्ग में हो, तुम पुकार नहीं सकते। हम किसके बच्चे बने हैं, वह भी नशा होना चाहिए। परमपिता परमात्मा शिव की हम सन्तान हैं, जिसको ही गति-सद्गतिदाता कहते हैं। ... तुम जानते हो बाप जो ज्ञान का सागर है, वही वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी का सार समझा रहे हैं।"

सा.बाबा 12.07.10 रिवा.

"तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए कि हमको वृक्षपति बाप पढ़ा रहे हैं, हमारे ऊपर बृहस्पति की दशा है।... बाप कल्प-कल्प कल्प के संगमयुग पर आकर तुमको सद्गति दे पुजारी से पूज्य बनाते हैं, फिर तुम आधा कल्प बाद पूज्य से पुजारी बन दुखी हो जाते हो।"

सा.बाबा 7.07.11 रिवा.

"बेहद के बाप से सबको वर्सा मिलता है। वह बाप ही सबका दुखहर्ता, सुखकर्ता है।... सतयुग और कलियुग भारत को ही कहा जाता है। बरोबर भारत स्वर्ग था, जहाँ यह लक्ष्मी-नारायण राज्य करते थे।... तुम लक्ष्मी-नारायण के मन्दिर में जायेंगे तो सारा ज्ञान बुद्धि में आ जायेगा, तुम बहुत हर्षित होंगे। बुद्धि में आयेगा कि इन्होंने यह प्रालब्ध संगम पर पाई थी, बाप ने राजयोग सिखाया था।"

सा.बाबा 6.07.11 रिवा.

"बाप यह ज्ञान देते ही हैं नई दुनिया और पुरानी दुनिया के बीच में, फिर यह ज्ञान प्राय: लोप हो जाता है। देवताओं को यह ज्ञान नहीं होता है। अगर यह चक्र का ज्ञान देवताओं को हो तो उनको राजाई का मज़ा ही न आये। ख्याल चलता रहे कि हमारी फिर यह हालत होगी। परन्तु यह तो ड्रामा बना हुआ है, चक्र को फिरना ही है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है।"

सा.बाबा 7.07.11 रिवा.

# सतयुग की संरचना

## सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी और भौगोलिक परिवर्तन

Q.पृथ्वी क्या है ?

पृथ्वी का अस्तित्व जल और भूभाग दोनों के गुरुत्वाकर्षण और सहयोग से है अर्थात् दोनों को मिलाकर पृथ्वी का अस्तित्व है। जल पृथ्वी पर है और पृथ्वी जल पर है। दोनों एक सिक्के के दो पहलू हैं। पृथ्वी आकाश तत्व में स्थित है अर्थात् पृथ्वी के चारो ओर आकाश है।

"अब यह 5 हजार वर्ष का सृष्टि-चक्र पूरा होता है। कल की बात है, तुम भारत में राज्य करते थे। बरोबर भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था, भारत स्वर्ग था। पावन दुनिया में कोई उपद्रव आदि हो नहीं सकता। ये उपद्रव होते हैं रावण राज्य में।"

सा.बाबा 19.05.11 रिवा.

"सतयुग में जो कल्प पहले हुआ था, वही फिर होगा। सतयुग में इतनी योनियाँ थोड़ेही होंगी। वहाँ थोड़ी वैराइटी होती है, फिर वृद्धि को पाते रहते हैं। जैसे धर्म भी बढ़ते जाते हैं।... सतयुग में देवी-देवताओं को कहते हैं भगवान-भगवती। और कोई खण्ड में कभी भी किसको गॉड-गॉडेज कह नहीं सकते। देवताओं का ही यह गायन है।"

सा.बाबा 13.04.11 रिवा.

"बुद्धि कहती है जब सतयुग था तो एक ही भारत था। भारत में ही स्वर्ग की स्थापना हो रही है। अभी हम श्रीमत पर यह राज्य स्थापन कर रहे हैं। अब बाप कहते हैं - मामेकम् याद करो।... पहले-पहले बाप पर निश्चय कराना है। बाप कहते हैं - मैं हूँ ही नई सृष्टि का रचता, तो बीच में कैसे आऊंगा। मैं आता हूँ पुरानी दुनिया और नई दुनिया के बीच के पुरुषोत्तम संगमयुग पर।"

सा.बाबा 1.11.10 रिवा.

Q.क्या सतयुग-त्रेता में पृथ्वी चौरस (Flat) होगी ?

Q.क्या सतयुग-त्रेता में दिन-रात होंगे या नहीं होंगे ? यदि होंगे तो यहाँ के दिन-रात और वहाँ के दिन-रात में क्या अन्तर होगा ?

Q.सतयुग में पूर्णमासी और अमावस्या होगी या नहीं होगी ?

Q. सतयुग में ऋतु-परिवर्तन होगा या नहीं होगा और यदि होगा तो किस स्थिति में होगा ?

Q. जैसे अभी पृथ्वी अपनी धूरी पर 24 घण्टों में और एक वर्ष में सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाती है तथा चन्द्रमा पृथ्वी के चारो ओर एक मास में चक्कर लगाता है, सतयुग में भी ऐसे

ही लगायेंगे या और कोई विधि-विधान होगा ?

अभी पृथ्वी का 24 घण्टों में अपनी धूरी पर चक्कर लगाने से दिन और रात होते हैं तथा एक मास में चन्द्रमा के पृथ्वी के चारो ओर चक्कर लगाने से पूर्णमासी-अमावस्या होती है। ऐसे ही ऋतु-परिवर्तन तथा दिन-रात का छोटा-बड़ा होना पृथ्वी के सूर्य के चारो ओर चक्कर लगाने से होता है। सतयुग नई दुनिया में भी ये सब अभी जैसे होता है, वैसे ही होगा, परन्तु सब सुखदायी होगा।

पृथ्वी जो अभी अपनी धूरी पर साढ़े तेइस अंश झुकी हुई है, वह 90 अंश पर सीधी हो जायेगी, जिससे पृथ्वी के धरातल में परिवर्तन होगा, जिससे जल का बहाव, जल का स्तर परिवर्तन होगा अर्थात् जो नदियाँ उत्तर से दक्षिण की ओर बहती हैं, वे दक्षिण से उत्तर की ओर बह सकती हैं। पृथ्वी के धरातल में परिवर्तन होने से एक ही देश के विभिन्न भागों का रूप परिवर्तन हो जायेगा। पृथ्वी के 90 अंश पर सीधे होने से विश्व के अनेक भूखण्ड जलमग्न हो जायेंगे और कई नये भूखण्ड अस्तित्व में आयेंगे।

इस सब परिवर्तन का आधार एटॉमिक वार, भूचाल, ज्वालामुखी आदि के कारण होगा। इन सबसे भूमण्डल में गर्मी बढ़ेगी, जिससे ध्रुवों की और ऊंचे पर्वतों की बर्फ पिघलेगी, जिससे सागर का जल स्तर बढ़ जायेगा, जिससे भी अनेक भूखण्ड जलमग्न हो जायेंगे।

अन्त में जब एटॉमिक वार, भूचाल, ज्वालामुखी आदि होंगे, जिससे सौरमण्डल के सब ग्रह अपने मूल स्वरूप में स्थित हो जायेंगे, भूगर्भ सम्पदा अपने मूल अस्तित्व में स्थित हो जायेगी। ओजोन पर्त अपने सम्पूर्ण और सम्पन्न स्थिति में हो जायेगी, जिससे सूर्य की गर्मी जो पृथ्वी पर पड़ती है, वह सन्तुलित होगी, जिससे मौसम सदा सदाबहार होगा, आत्माओं के सुख-शान्ति का आधार होगा।

ये सब परिवर्तन कल्पान्त अर्थात् कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के संगम समय पर अर्थात् नर्क और स्वर्ग के संगम समय पर होता है। इसके विपरीत परिवर्तन जब त्रेता का अन्त और द्वापर की आदि के संगम समय पर अर्थात् स्वर्ग और नर्क के संगम समय पर भी होता है, जब देवतायें वाम मार्ग में जाते हैं। उस समय मुख्यता भूकम्प होगा, जिससे पृथ्वी अपनी धूरी पर जो 90 अंश पर सीधी होगी, वह साढे तेइस अंश पर झुक जायेगी, जिससे जल का बहाव परिवर्तन होगा और कई भूभाग जलमग्न हो जायेंगे और नये अस्तित्व में आ जायेंगे। पृथ्वी के जो खण्ड एक साथ होते हैं, वे विभाजित हो जाते हैं, जिस विभाजन से नये देश और खण्ड अस्तित्व में आते हैं।

इस परिवर्तन की विशेष बात यह होगी कि कल्पान्त में जो परिवर्तन होता है, वह

आत्माओं को और सौरमण्डल को तमोप्रधानता से सतोप्रधानता में लाता है, आत्मायें परमधाम जाती हैं, सृष्टि-चक्र का नया चक्र आरम्भ होता है। इससे पृथ्वी पर अमन-चैन होता है, प्रकृति सुखदायी होती है, आत्माओं को मनवांच्छित फल देती है। परन्तु त्रेता के अन्त और द्वापर आदि में अर्थात् स्वर्ग और नर्क के संगम पर जो परिवर्तन होगा, उसमें सतोप्रधानता की बात नहीं होगी। विश्व में जो पतन की गति है, वह रहेगी ही। उस समय केवल पृथ्वी के धरातल में परिवर्तन होगा, जल स्तर और जल-प्रवाह में परिवर्तन होगा, जिससे पहले वाली दैवी सभ्यता के अवशेष भी विलीन हो जायेंगे, नये भूखण्ड अस्तित्व में आ जायेंगे। कई भूभाग जो पहले एक साथ होंगे, वे विभाजित हो जायेंगे।

**Q.**इस सब परिवर्तन का मूलाधार क्या है ?

यह विश्व-नाटक जड़, जंगम और चेतन प्रकृति के सहयोग से चलता है। आत्मायें चेतन हैं, इसलिए वे सारे परिवर्तन का मूलाधार हैं। जड़-जंगम प्रकृति उनकी सहयोगी हैं अर्थात् आत्माओं के सुख-दुख का पार्ट बजाने का आधार हैं। ये खेल कर्म और फल पर आधारित है, इसलिए आत्माओं के सुख-दुख का आधार या कारण जड़-जंगम प्रकृति भी उनके कर्मों के अनुसार ही बनती है। जब आत्मायें सतोप्रधान होती हैं, उनके कर्म श्रेष्ठ होते हैं तो जड़-जंगम प्रकृति सुखदायी होती है और जब आत्मायें देहाभिमानी बनती हैं, तो उनके कर्म गिरते हैं अर्थात् विकारों के वशीभूत विकर्म होते हैं तो ये जड़-जंगम प्रकृति दुखदायी बन जाती है। द्वापर-कलियुग में एक ही समय पर कर्मों अनुसार प्रकृति किसी को सुख देती है और किसी के दुख का कारण बन जाती है क्योंकि जो आत्मायें परमधाम से अपनी सतोप्रधान स्थिति में आती हैं, उनको ड्रामा के विधि-विधान अनुसार आते ही दुख तो हो नहीं सकता, इसलिए जड़-जंगम प्रकृति उस समय भी उनको सुख देती है। इस जड़ ड्रामा की ये अन्तर्दृष्टि इतनी सूक्ष्म एवं शक्तिशाली है और यथार्थ निर्णय करने में सक्षम है कि उनसे कोई बच नहीं सकता अर्थात् हर आत्मा को उसके कर्मों अनुसार सुख-दुख के रूप में फल मिलता ही है। ये सब गुह्य ज्ञान भी जब ज्ञान सागर परमात्मा कल्पान्त के संगम पर आते हैं, तब ही आत्माओं को उनसे मिलता है। ये ज्ञान ही आत्मा को परमानन्द और परमसुख का अनुभव कराता है, इसलिए ही बाबा बार-बार मुरलियों में कहते रहते हैं कि तुम इस सृष्टि-चक्र के ज्ञान का मनन-चिन्तन करो।

**Q.**अभी पृथ्वी जो अपनी धूरी पर साढ़े तेइस अंश झुकी हुई है, वह सतयुग-त्रेता में 90 अंश पर सीधी होगी ? यदि होगी तो ये साढ़े तेइस अंश से 90 अंश पर और 90 अंश से साढ़े

तेइस अंश पर एकदम होगी या धीरे-धीरे ये परिवर्तन होगा ?
कल्पान्त में जो परिवर्तन होगा, उसमें एटॉमिक वार, भूचाल आदि होगा परन्तु त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगम पर इस परिवर्तन का आधार भूकम्प ही होगा। कल्पान्त में जब परिवर्तन होगा तब आत्माओं को कुछ दुख भी होगा, क्योंकि आत्माओं का हिसाब-किताब चुक्तू होता है। त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगम पर जो परिवर्तन होगा, उसमें आत्माओं को दुख नहीं होगा।

Q.सतयुग में मौसम सदा बहार होगा, प्रकृति सदा सुखदायी होगी, तो वह मौसम कैसा होगा और कैसे होगा अर्थात् उसका आधार क्या होगा अर्थात् किस भौगोलिक परिवर्तन के आधार पर ये सब होगा ?

सतयुग के आदि में संगमयुग पर जो भौगोलिक परिवर्तन होता है, उसमें सभी तत्व अपने सतोप्रधान स्थिति में स्थित हो जाते हैं, सभी भूगर्भ सम्पदायें भी अपने सम्पन्न और सतोप्रधान स्वरूप में आ जाती हैं सूर्य के चारो ओर जो ओजोन पर्त है, जो भूमण्डल के वातावरण को सन्तुलित रखने में मूल भूमिका निभाती है, वह भी अपने सम्पूर्ण सतोप्रधान स्वरूप में हो जाती है, जिससे भूमण्डल में सर्दी-गर्मी का प्रभाव सामान्य रहता है। वातावरण में ग्रीन गैसों आदि का प्रभाव खत्म हो जाता है। अभी भी जब बसन्त ऋतु आती है तो मौसम सदाबहार रहता है, जो आत्माओं के लिए सुखदायी होता है। इस सब में आत्माओं की सतोप्रधान स्थिति की मुख्य भूमिका है। आत्माओं के कर्मो अनुसार फल देने के लिए ही प्रकृति में परिवर्तन होता है।

विश्व-नाटक के विधि-विधान के अनुसार तत्व भी आत्माओं को उनके कर्मों अनुसार फल देते हैं। सतयुग में किसी का कोई विकर्म होता नहीं है, इसलिए तत्व आत्माओं को मनवांच्छित फल देते हैं। आज की दुनिया में भी कई सन्त-महात्माओं, भक्तों के संकल्पों के आधार पर तत्व काम करते हैं। कई राग ऐसे हैं, जिनके गाने से बादल घिर आते हैं। तो सतयुग-त्रेता में तो सब सुकर्मी आत्मायें होती है, तो उनके संकल्पों और पूर्व के सुकर्मों के आधार पर तत्व स्वत: ही सुखदायी रहते हैं।

अन्त में महा-विस्फोट और ब्लैक होल तथा उससे उत्पन्न भूकम्प, सुनामी आदि एवं अणु-युद्ध विश्व की भौगोलिक स्थिति को परिवर्तन करेगा, जिसके निमित्त साइन्स वाले बनेंगे। जिससे सौर-मण्डल के सभी ग्रह-नक्षत्र और भूमण्डल के सभी पदार्थ अपनी सतोप्रधान सम्पन्न स्थिति में आ जायेंगे, जिससे इस विश्व-नाटक का नया चक्र आरम्भ होगा, जो पूर्ण सुख-शान्ति

सम्पन्न होगा। सारे विश्व में सदाबहार मौसम होगा, प्रकृति पूर्ण सुखदायी होगी।

अन्त में सर्व आत्मायें अपने योगबल से या भोगबल से अपने आधे कल्प के हिसाब-किताब पूरे करके पावन सतोप्रधान बनकर परमधाम जायेंगी, फिर जिनका सतयुग के आदि में पार्ट होगा, वे सतयुग के आदि में आकर जन्म लेंगी। सतोप्रधान होने के कारण उनको दैहिक, दैविक, भौतिक सभी प्रकार का सुख स्वभाविक होगा और उसमें दिन-रात, अमावस्या-पूर्णमासी आदि की कोई बात ही नहीं है। अभी कलियुग के अन्त में भी कर्मों अनुसार मनुष्य पूर्णमासी के दिन भी दुख भोगता है, दुखी होता है और कर्मों अनुसार अमावस्या को भी मनुष्य सुख का अनुभव करता है। दिन-रात, पूर्णमासी-अमावस्या आदि का होना भी इस जगत की आवश्यक क्रियायें हैं और ये सब इस विश्व-नाटक की शोभा हैं, सौर-मण्डल की गति-विधियाँ हैं। हाँ, सतयुग में पृथ्वी, सूर्य, चाँद, तारे, प्रकृति, ओजोन पर्त आदि सब अपनी सतोप्रधान स्थिति में होंगे, इसलिए सब कार्य नियमानुसार चलेंगे और आत्माओं के लिए सुखदायी होंगे। विचारणीय यह है कि जब आत्मायें सतोप्रधान होती हैं, तो तत्व उनके लिए सुखदायी होते हैं। विश्व-नाटक का यह विधि-विधान सतयुग के आदि से कलियुग के अन्त तक यथावत् प्रभावित होता है। जिसके लिए बाबा ने भी कहा है कि परमधाम से आई हुई नई आत्मा को अभी भी दुख-अशान्ति हो नहीं सकती क्योंकि उसका कोई विकर्म का खाता नहीं है। अपने पार्ट के आधे समय हर आत्मा सुख-शान्ति की अनुभूति करती है और आधे के बाद कर्मानुसार सुख-दुख पाती है।

## विविध प्रश्न और सम्भावित उत्तर

Q.अन्त में सृष्टि की सफाई का विधि-विधान क्या होगा ?

भारी सुनामी, भूकम्प में सब भू-गर्भ में समा जाना, अति-वृष्टि, बाढ़, विशाल बांधों का फटना - ये सब अन्त में सफाई का आधार बनेंगे। इन सबसे अन्त में जो मनुष्य और प्राणी मरेंगे, उनकी सफाई होगी।

भूकम्प के बाद सभी सौर-मण्डल अपने सतोप्रधान स्वरूप में आ जायेंगे, ओजोन पर्त अपने सतोप्रधान स्वरूप में होगी।

"सतयुग में कोई हंगामा, तूफान आदि नहीं होता है। वहाँ न जास्ती ठण्डी होती और न जास्ती गर्मी होती है। सदैव बहारी मौसम रहता है। ... ड्रामा अनुसार स्वर्ग की स्थापना जरूर होनी है। जैसे दिन के बाद रात, रात के बाद दिन होता है, वैसे कलियुग के बाद सतयुग जरूर होना है।" सा.बाबा 21.03.11 रिवा.

Q.कल्प के संगम पर भूकम्प आदि आते हैं और त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगम पर भी भूकम्प आदि आते हैं, उथल-पाथल होती है, तो दोनों के समय के इन घटनाओं में अन्तर क्या है ?

कल्प के संगम पर जो परिवर्तन होता है, उसमें आत्माओं को दुख भी होता है क्योंकि आत्माओं का सारे कल्प का रहा हुआ हिसाब-किताब चुक्तू होता है, जिससे वे पावन बनकर घर परमधाम वापस जा सकें। परन्तु त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के संगम पर जो परिवर्तन होता है, उसमें भूमण्डल पर परिवर्तन होता है, जिससे पृथ्वी का तो परिवर्तन होता है, परन्तु उसमें आत्माओं को दुख नहीं होता है क्योंकि उनका कोई पाप का खाता नहीं होता है।

कल्प के संगम पर जो परिवर्तन होता है, उसमें सभी तत्व सतोप्रधान स्थिति में आ जाते हैं, परन्तु त्रेता के अन्त और द्वापर के आदि के परिवर्तन में ऐसा नहीं होता है, प्रकृति की सतोप्रधान से तमोप्रधान की ओर की उतरती कला ही होती है। आत्मायें भी वापस परमधाम नहीं जाती हैं, दुनिया में जनसंख्या की वृद्धि ही होती रहती है।

आध्यात्मिक ज्ञान का दाता परमात्मा इस विश्व-नाटक की हिस्ट्री-जॉग्राफी का ज्ञान देते हैं। वैसे हिस्ट्री होती है पास्ट की घटनाओं की, परन्तु परमात्मा भविष्य की हिस्ट्री-जॉग्राफी भी बताते हैं क्योंकि यह सृष्टि एक चक्र है, जो चक्रवत् चलता है, इसलिए भविष्य भी पास्ट है और पास्ट भी भविष्य होगा।

"मनुष्यों के प्लैन और शिवबाबा के प्लैन में रात-दिन का अन्तर है। उनके सब प्लैन मिट्टी में मिल जायेंगे। नेचुरल केलेमिटीज़ होगी, ... इस समय तत्व भी तमोप्रधान हैं, सूर्य भी ऐसी

तपत करेंगे, जो बात मत पूछो। इन नेचुरल केलेमिटीज़ की भी ड्रामा में नूँध है। ... हाहाकार के बाद जयजयकार होगा। यह है अन्त का खूने नाहेक खेल। मौत तो सबका होना ही है।"

सा.बाबा 22.03.11 रिवा.

Q.अब प्रश्न है - क्या ये सब हमारे हाथों में है ?

"बाप कुछ भी लेता नहीं है। शिवबाबा लेकर क्या करेंगे। तुम शिवबाबा की भण्डारी में डालते हो। मैं तो ट्रस्टी हूँ। तुम्हारा लेन-देन का हिसाब सारा शिवबाबा से है। मैं तो पढ़ता हूँ और पढ़ाता हूँ। जिसने अपना ही सब कुछ दे दिया, वह फिर तुम्हारा लेगा क्या! ... बाप तो बहुत समझाते हैं, फिर भी नहीं सुधरते हैं तो कहेंगे उनकी तकदीर। सुधरते नहीं तो ईश्वर की तदबीर भी क्या करे।" सा.बाबा 14.12.10 रिवा.

इसकी सत्यता पर विचार करें तो "सब कुछ हमारे हाथों में है" क्योंकि ये सारा विश्व-नाटक कर्म और फल, पुरुषार्थ और प्रालब्ध पर आधारित है परन्तु इसका दूसरा पक्ष है कि ये अनादि-अविनाशी बना-बनाया खेल है, जो हू-ब-हू पुनरावृत्त होता है, इसलिए "हमारे हाथों में कुछ भी नहीं है" अर्थात् जो अनादि-अविनाशी नूँध है, वही होना है।

"बाप जो समझाते हैं, वह समझ जाये तो खुशी का पारा चढ़ जाये। समझाने वाले का तो और ही पारा चढ़ जाये। बेहद के बाप का किसको परिचय देना कोई कम बात है क्या! ... बाप आत्मा का ज्ञान भी कितना क्लीयर कर समझाते हैं। भल कहते हैं आत्मा बिन्दी है, भृकुटी के बीच चमकता है अजब सितारा। परन्तु यथार्थ रीति किसकी बुद्धि में नहीं है कि आत्मा क्या चीज है।" सा.बाबा 12.12.10 रिवा.

"बाकी मैं आत्मा बिन्दी हूँ, मेरे में 84 जन्मों का पार्ट भरा हुआ है, बाप भी बिन्दी है, उसमें सारा ज्ञान है। उनको याद करना है। यह बात कोई भी समझते नहीं हैं।... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी की नॉलेज बाप ही देते हैं। ... सिर्फ हिस्ट्री-जॉग्राफी जानने से काम नहीं चलेगा। परन्तु पावन कैसे बनें, जिससे सज़ा न खानी पड़े, उसके लिए याद का पुरुषार्थ करना है।"

सा.बाबा 20.04.11 रिवा.

Q.सतयुग में मनुष्यात्माओं के साथ अनेक प्रकार के पशु-पक्षी भी आयेंगे, जो वहाँ की शोभा बढ़ायेंगे, तो प्रश्न उठता है कि मनुष्यात्मायें संगम पर श्रेष्ठ कर्म कर जो प्रॉलब्ध जमा करते हैं, उसके आधार पर सतयुग में आते हैं, परन्तु जो पशु-पक्षी आदि आयेंगे, उनके आने का आधार क्या होगा और वे कैसे पावन बनेंगे ?

इस सब में ड्रामा का पार्ट महत्वपूर्ण है और इसमें हर आत्मा के कर्म और फल का विधि-

विधान है, जो हर योनि की आत्माओं को उनके बौद्धिक स्तर के आधार पर निर्णय होता है। सुख-दुख का विधि-विधान हर आत्मा पर लागू होता है, तब ही उनके पार्ट में अन्तर होता है, जो विश्व-नाटक में विविधता लाता है और ये विविधता ही इस विश्व-नाटक की शोभा है।

मनुष्यात्माओं के संकल्पों के द्वारा जो वातावरण निर्मित होता है, वह पशु-पक्षियों के कर्म-संस्कारों में परिवर्तन का आधार बनता है और उसके आधार पर ही पशु-पक्षी मनुष्यात्माओं को सुख देंगी। जिसके लिए बाबा ने कहा है कि ये सब फर्नीचर है, जैसा आसामी होता है, वैसा ही उसका फर्नीचर होता है। तो सतयुग में भी इस फर्नीचर में विविधता तो होती ही है।

"जिसमें रुहानियत है, उनकी विशेषता यह है कि वे दूर रहते हुए भी आत्माओं को अपनी रुहानियत से आकर्षित कर सकते हैं। जैसे मन्सा शक्ति के आधार से प्रकृति का परिवर्तन वा कल्याण करते हो ना।... मन्सा शक्ति से जैसे प्रकृति को तमोप्रधान से सतोप्रधान बनाते हो, वैसे विश्व की अन्य आत्मायें जो आप लोगों के आगे नहीं आ सकेंगे, उनको... बाप का मुख्य सन्देश मन्सा द्वारा बुद्धि में टच कर सकते हो।" अ.बापदादा 4.08.72

Q.हिस्ट्री में बाबा ने क्या-क्या समझाया है?

Q.जॉग्राफी में बाबा ने क्या-क्या समझाया है?

Q.इस बेहद की हिस्ट्री-जाग्राफी का हमारे वर्तमान जीवन से क्या सम्बन्ध है?

Q.सतयुग-त्रेता की कारोबार चलाने का आधार क्या होगा?

सतयुग-त्रेता की कारोबार अधिकतर संकल्प शक्ति से चलेगी क्योंकि वहाँ स्थूल कर्म इतना नहीं होगा।

"जैसे वाचा से आप डॉयरेक्शन देती हो, वैसे संकल्प से सारे कारोबार चला सकती हो। जैसे साइन्स वाले पृथ्वी से ऊपर तक डॉयरेक्शन देते-लेते रहते हैं। तो क्या श्रेष्ठ संकल्प से कारोबार नहीं चल सकती है? साइन्स ने कापी तो साइलेन्स से ही किया है। जैसे बोलने से बाप को स्पष्ट करते हैं, वैसे संकल्प से सारी कारोबार चले।"

अ.बापदादा 22.11.72

Q.ऊपर से आने वाली आत्मायें चाहे सतयुग में आयें या कलियुग में आयें, वे सब पूर्ण पावन होती हैं, इसलिए उनको पहले-पहले जीवनमुक्ति का पूर्ण सुख होता है और जो आत्मायें संगम पर परमात्मा से ज्ञान पाकर पावन बनने का पुरुषार्थ करती हैं, उनको भी मुक्ति-जीवनमुक्ति के सुख की अनुभूति होती है, परन्तु दोनों के सुख में अन्तर क्या होता है और कौनसा सुख श्रेष्ठ कहा जायेगा?

परमात्मा सर्व का मुक्ति-जीवनमुक्ति दाता है, इसलिए वह सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार देता है। मुक्ति में तो सर्वात्मायें जाती ही हैं परन्तु जीवनमुक्ति में सारे कल्प आत्मायें ऊपर से आती रहती हैं और अपने समय के अनुसार जीवनमुक्ति के सुख का अनुभव करती हैं परन्तु जब आत्मा मुक्ति से आती है तो उसमें जीवनबन्ध अर्थात् दुख-अशान्ति का अनुभव अंशमात्र भी नहीं होता है, इसलिए उसको जो जीवनमुक्ति का सुख मिलता है, वह सामान्य ही अनुभव होता है। जब आत्मायें संगमयुग पर परमात्मा से मिलती हैं, ज्ञान को धारण करके पावन बनने का पुरुषार्थ करती हैं, उस समय उनमें जीवनबन्ध अर्थात् दुख-अशान्ति का अनुभव भी संस्कार रूप में संचित होता है, इसलिए उनको परमात्मा के मिलने से, ज्ञान को धारण कर पुरुषार्थ करने से अपने मूल स्वरूप में स्थित होने पर जो सुख अनुभव होता है, वह विशेष होता है, जो ही मुक्ति-जीवनमुक्ति का यथार्थ सुख है और सारे कल्प में विशेष है। उस अनुभव के कारण ही नये कल्प में दुख-अशान्ति के समय आत्मायें परमात्मा को उसके लिए याद करती हैं।

## विविध ईश्वरीय महावाक्य

"बाप आकर स्वर्ग का वर्सा देते हैं। जो प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा बाप के बनते हैं, वे सब स्वर्ग में जरूर आयेंगे, परन्तु बच्चों को पुरुषार्थ करना है ऊंच पद पाने का। ... अभी तुम समझते हो हम विश्व पर राज्य करते थे। तुम विश्व के मालिक थे, फिर जरूर बनेंगे। हिस्ट्री, जॉग्राफी रिपीट होगी।" सा.बाबा 14.05.11 रिवा.

"क्या कोई की बुद्धि में था कि बेहद का बाप जो स्वर्ग का रचयिता है, वह आकर हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। ... बाप की याद यथार्थ रीति रहे तो सदा खुशी का पारा चढ़ा रहे और कर्मातीत अवस्था हो जाये, परन्तु उसमें टाइम चाहिए। ... अन्त में मधु मक्खियों के समान सब आत्मायें शिवबाबा के पिछाड़ी भागेंगी।"

सा.बाबा 14.05.11 रिवा.

"जो चीज़ होकर गई है, वह फिर से जरूर होनी है। सतयुग होकर गया है, उसमें आदि सनातन देवी-देवताओं का राज्य था, जो अभी नहीं है, वह फिर से जरूर होगा। ... बाप फिर से आये हैं, पावन बनाने। वह कहते हैं - एक मुझ बाप को याद करो, पतितों से बुद्धियोग नहीं लगाओ।... बाप युक्ति बताते हैं कि बाप से कैसे वर्सा पाना है।"

सा.बाबा 5.05.11 रिवा.

"पहले तुम सतोप्रधान थे। भक्ति मार्ग में यज्ञ-तप, दान-पुण्य, तीर्थ आदि करते और ही नीचे

गिरते आये हो।... आज से 5000 वर्ष पहले की बात है, यह भारत स्वर्ग था। उस समय और कोई धर्म नहीं था, सिर्फ एक ही आदि सनातन देवी-देवता धर्म था, जो परमपिता परमात्मा ने स्थापन किया था।" सा.बाबा 3.05.11 रिवा.

"वेद-शास्त्र, यज्ञ-जप-तप आदि करने पाप नाश नहीं होंगे, नीचे ही गिरते आये हो। अभी तुमको ऊपर जाना है।... सतयुग में हीरे-जवाहरातों के महल होते हैं, फिर वे सब प्राय: लोप हो जाते हैं।... साहूकार से ग़रीब, ग़रीब से साहूकार बनना ही है। यह सब ड्रामा बना-बनाया है, जो रिपीट होता रहता है।" सा.बाबा 26.04.11 रिवा.

"सिर्फ वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाने से माला का दाना नहीं बन सकते हैं। माला का दाना बनेंगे बाप की याद से। ... आत्मा, परमात्मा का राज नहीं जानते, यथार्थ रीति याद ही नहीं करते हैं, इसलिए अवस्था डगमगाती रहती है क्योंकि देहाभिमान बहुत है। देही-अभिमानी बनें, तब माला का दाना बन सकें। ऐसे नहीं कि वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं, इसलिए माला में नज़दीक आ जायेंगे।" सा.बाबा 20.04.11 रिवा.

"सतयुग में लक्ष्मी-नारायण को वजीर आदि होता नहीं हैं। उनको किसकी राय लेने की दरकार नहीं होती है। ... यह है वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी। तुम समझते हो - अभी यह नाटक पूरा होता है, हमको याद की यात्रा में रहना है।... याद की यात्रा से ही विकर्म विनाश होंगे, फिर हम यह शरीर छोड़कर घर चले जायेंगे, उसको स्वीट होम कहा जाता है।"

सा.बाबा 11.04.11 रिवा.

"दुनिया में सब अधूरी हिस्ट्री-जॉग्राफी जानते हैं। सतयुग-त्रेता की हिस्ट्री-जॉग्राफी को कोई नहीं जानते। ... रचता बाप को ही नहीं जानते, तो रचना के आदि-मध्य-अन्त को भी जाने कैसे। अभी तुमको बाप यह सारा राज़ बताते हैं। शिवबाबा भारत में ही दिव्य जन्म लेते हैं, जिनकी शिवजयन्ति भी भारत में मनाते हैं।"

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

"शिवजयन्ति भारत में मनाते हैं। शिव ठहरा सर्व आत्माओं का बाप। आत्मा अविनाशी है, वह एक शरीर छोड़ दूसरा ले पार्ट बजाती है। यह 84 जन्मों का चक्र है, जो फिरता रहता है।... बाप ही रचता और रचना के आदि-मध्य-अन्त का राज़ अर्थात् सृष्टि-चक्र की हिस्ट्री-जॉग्राफी बताते हैं।... भारतवासी अपने धर्म को भूल गये। यह भी ड्रामा अनुसार होना ही है।"

सा.बाबा 8.04.11 रिवा.

"तुमने स्थापना और विनाश का जो साक्षात्कार किया है, वह फिर इन आँखों से देखेंगे। स्थापना का भी साक्षात्कार किया है, फिर प्रैक्टिकल में राजाई भी देखेंगे। तुम बच्चों को तो

बहुत खुशी होनी चाहिए। ... तुम जानते हो हम शिवबाबा के बने हैं, शिवबाबा हमको वर्सा दे रहे हैं। तुम ब्राह्मण बने हो देवता बनने के लिए, दूसरे कोई तो बन न सकें।”

सा.बाबा 6.03.11 रिवा.

“भारतवासियों के ही 84 जन्म होते हैं। संगमयुग पर बाप आकर राजधानी स्थापन करते हैं। तुम बच्चों ने बाप के द्वारा ये सब बातें समझी हैं। जब अच्छी रीति ये सब बातें समझें, बुद्धि में बैठें, तब खुशी भी रहे। यह पढ़ाई है सोर्स ऑफ इनकम।”

सा.बाबा 6.03.11 रिवा.

“विश्व की बादशाही सहज थोड़ेही मिल सकती है, कुछ तो मेहनत करनी होगी ना। याद में ही मेहनत है। बहुत याद करने वाले ही कर्मातीत अवस्था को पाते हैं। ... आगे भी योगबल से ही विकर्मों को जीता था। यह लक्ष्मी-नारायण इतना पवित्र कैसे बनें, जबकि कलियुग के अन्त में कोई भी पवित्र नहीं है, कहाँ भी राजाई नहीं है।”

सा.बाबा 28.02.11 रिवा.

“जो पूज्य थे, वे ही अभी पुजारी बने हैं। रावण राज्य में हम पुजारी बने हैं, रामराज्य में पूज्य थे। अभी संगमयुग है। अभी रावणराज्य का अन्त है, हम फिर पुजारी से पूज्य बनते हैं, बाप को याद करने से। औरों को भी यह रास्ता बताना है। ... तुम खुद भी इस ज्ञान का चिन्तन करते रहो तो तुम्हारा बेड़ा पार हो जायेगा।”

सा.बाबा 26.02.11 रिवा.

“इतनी शक्ति अपने में जमा की है, जो जमा की हुई शक्तियों के आधार से वायुमण्डल वा परिस्थिति मुझ मास्टर सर्वशक्तिवान को हिला नहीं सकती, अपनी स्थिति को एकरस वा अचल-अटल बना सकते हैं, वे हाथ उठायें। यह बात तो स्पष्ट है कि दिन-प्रतिदिन परिस्थितियाँ अति तमोप्रधान बननी ही हैं। ... अति तमोप्रधान के बाद ही सतोप्रधान बनने वाला है।”

अ.बापदादा 12.07.72

“अभी तुम बच्चों को बुद्धि की खुराक मिल रही है। बुद्धिमानों की बुद्धि बेहद का बाप खुराक दे रहे हैं। यह है पढ़ाई। इसको ज्ञानामृत भी कहा जाता है।... ये सब बुद्धि से समझने की बातें हैं। ... यह बना-बनाया नाटक है, जो फिरता रहता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होती है। यह भी तुम अभी जानते हो।” सा.बाबा 23.02.11 रिवा.

“एक बाप की कितनी बड़ी महिमा है। उनको कहा ही जाता है सर्व का दुखहर्ता, सुखकर्ता। सतयुग में 5 तत्व भी सुख देने वाले होते हैं।... यह भी ड्रामा बना हुआ है। तुम जानते हो यह वही 5 हजार वर्ष पहले वाली लड़ाई है, अभी स्वर्ग की स्थापना हो रही है तो बच्चों को सदैव

खुशी में रहना चाहिए।" सा.बाबा 9.02.11 रिवा.

"ऊंच ते ऊंच सभी आत्माओं का बाप एक ही है, सभी जीवात्मायें उस बाप को याद करती हैं। पुकारते भी हैं - ओ गॉड फादर हम नयनहीन को नयन दो तो हम अपने बाप को पहचाने, हमको भक्ति मार्ग की "ाकरों से छुड़ाओ। ... आज से 5 हजार वर्ष पहले भारत में लक्ष्मी-नारायण की डॉयनेस्टी का राज्य था। उस समय एक ही धर्म था।"

सा.बाबा 3.02.11 रिवा.

"आज से 5 हजार वर्ष पहले जब सतयुग था, तब भारत में इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य था। उस समय और कोई राज्य नहीं था।... समझते हैं - यह लक्ष्मी-नारायण, राम-सीता राज्य करके गये हैं, परन्तु उनकी जीवन कहानी को कोई नहीं जानते हैं।"

सा.बाबा 20.06.11 रिवा.

"अभी तुम बच्चों को यह बेहद की पढ़ाई मिलती है, जिससे तुमने सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का राज़ समझा है और औरों को भी समझा सकते हो। अभी तुमको इन देवी-देवताओं की हिस्ट्री-जॉग्राफी का पूरा पता है। जो पवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले थे, वे ही अभी अपवित्र प्रवृत्ति मार्ग वाले बनें हैं। ... तुम समझते हो अभी हम संगमयुग पर है, फिर नई दुनिया में जायेंगे। तुमको सृष्टि-चक्र का सारा ज्ञान है।" सा.बाबा 24.01.11 रिवा.

"आत्मा पावन तो शरीर भी पावन मिलता है, आत्मा पतित तो शरीर भी पतित मिलता है।... अभी बाप ने आकर स्मृति दिलाई है - तुम पावन थे, फिर ऐसे-ऐसे 84 जन्म लेते-लेते पतित बने हो। अभी यह अन्त का जन्म है। ... बाप ने बच्चों को सीढ़ी पर भी समझाया है कि कैसे हम सीढ़ी नीचे उतरते आये हैं, सीढ़ी उतरने में कितने जन्म लगे हैं। 84 जन्म हैं मेग्जिमम।"

सा.बाबा 13.01.11 रिवा.

"तुम जब विश्व के मालिक थे, तब और कोई खण्ड नहीं रहता है। सबका नाम-निशान ही गुम हो जाता है। अगर ये खण्ड थे तो उनकी हिस्ट्री-जॉग्राफी चाहिए।... बाबा ने समझाया है - मैं तुम्हारा बाप भी हूँ, ज्ञान का सागर भी हूँ। यह तो बहुत ऊंच ते ऊंच ज्ञान है, जिससे तुम विश्व के मालिक बनते हो।" सा.बाबा 29.11.10 रिवा.

"सफेद साड़ी पहनी हुई हो, बैज लगा हो तो इससे स्वत: सेवा होती रहेगी। इसलिए ही बाबा ने ये बैज बनवाये हैं। ... तुम यह जानते हो कि इस सृष्टि में सबसे नामीग्रामी यह राधे-कृष्ण हैं। ये हैं सतयुग के फर्स्ट प्रिन्स-प्रिन्सेज। यह कभी किसके ख्याल में नहीं आयेगा कि ये कहाँ से आये। सतयुग के आगे जरूर कलियुग होगा। इन्होंने क्या कर्म किये, जिससे ये विश्व के मालिक बनें।" सा.बाबा 26.11.10 रिवा.

"तुम जानते हो हम अपना राज्य-भाग्य फिर से स्थापन कर रहे हैं। हमने 21 पीढ़ी राज्य किया, फिर रावण राज्य चला। अब फिर बाप आया है राम राज्य स्थापन करने।... वे दोनों क्रिश्चियन आपस में लड़ते हैं और माखन तुम बच्चों को मिलता है। तुम विश्व के मालिक बनेंगे।" सा.बाबा 22.11.10 रिवा.

"नाटक में कोई का शुरू से पिछाड़ी तक पार्ट होता है, कोई का थोड़ा पार्ट होता है। ... हर एक आत्मा में अविनाशी पार्ट नूँधा हुआ है, यह बात तुम्हारे में भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही जानते हैं और कोई को भी समझा सकते हैं।... अभी आत्मा पतित तमोप्रधान है, फिर आत्मा को सतोप्रधान पावन बनना है। बाप आते ही तब हैं जब सृष्टि पुरानी हो जाती है, आकर पुरानी दुनिया को नया बनाते हैं।" सा.बाबा 23.11.10 रिवा.

"बाप ने समझाया है रुद्र माला भी होती है और रुण्ड माला भी होती है। विष्णु के गले में रुण्ड माला दिखाते हैं। तुम बच्चे विष्णुपुरी के मालिक नम्बरवार बनते हो। पहले-पहले तुम शिव के गले का हार बनते हो, उसको रुद्र माला कहा जाता है। माला पूजी नहीं जाती है, माला सुमिरण की जाती है। ... माला प्रवृत्ति मार्ग की होती है। पहले है फूल शिवबाबा, फिर है युगल दाना, ब्रह्मा-सरस्वती, फिर हैं बच्चे।" सा.बाबा 8.11.10 रिवा.

"श्रीकृष्ण को सांवरा दिखाते हैं, श्यामसुन्दर भी कहते हैं। परन्तु कोई बता न सके कि श्रीकृष्ण सांवरा कैसे बना। ... कृष्ण वहाँ तो गोरा होगा, फिर उनकी आत्मा पुनर्जन्म लेते नाम बदलते सांवरी बन जाती है। ... इस समय तुम हो ब्राह्मण सम्प्रदाय, जिसका किसको पता नहीं है। तुम हो प्रजापिता ब्रह्मा की मुख वंशावली।" सा.बाबा 8.11.10 रिवा.

"बाप है ज्ञान का सागर, उनको ही सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त की नॉलेज है। वह सर्व का गति-सद्गति दाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी जरूर रिपीट होगी। इस पुरानी दुनिया के बाद नई दुनिया जरूर आनी है।" सा.बाबा 23.09.10 रिवा.

"बच्चों में स्वीट वे हैं, जो बहुतों का कल्याण करते हैं। बाप भी स्वीटेस्ट है, तब तो सब उनको याद करते हैं। ... पुरानी दुनिया और नई दुनिया किसको कहा जाता है, वह भी तुम अभी जानते हो।... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वह भी बाप ने तुमको समझाया है।" सा.बाबा 17.08.10 रिवा.

"सदैव पावन तो कोई रह नहीं सकता। सबको सतोप्रधान, सतो, रजो, तमो में आना ही है। ... मनुष्य न इस खेल को जानते हैं और न खेलपाल करने वाले को जानते हैं। बाप ही बैठकर इस वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं। खेल में हर एक का पार्ट और पोजीशन अलग-अलग है। जो जैसा पोजीशन वाला होता है, उसकी वैसी महिमा होती है। यह सब बातें बाप

संगम पर ही समझाते हैं।" सा.बाबा 3.09.10 रिवा.

"बाबा ने कहा है - तुम लिख दो - वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वह आकर समझो। ... यहाँ सूर्यवंशी-चन्द्रवंशी की हिस्ट्री तो है नहीं। आदि से अन्त तक यह चक्र कैसे रिपीट होता है, वह भी तुम अभी जानते हो। इन लक्ष्मी-नारायण का राज्य फिर कब होगा, यह भी तुम जानते हो।" सा.बाबा 8.09.10 रिवा.

"बाप खुद कहते हैं - मेरे बच्चे जो पहले ज्ञान चिता पर बैठ स्वर्ग के मालिक बने, वे फिर काम चिता पर बैठ नम्बरवार गिरते चले आये। सृष्टि भी सतोप्रधान से सतो, रजो, तमो और तमोप्रधान बनती है। ... बाप कहते हैं - यह ज्ञान सब धर्म वालों के लिए है। उनको भी कहना है - बाप कहते हैं - मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जायेंगे।... जरूर भगवान कोई तन से कहेंगे ना!" सा.बाबा 31.08.10 रिवा.

"बच्चों में स्वीट वे हैं, जो बहुतों का कल्याण करते हैं। बाप भी स्वीटेस्ट है, तब तो सब उनको याद करते हैं। ... पुरानी दुनिया और नई दुनिया किसको कहा जाता है, वह भी तुम अभी जानते हो। ... वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी कैसे रिपीट होती है, वह भी बाप ने तुमको समझाया है।" सा.बाबा 17.08.10 रिवा.

"अभी बाप ने तुमको वर्णों का रहस्य भी समझाया है। अभी हम सो ब्राह्मण हैं, फिर सो देवता बनने के लिए पुरुषार्थ करते हैं। फिर हम ... तुम ही इन वर्णों में आते हो। अब बाप ने तुमको ब्राह्मण धर्म में एडॉप्ट किया है। तुम शिवबाबा द्वारा प्रजापिता ब्रह्मा की सन्तान बने हो। यह भी जानते हो कि हम निराकारी आत्मायें असल में ईश्वरीय कुल की हैं।"

सा.बाबा 12.07.10 रिवा.

"अभी पुरुषोत्तम संगमयुग पर आसुरी सम्प्रदाय से बदली हो दैवी सम्प्रदाय बनते हो। अभी तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय के हो। ... वहाँ सतयुग में कोई अपने को ईश्वरीय औलाद नहीं कहलाते हैं। वहाँ हैं दैवी औलाद।" सा.बाबा 23.06.10 रिवा.

"किसको भी बोलो - आओ हम तुमको विश्व की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझाते हैं, जो बाप के सिवाए कोईसमझा न सके। ... बाप आकर तुम्हारी अविनाशी ज्ञान रत्नों से झोली भरते हैं। ... तुम सबको पैग़ाम देते रहो, थको मत। बहुतों का कल्याण करते रहो और अपनी दृष्टि को भी ठीक रखो।" सा.बाबा 7.07.10 रिवा.

"तुम ट्रेन में भी बहुत सर्विस कर सकते हो। ... जो इस कुल का होगा, उसको टच होगा, वह अच्छी रीति धारण कर प्रजा बन जायेगा। ... हम भारतवासी पहले देवी-देवता थे, अभी तो कुछ नहीं हैं, फिर हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट होगी। बीच में यह है संगमयुग, जिसमें तुम पुरुषोत्तम

बनते हो।" सा.बाबा 14.06.10 रिवा.

"अभी तुम्हारी बुद्धि में बेहद की हिस्ट्री-जॉग्राफी है। तुम जानते हो - हम कैसे राज्य लेते हैं, कब और कहाँ राज्य करते हैं। हमको कैसे राजधानी मिलती है, ये बातें और कोई की बुद्धि में नहीं आती हैं। बाप ही नॉलेजफुल है। यह सृष्टि चक्र कैसे फिरता है, वे ही समझाते हैं। ... सभी मनुष्य मात्र इस सृष्टि-चक्र में आते हैं, कोई इससे छूट नहीं सकता है।"

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

"कितना बड़ा बेहद का ड्रामा है, सब आत्मायें उसमें पार्टधारी हैं। हर आत्मा में अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। ... बाप कहते हैं - मैं इनमें प्रवेश होकर तुम बच्चों को नॉलेज सुनाता हूँ, इन द्वारा बच्चों को रचता हूँ। यहाँ बाप भी है, फैमिली भी है। ये बड़ी गुह्य और गम्भीर बातें हैं, जो मुश्किल से कोई की बुद्धि में बैठती हैं।"

सा.बाबा 7.06.10 रिवा.

"वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी समझनी चाहिए ना। मनुष्य ही समझेंगे और वर्ल्ड का मालिक ही वर्ल्ड की हिस्ट्री, जॉग्राफी समझा सकते हैं।... किसको समझाने के लिए परखने की भी बुद्धि चाहिए ना। देखना चाहिए कि बुद्धि में कुछ बैठता है या नहीं। नब्ज़ देखनी चाहिए। नब्ज़ देखकर दवाई देनी होती है।" सा.बाबा 9.01.10 रिवा.

"जाग सजनियाँ जाग ... यह गीत बहुत अच्छा है, अब तुम आत्मायें जाग गई हो। तुम ड्रामा के राज़ को भी जान गये हो। ... अभी तुम अपने बीते हुए 84 जन्मों की हिस्ट्री को जानते हो। बाप ने तुमको 84 जन्मों की कहानी सुनाई है। ये सब हैं नई दुनिया के लिए नई बातें। ... अब तुमको नई दुनिया में चलना है तो पुरानी दुनिया की सब बातों को भूल जाओ।"

सा.बाबा 15.07.11 रिवा.

XXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXXX

# सृष्टि - चक्र
# हर 5000 वर्ष के बाद
# हू-ब-हू पुनरावृत्त

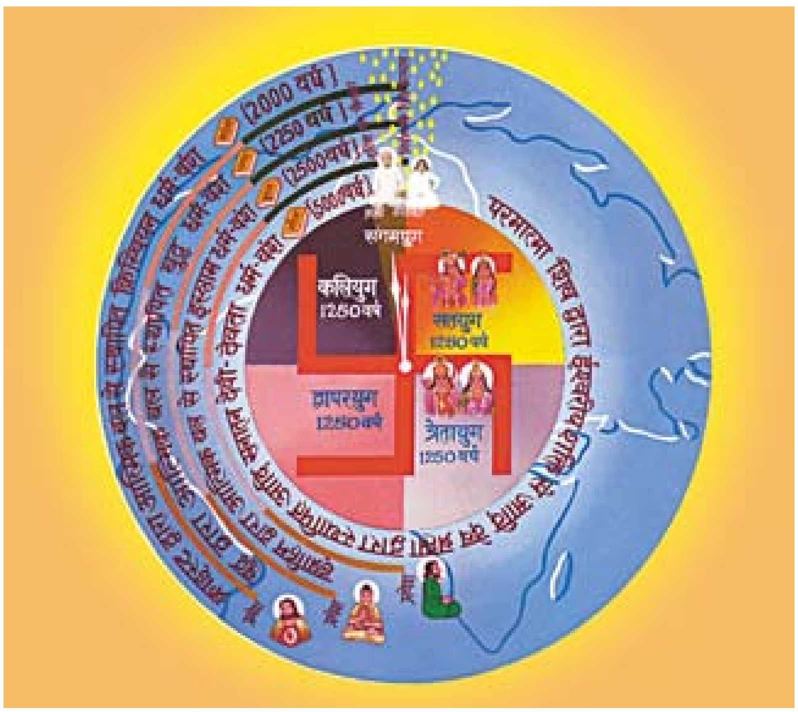

## **अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः-**

स्पार्क – आध्यात्मिक अनुप्रयोग अनुसन्धान केन्द्र
(SpARC – Spiritual Applications Research Centre),
बेहतर विश्व निर्माण अकादमी,
ज्ञान सरोवर, आबू पर्वत - 307501
राजस्थान, भारत
मोबाईलः 9414 15 1879, 9414 00 3497,
9414 08 2607
फैक्स – 02974-238951
ई-मेल – bksparc@gmail.com,
sparc@bkivv.org